04 - कनाडा में घट रही घटनाओं के मायने

05 - 'देश की सर्वोच्च अदालत व्यक्तिगत न्यायाधीशों से बड़ी'

A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 18 नवंबर, 2024

06 - हाट-बाजार में पर्याप्त जगह का अभाव, जिम्मेदार नहीं दे रहे ध्यान

07- लकड़ी औजार,तीर कमान से अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाले...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 51, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

ये झुंड से बिछड़े नन्हे हिरन चंचल की बात है
अचरज है इसमें क्या ये जंगल की रात है
तै नहीं है कल भी सुध बुध मिले इसे
क्या हुआ जो आज मंगल की रात है
झरने हैं अभी सूखे पते ही झर रहे
बेआब चुप्पियों की सरसर की रात है
सिरहाने से उठी तो पैरों पे आ गई
घुंघरू बगैर नाचे सिहरन की रात है
बेतमीज़ हैं ये जवानी में ख्वाब सारे
नादान यूं के जैसे बचपन की रात है
देखो तो कोई बाहर रह रह के पुकारे है
मेहमां किसी नज़र से ओझल की रात है
चुंधिया गई हैं आंखे कैसा है ये अंधेरा
मचमचा रही नज़र दलदल की रात है
पांसे बदल गये हैं धोखा तो हुआ है
पासा बदल बदल के करवट की रात है
गमगीन होना मत सुबहा हो चुकी
आज की नहीं ये कल की बात है।

– सुधीर मोता

पहली बात

वोटों को जोड़ने के लिए 'सियासी-फेवीकोल' का इस्तेमाल

उमेश त्रिवेदी
संपादक

9893032101

महाराष्ट्र और झारखंड विधान सभा के साथ देश के 14 राज्यों की 48 विधान सभा और दो संसदीय क्षेत्रों में होने वाले उपचुनाव के नतीजों को लेकर सियासी हलकों के हलक सूख रहे हैं। नतीजे 23 नवम्बर को आने वाले हैं। चुनाव का पहला चरण गुजर चुका है। दूसरे चरण का मतदान 20 नवम्बर को है, जो मूलतः महाराष्ट्र का राजनीतिक भविष्य का निर्धारित करेगा। ये चुनाव 'टर्निंग-पॉइंट' देश की राजनीति में सिद्ध हो सकते हैं। ये चुनाव लोकतंत्र में सत्ता हासिल करने में कारगर सिद्ध होती रही देश की पचास साल पुरानी 'पॉलिटिकल-केमेस्ट्री' की थीसिस को चुनौती देते लगते हैं।

ये चुनाव देश में क्षेत्रीयता और जाति आधारित राजनीतिक घालमेल के फेवीकोल से तैयार क्षेत्रीय दलों के लिए अस्तित्व की परीक्षा हैं, जो उनके भविष्य की इबारत लिखने वाले हैं। भाजपा मानती है कि जाति, क्षेत्रीयता और भाषा जैसे विभाजनकारी मुद्दों पर होने वाली राजनीति सत्ता की राहों में काफी प्रतिकूलताएं पैदा करते हैं। ये हिंदुत्व के लिए भी अनुकूल नहीं है। सत्ता की सीढ़ियों के रूप में इन मुद्दों का इस्तेमाल हिंदुत्व के एकीकरण और सत्ता के आरोहण में प्रतिकूलताएं पैदा करता रहा है। भाजपा की प्रयोगशाला में सत्ता हासिल करने के लिए ऐसी सियासी-केमेस्ट्री पर हमेशा काम होता रहता है, जो वोटों की राजनीति में विपक्ष के लिए कारगर जातीयता, क्षेत्रीयता अथवा भाषा के 'सियासी-फेवीकोल' जैसे 'एडेसिव्ह' अथवा गोंद से निजात दिला सके।

सिर्फ भाजपा ही नहीं, कांग्रेस, समाजवादी पार्टी या बहुजन समाजवादी पार्टी जैसे लगभग सभी दल जातीयता जैसे सियासी-फेवीकोल तैयार करने की कसरत हमेशा करते रहे हैं। स्कूली-भाषा में कहें तो ऐसी परीक्षाओं के फर्स्ट-अटेम्प्ट में सभी सियासी दलों को इसमे अच्छी सफलता मिली। भारत में सोशल इंजीनियरिंग के सियासी फेवीकोल को तैयार करने वाले कई नेता देश की सियासत में मुख्यमंत्री जैसे अच्छे मुकाम हासिल कर चुके हैं। उनकी आवाज भी महत्वपूर्ण मानी जाती है, लेकिन अब तस्वीर के रंगों में खिंचाव आने लगा है। यह फार्मूला निरन्तर बदलता जा रहा है। दिलचस्प यह है कि रोजमर्रा की आम जिंदगी में जोड़ने के काम के लिए बहुतायत में उपयोग होने व्यवसायिक 'एडेसिव्ह' या गोंद की तरह भारतीय राजनीति की सोशल इंजीनियरिंग में भी 'सियासी-फेवीकोल' के फार्मूले बदलते रहे हैं।

'सियासी फेवीकोल' का इतिहास 'एडेसिव्ह' की तरह पुराना नहीं है। 'सोशल इंजीनियरिंग' शब्द महज सवा सौ साल पहले प्रयोग में आया था, जबकि आम आदमी के लिए जोड़ने के लिए काम करना वाला गोंद या एडेसिव्ह सदियों पुराना है। साहित्य में चिपकने वाले पदार्थों का पहला संदर्भ 2000 ईसा-पूर्व आता है। इस दरम्यान में लकड़ी की कला-कृतियों,पत्थर के औजारों को जोड़ने के अलावा ताबूत में भी इनका उपयोग होता था। लेकिन सिंथेटिक-एडेसिव्ह की कहानी सियासी फेवीकोल की कहानी से ज्यादा पुरानी नही है। 18वीं सदी में जानवरों और मछलियों के गोंद का इस्तेमाल होता था। 19वीं में रबर एवं नाइट्रोसेल्युलोज आधारित सीमेंट का प्रयोग शुरू हुआ था। दुनिया में प्राकृतिक चिपकने वाले पदार्थों की जगह 'सिंथेटिक एडेसिव्ह' का प्रयोग 20वीं सदी के प्रारंभ में ही शुरू हुआ था।

भारत में सिंथेटिक-एडेसिव्ह का पर्याय 'फेवीकोल' मुहावरे के बतौर सोशल-इंजीनियरिंग में सियासी-फेवीकोल के रूप में इस्तेमाल होने लगा है। वैसे सबसे पहले 1894 में डच देश में सोशल इंजीनियर शब्द का प्रयोग हुआ था। 1920 में सोवियत संघ में रूसी साम्राज्य के पुराने सामाजिक ढांचे को नई सोवियत संस्कृति में बदलने के लिए सोशल इंजीनियरिंग का प्रयोग शुरू किया गया था। भारत में सबसे पहले समाजवादी नेता डॉ. राममनोहर लोहिया ने जात-पांत के आधार पर राजनीतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन शुरू कर दिया था। उसके बाद पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए केन्द्र सरकार व्दारा विभिन्न आयोगों का गठन का सिलसिला शुरू हुआ था। 1980 और 1990 के दशक में मंडल कमीशन की सिफारिशों पर प्रधानमंत्री वीपी सिंह की घोषणाओं के बाद पिछड़ा वर्ग और सोशल इंजीनियरिंग की भारतीय राजनीति का स्थायी भाव बन चुके हैं।

सियासी पार्टियां सत्ता हासिल करने के लिये इसका भरपूर इस्तेमाल करती हैं। कतिपय पार्टियों की पहचान ही दलित, पिछड़े अथवा उनके जनजातीय आधारों पर होती है। राम मंदिर आंदोलन से प्रारंभ 'मंडल बनाम कमंडल' राजनीति के सघन दौर में पिछडे वर्ग की जातीय राजनीति की प्रभावशीलता भले ही कुछ मंद पड़ी हो, लेकिन इसके अंतर-प्रवाहों का सिलसिला हमेशा राजनीति पर हावी रहा है। सभी पार्टियां जातीय आधार पर ही टिकट बांटती हैं। लेकिन भाजपा ने चुनाव के लिए जातीय प्रबंधन में नए आयाम स्थापित करते हुए पिछडे, दलित और जनजातीय समुदाय के जातीय विभाजन को माइक्रो लेवल तक विभाजित कर इन समुदायों को भी बांट दिया है। उत्तर प्रदेश और बिहार में भाजपा की सफलता का यही राज है। भाजपा सिर्फ जातीय विभाजन को ही सूक्ष्मतर नहीं बना रही है, बल्कि वह तो सांप्रदायिक स्तर पर अल्पसंख्यकों में भी माइक्रो लेवल पर सेंध लगा रही है।

भाजपा माइक्रो लेवल पर जातीय प्रबंधन के अलावा राजनीतिक स्तर पर भी विभिन्न पार्टियों को बांट कर अपना राजनीतिक लक्ष्यों को हासिल करने मे भी कोई कसर नहीं छोड़ रही है। महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव में शिवसेना और एनसीपी का विभाजन इसका सबूत है। शिवसेना और एनसीपी का विभाजित धड़ा भाजपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ रहा है। केन्द्र में भाजपा को बहुमत नहीं मिलने से प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का जलवा कम हुआ है। बदले राजनीतिक समीकरणों में दोनो नेताओं के लिए महाराष्ट्र एवं झारखंड जीतना जरूरी है। शिवसेना और एनसीपी में तोड़-फोड़ के बाद यह चुनाव कई नेताओं के अस्तित्व का सवाल बन गया है। पार्टी से ज्यादा उनका खुद का नेतृत्व कसौटी पर है। महाराष्ट्र और झारखंड चुनाव के कारण उप्र में होने नौ विधानसभाओं को उप-चुनाव की कहानियां बैक-ड्रॉप में चली गई हैं।

उप्र में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। भाजपा मे एक तबका योगी आदित्यनाथ को मोदी के समकक्ष खड़ा करने की कोशिश में लगा रहता है। लोकसभा चुनाव में हार का ठीकरा अमित शाह के टिकट-वितरण पर फोड़ दिया गया था। इस मर्तबा सब कुछ योगी आदित्यनाथ के जिम्मे है। जबकि अखिलेश यादव के सामने लोकसभा चुनाव की सफलता का ग्राफ चुनौती बन कर खड़ा है। उन्हें उसे हासिल करना है। जाहिर दोनो की चुनौती बड़ी है। इसके अलावा बिहार के उपचुनावों मे प्रशांत किशोर की पार्टी का उतरने के परिणामों का विश्लेषण मैदान में प्रशांत किशोर का भविष्य निर्धारित करने वाला है।

जाहिर है इस तारतम्य में नतीजे भाजपा से ज्यादा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, अमित शाह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, कांग्रेस से ज्यादा राहुल गांधी, राष्ट्रवादी कांग्रेस से ज्यादा शरद पवार, शिवसेना से ज्यादा उध्दव ठाकरे और समाजवादी पार्टी से ज्यादा अखिलेश यादव के भविष्य और राजनीतिक परिक्रमा पथ को गढ़ने वाले हैं। चुनाव में महाराष्ट्र के अजित पवार, एकनाथ शिंदे, बिहार के प्रशांत किशोर या राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जैसे दूसरी पंक्ति के नेताओं की भाग्य-रेखाओं का हिसाब भी होना है, लेकिन देश की पॉलिटिकल केमेस्ट्री के हिसाब में इनकी महत्ता गौण है। ये सेटेलाइट है, जो राजनीतिक ग्रहों के किसी भी परिक्रमा पथ पर घूमने लगेंगे। राजनीति में तोड़ने-जोड़ने की यह कहानी दिलचस्प मोड़ पर खड़ी है।

पीएम मोदी को मिला नाइजीरिया का सर्वोच्च सम्मान

अबुजा (एजेंसी)। नाइजीरिया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान द ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर से सम्मानित करने का ऐलान किया है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक वे ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ के बाद यह सम्मान पाने वाले दूसरे विदेशी होंगे। एलिजाबेथ को 1969 में यह सम्मान दिया गया था। अब तक पीएम मोदी को 15 देश अपने सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित कर चुके हैं। वहीं, उन्हें मिलने वाला यह 17वां अंतर्राष्ट्रीय अवॉर्ड होगा। इससे पहले 14 नवंबर को कैरेबियाई देश डोमिनिका ने मोदी को सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार- डोमिनिका अवॉर्ड ऑफ ऑनर देने की घोषणा की थी। कोविड-19 महामारी के दौरान डोमिनिका की मदद करने के लिए उन्हें सम्मान दिया जाएगा। मोदी को 21-22 नवंबर को गुयाना दौरे पर सम्मानित किया जाएगा। पीएम को राजधानी अबुजा की चाबी सौंपी गई, ये विश्वास का प्रतीक है। प्रधानमंत्री मोदी शनिवार रात पहली बार नाइजीरिया पहुंचे। यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री का 17 साल में पहला नाइजीरिया दौरा है। मोदी का स्वागत करने के लिए एयरपोर्ट पर भारतीय लोगों का जमावड़ा लगा था। हाथ में तिरंगा लिए उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया। नाइजीरिया के राष्ट्रपति बोला टिनूबू भी अबुजा एयरपोर्ट पर पीएम मोदी के स्वागत के लिए पहुंचे थे। मंत्री न्येसोम विके ने पीएम मोदी को अबुजा शहर की चाबी सौंपी। नाइजीरिया में इसे विश्वास और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। पीएम मोदी राष्ट्रपति टिनूबू से द्विपक्षीय वार्ता करेंगे।

- **क्वीन एलिजाबेथ के बाद यह सम्मान पाने वाले पहले शख्स**
- **पीएम मोदी को अब तक 15 देशों ने दिया सर्वोच्च सम्मान**

मणिपुर में बड़े ऐक्शन की तैयारी में केन्द्र सरकार

महाराष्ट्र की सभी रैलियां रद्द कर अमित शाह पहुंचे दिल्ली

इंफाल (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को अचानक महाराष्ट्र की अपनी चारों रैलियां रद्द कर दीं। वह चुनाव प्रचार के लिए नागपुर पहुंच गए थे। अचानक गृह मंत्री ने यह बड़ा फैसला लिया और दिल्ली लौट गए। बताया जा रहा है कि मणिपुर के बिगड़े माहौल को लेकर गृह मंत्री ने यह फैसला लिया है। सरकार मणिपुर में शांति बहाली के लिए कोई बड़ा कदम उठा सकती है। गृह मंत्री अमित शाह आज विदर्भ में चार रैलियां करने वाले थे। अमित शाह गढ़चिरौली, वर्धा,कटोल और सावनेर में सभाएं करने वाले थे। वह नागपुर के रेडिसन ब्लू होटल में रुके थे। सुबह 11 बजे के करीब वह गढ़चिरौली के लिए रवाना होने वाले थे तभी पता चला कि उन्होंने अपनी सभी रैलियां रद्द कर दी हैं और दिल्ली लौट रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि मणिपुर हिंसा को लेकर ही उन्होंने यह फैसला लिया है। अब उनकी जगह शिवराज सिंह चौहान और स्मृति ईरानी रैली करेंगी। दो सभाओं में स्मृति ईरानी मौजूद रहेंगी। मणिपुर में बिगड़ते हालातों के बीच नेशनल पीपुल्स पार्टी ने एनडीए से अपना समर्थन वापस ले लिया है। NPP ने मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह के नेतृत्व वाली सरकार राज्य की मौजूदा स्थिति से निपटने में नाकाम रहने का आरोप लगाया है।

मणिपुर हिंसा के बीच एनपीपी ने एनडीए से समर्थन लिया वापस

मंत्रियों और विधायकों को बनाया निशाना

शनिवार को भीड़ ने जिरीबाम से लेकर इंफाल तक में कई बीजेपी नेताओं के आवासों को निशाना बनाया। इतना ही नहीं, सीएम एन बिरेन सिंह के दामाद राजकुमार इमो सिंह और इंफाल सरकार में मंत्री खुरई विधायक एल सुसीद्रो को निशाना बनाया गया है। बीजेपी के उरीपोक से विधायक रघुपति सिंह, पटसोई विधायक सपा कुंजाकेश्वर और थांगमेइबंद विधायक के जॉयकिसन सिंह और निर्दलीय विधायक सपाम निशिकांत के घरों को निशाना बनाया गया है। इन नेताओं के घरों पर संपत्ति और वाहनों तक को आग के हवाले कर दिया है। जानकारी के मुताबिक शनिवार की रात भीड़ ने इम्फाल के हीनगांग में मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के निजी आवास पर भी हमला करने की कोशिश की।

सुरक्षा बलों ने हवा में की फायरिंग

पुलिस ने ख. रघुमणि सिंह, सपाम निशिकांत और ख. जॉयकिसन सिंह के घरों में तोड़फोड़ की घटना की पुष्टि की है। शाम करीब 7 बजे भीड़ ने वाई सुसिंद्रो के घर पर धावा बोल दिया और पत्थरबाजी की, जिसके जवाब में उनके घर की सुरक्षा में तैनात सुरक्षा बलों ने हवा में फायरिंग की। एक प्रदर्शनकारी ने कहा है कि राजनेताओं ने लोगों को निराश किया है और निर्दोष नागरिकों के जीवन की रक्षा करने में विफल रहने के बाद वे अपनी कुर्सी पर बने रहने के लायक नहीं हैं। शनिवार की रात जिरिबाम में भी आगजनी हुई।

प्रदेश में खेल अधोसंरचना का निरंतर विकास हो रहा है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

हमारे खिलाड़ी एशियाड और ओलंपिक में भी अवॉर्ड जीतेंगे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में खेल अधोसंरचना का निरंतर विकास हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में इस दिशा में जिस प्रकार कार्य जारी है, उससे प्रदेश के खिलाड़ी विक्रम अवॉर्ड प्राप्त करने के साथ-साथ एशियाड और ओलंपिक में अवार्ड प्राप्त करने की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं। देवास में कुशाभाऊ ठाकरे स्टेडियम और श्रीमंत तुकोजीराव पवार स्टेडियम से कई प्रतिभावान खिलाड़ी प्रदेश व देश को मिले हैं। श्रीमंत तुकोजीराव पवार की जयंती पर देवास को मिल रही सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक की सौगात से खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने के अधिक अवसर प्राप्त होंगे। देवास में खेल सुविधाओं के विस्तार के लिए निरंतर प्रयास जारी रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कुशाभाऊ ठाकरे स्टेडियम देवास में सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक के भूमि पूजन कार्यक्रम को नई दिल्ली से वर्चुअली संबोधित कर रहे थे।

देवास में 9 करोड़ 18 लाख की लागत से बनेगा सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक

देवास का कुशाभाऊ ठाकरे स्टेडियम 10.00 एकड़ भूमि में स्थित है। स्टेडियम में बैडमिंटन के 4 सिंथेटिक कोर्ट, बास्केटबॉल के 2 कोर्ट, 25 मीटर स्वीमिंग पुल, ओपन जिम, साफ्टबॉल और शतरंग खेल के अतिरिक्त महिला आत्मरक्षा के लिए कराते प्रशिक्षण संचालित है। स्टेडियम में एथलेटिक खिलाड़ियों के लिए खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक की स्थापना 9 करोड़ 18 लाख रुपए की लागत से की जा रही है।

विविध विशेषताओं से समृद्ध है मालवा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देवास, उज्जैन धार और इंदौर को जोड़ते हुए क्षेत्र को वृहद महानगर के रूप में विकसित किया जा रहा है। औद्योगीकरण की दिशा में राज्य सरकार तेज गति से कार्य कर रही है। बदलते दौर में इस क्षेत्र की देश में विशिष्ट पहचान होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देवास में मां तुलजा भवानी और चामुंडा माता दो देवियों का वास है साथ ही क्षेत्र को कैला देवी का भी आशीर्वाद प्राप्त है। अपनी विविध विशेषताओं से समृद्ध मालवा, छत्रपति महाराज शिवाजी के बाद होलकर-पवार-सिंधिया और बाजीराव जी महाराज के माध्यम से हिंदवी सेना द्वारा साम्राज्य पुनर्स्थापित करने के समय से ही स्वाधीन हो गया था। इससे मालवा क्षेत्र के देव-स्थानों की आभा भी बढ़ी। पं. कुमार गंधर्व की उपस्थिति और बैंक नोट प्रेस ने देवास को विशेष महत्व प्रदान किया है।

प्रदेश में 114 खेल अधोसंरचना निर्मित, 30 निर्माणाधीन

उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा 114 खेल अधोसंरचना (स्टेडियम/खेल परिसर/इंडोर हॉल) निर्मित किये गये है, 30 खेल अधोसंरचना निर्माणाधीन है। प्रदेश मंव कुल 8 सिंथेटिक एथेलेटिक ट्रैक निर्मित किये गये है। देवास में 9वॉ सिंथेटिक एथेलेटिक ट्रैक कुशाभाऊ ठाकरे स्टेडियम में स्थापित किया जा रहा है। इसके अलावा 3 और एथेलेटिक ट्रैक - इंदौर, रतलाम और छतरपुर में भी स्वीकृत किये गये है। प्रदेश में खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा 12 सिंथेटिक हॉकी टर्फ की स्थापना की गई है तथा 6 सिंथेटिक हॉकी टर्फ निर्माणाधीन है।

एससी में बुधवार-गुरुवार को रेगुलर मामलों की सुनवाई नहीं

- **इनकी जगह ट्रांसफर याचिका, बेल केस और दूसरे मामले लिस्ट होंगे, सीजेआई खन्ना ने नियम बदले**

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को मामलों की सुनवाई को लेकर नया सर्कुलर जारी किया गया। इसके मुताबिक बुधवार और गुरुवार को रेगुलर सुनवाई वाले मामले लिस्ट नहीं किए जाएंगे। सर्कुलर में कहा गया कि मंगलवार, बुधवार और गुरुवार को ट्रांसफर याचिकाओं, बेल के मामलों और दूसरे केस को लिस्ट किया जाएगा। रेगुलर सुनवाई वाले मामले लिस्ट नहीं होंगे। वहीं, स्पेशल बेंच या पार्ट हियर्ड मैटर (आंशिक सुनवाई) वाले मामले चाहे वो मिसलेनियस हों या रेगुलर, जिन्हें मंगलवार, बुधवार और गुरुवार को लिस्ट करने का निर्देश दिया गया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 18 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

मिस यूनिवर्स-24 बनीं डेनमार्क की विक्टोरिया

- टॉप-12 से बाहर हुईं भारत की रिया सिंघा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मिस यूनिवर्स 2024 के फिनाले पर सबकी नजरें टिकी हुई थी। मैक्सिको के निकारागुआ में इसका आगाज किया गया था। मिस यूनिवर्स 2024 की टॉप-30 लिस्ट में भारत की रिया सिंघा ने जगह बनाई थी लेकिन, वो इस क्राउन को अपने नाम नहीं कर पाईं। रिया सिंघा टॉप-12 से ही बाहर हो गई थीं। ऐसे में अब मिस यूनिवर्स 2024 के विनर का नाम भी सामने आ चुका है। इस क्राउन को जीतने वाली कंटेस्टेंट डेनमार्क की विक्टोरिया केजीर बनी हैं।

इजराइली पीएम नेतन्याहू के घर पर फिर हुआ हमला

- आंगन में आग के गोले गिरे, एक महीने के भीतर दूसरी बार निशाना बनाया गया

तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के सीजेरिया स्थित घर पर फिर से हमला हुआ है। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, प्रधानमंत्री के घर की तरफ 2 फ्लेयर्स (आग के गोले) दागे गए, जो घर के आंगन में गिरे। इजराइली पुलिस ने इसकी पुष्टि की है। हमला कहां से हुआ और किसने किया, फिलहाल इसकी जानकारी नहीं मिली है। इजराइली सुरक्षा एजेंसी शिन बेट ने बयान में कहा कि इस घटना में किसी तरह के नुकसान की खबर नहीं है।

अमेरिका के दरवाजे पर चीन ने कर दिया बड़ा खेल

- पेरू में बनाया महाकाय बंदरगाह, ट्रंप के सामने ड्रैगन की खुली चुनौती

लीमा (एजेंसी)। चीन ने अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने से ठीक पहले बड़ा कदम उठाया है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिका के पड़ोसी लैटिन अमेरिका महाद्वीप में एक बेहद विशालकाय बंदरगाह का उद्घाटन किया है। यह बंदरगाह दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में बनाया गया है जो कभी अमेरिका का करीबी हुआ करता था लेकिन अब उससे मुंह मोड़ रहा है।

उ.प्र.के मंत्री के पीएसओ से बदसलूकी करने वालों को जेल भेजा

पुलिस ने 4 घंटे में किया खुलासा ; हमलावर बोले– नहीं पता था वो मंत्री हैं

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में शुक्रवार रात उत्तर प्रदेश सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्री (राज्यमंत्री) मनोहर लाल उर्फ मन्नू के पीएसओ व सहायक से मारपीट कर पिस्टल लूट करने वाले चार हमलावरों को सिर्फ चार घंटे में पहचान कर पुलिस ने पकड़ लिया था। हमलावरों का कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड पुलिस को नहीं

मिला है। जिस कार के सामने बाइक टकराने पर विवाद हुआ उस कार में खुद मंत्री सवार थे। हमलावर बोले कि उन्हें नहीं पता था कि वह मंत्री की कार है। पुलिस ने सभी चार आरोपियों को शनिवार शाम कोर्ट में पेश किया है, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है। पहले इस मामले में 12 आरोपियों के होने की सूचना थी। जिस पर पुलिस अब सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है कि कहीं कोई अन्य आरोपी तो नहीं छूट गया है।

गलती पर गिड़गिड़ाने लगे- जब शुक्रवार-शनिवार दरमियानी रात पुलिस ने मंत्री के पीएसओ से मारपीट करने वालों की न सिर्फ पहचान की बल्कि उनको 4 घंटे में गिरफ्तार भी किया। सभी आपस में रिश्तेदार हैं। बंटी यादव मुख्य आरोपी है। जिससे मंत्री के पीएसओ की बहस हुई थी, उसके बाद उसने कॉल करके अपने मामा कप्तान यादव व रिश्तेदार भोला व भूपेन्द्र को बुलाया था। जब इन चारों को पता लगा कि जिससे मारपीट कर यह पिस्टल छीन ले गए हैं, वह उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री का पीएसओ था।

जिस समय यह घटना हुई मंत्री वहीं थे। यह सुनते ही चारों आरोपी सर्द रात में पसीना-पसीना हो गए। वह पुलिस अफसरों के सामने गिड़गिड़ाने लगे।

समझें पूरा मामला

ग्वालियर के बिलौआ थाना क्षेत्र के जौरासी घाटी पर शुक्रवार रात उत्तर प्रदेश के श्रम व रोजगार मंत्री मनोहर लाल का काफिला जाम में फंस गया था। मंत्री मनोहर लाल मन्नू आगरा से ललितपुर जा रहे थे। मंत्री का पायलट वाहन आगे निकल गया और ग्वालियर पुलिस का फ़ॉलो वाहन पीछे रह गया। इसी बीच एक बाइक सवार मंत्री की कार के सामने आ गया। मंत्री के पीएसओ सर्वेश सिंह ने कार से उतरकर उसे हटाने की कोशिश की तो वह उनसे उलझ गया।

इस पर पीएसओ ने उसे चांटा जड़ दिया। चांटा मारने से बाइक सवार बंटी यादव बौखला गया और उसने फोन कर अपने साथियों को बुला लिया। पांच मिनट में उसके साथी वहां आ गए और उन्होंने मंत्री के पीएसओ पर हमला बोल दिया। उससे मारपीट करने लगे तो मंत्री का सहयोगी राकेश कुमार, पीएसओ को बचाने कार से बाहर आया। हमलावरों ने उसके साथ भी मारपीट कर दी। पीएसओ ने हमलावरों को भगाने के लिए अपनी पिस्टल निकाली तो हमलावरों ने पिस्टल भी छीन ली थी। मारपीट करने के बाद हमलावर भाग गए थे।

12 अज्ञात हमलावरों पर हुआ था मामला दर्ज

मंत्री के पीएसओ से मारपीट के मामले में बिलौआ पुलिस ने पहले प्राथमिक सूचना पर 12 अज्ञात हमलावरों पर मारपीट, लूटपाट व शासकीय कार्य में बाधा का मामला दर्ज किया था। अब एसपी ग्वालियर का कहना है कि पुलिस पड़ताल कर रही है। घटना स्थल के आसपास सीसीटीवी कैमरे, वहां से गुजरने वालों के द्वारा बनाए गए वीडियो से जानकारी निकाल कर रही है कि कहीं कोई और हमलावर तो नहीं था। प्राथमिक जांच में यह चार आरोपी ही सामने आए हैं। ग्वालियर एसपी धर्मवीर सिंह ने बताया कि चारों हमलावरों को गिरफ्तार करने के बाद कोर्ट में पेश किया गया था, जहां से न्यायिक हिरासत (जेल) भेज दिया गया है। किसी भी हमलावर को कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं मिला है। प्राथमिक जांच में यह भी पता लगा है कि झगड़े के समय वह यह नहीं जानते थे कि कार में वीवीआईपी पर्सन है।

बीच बाजार गैस सिलेंडर में ब्लास्ट, 38 झुलसे

छतरपुर के बिजावर में 100 मी. तक फैली लपटें; भगदड़ जैसे हालात बन गए थे

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर में बीच बाजार गैस सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया। हादसे में 38 लोग झुलस गए। इनमें बच्चे और महिलाएं भी शामिल हैं। 34 घायलों को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। वहीं, 4 मामूली घायलों का बिजावर के निजी क्लिनिक पर ही इलाज किया गया। घटना रविवार दोपहर ढाई बजे बिजावर के बस स्टैंड पर हुई। घायलों में शामिल एक स्थानीय दुकानदार नीलू बघेल ने बताया कि पेटीज के ठेले पर सिलेंडर से पहले गैस लीक हुई और फिर ब्लास्ट हो गया।

ब्लास्ट के बाद मची भगदड़- घायलों ने बताया कि पेटीज की दुकान में तीन सिलेंडर रखे हुए थे। इनमें से एक फट गया। रविवार को बाजार लगता है इसलिए वहां बहुत भीड़ थी। धमाके के बाद भगदड़ जैसे हालात बन गए। आसपास के 100 मीटर तक के दायरे में लपटें उठीं। कई लोगों ने भागने की कोशिश की, फिर भी जल गए थे।

बहन प्रियंका के साथ मुंबई के शिवाजी पार्क पहुंचे राहुल गांधी

शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे को किया नमन, दी श्रद्धांजलि

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के बीच लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी रविवार को मुंबई स्थित शिवाजी पार्क पहुंचे और उन्होंने शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे को उनकी पुण्यतिथि पर नमन किया है। राहुल गांधी ने दादर स्थित शिवाजी पार्क

पहुंचने से पहले बाल ठाकरे की 12वीं पुण्यतिथि पर पहले एक्स पर पोस्ट करके याद किया। राहुल गांधी के साथ उनकी बहन प्रियंका गांधी भी वहां पहुंचीं। इस मौके पर बाल ठाकरे के बेटे और पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे भी मौजूद रहे। यह पहला मौका है जब राहुल गांधी ने बाल ठाकरे को उनकी पुण्यतिथि पर दादर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं।

राहुल बोले-शिवसेना परिवार के साथ हूं

राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा कि बालासाहेब ठाकरे जी को उनकी 12वीं पुण्यतिथि पर याद करते हुए। मेरी संवेदनाएं उद्धव ठाकरे जी, आदित्य और पूरे शिवसेना परिवार के साथ हैं। शिवसेना (यूबीटी) और एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के कई नेता भी बाल ठाकरे को श्रद्धांजलि देने उनके समाधि स्थल पर पहुंचे। शिवसेना के संस्थापक का लंबी बीमारी के बाद 17 नवंबर 2012 को मुंबई स्थित उनके आवास मातोश्री में निधन हो गया था। पवार ने 'एक्स' पर अपने पोस्ट में कहा, शिवसेना के संस्थापक, व्यंग्यकार और राजनेता स्वर्गीय बालासाहेब ठाकरे को नमन, जिन्होंने मराठी लोगों के साथ अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी। मुंबई कांग्रेस की अध्यक्ष डॉ. वर्षा गायकवाड़ ने कहा कि बालासाहेब ठाकरे ने मराठी दिलों पर राज किया।

स्वदेशी हाइपरसोनिक मिसाइल की सफल टेस्टिंग

1500 किलोमीटर से ज्यादा रेंज, आवाज से 5 गुना तेज रफ्तार; इसे रोक पाना असंभव

नई दिल्ली/भुवनेश्वर (एजेंसी)। डिफेंस रिसर्च डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (ष्ठक्रष्ठह्र) ने शनिवार रात लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल की सफल टेस्टिंग की। इसका वीडियो शेयर करते हुए ष्ठक्रष्ठह्र ने बताया कि ओडिशा के तट के पास एपीजे अब्दुल कलाम आजाद द्वीप से मिसाइल को ग्लाइडेड व्हीकल से लॉन्च किया गया। मिसाइल की फ्लाइट ट्रेजेक्टरी की ट्रैकिंग के बाद टेस्टिंग सफल मानी गई है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार सुबह ङ्ग पर पोस्ट करते हुए कहा- इस मिसाइल की सफल टेस्टिंग से भारत उन चुनिंदा देशों के ग्रुप में शामिल हो गया, जिसके पास ऐसी सैन्य तकनीक है। यह एक बड़ी उपलब्धि है और यह देश के लिए एक ऐतिहासिक पल है। लंबी दूरी की इस हाइपरसोनिक मिसाइल की रेंज 1500 किलोमीटर से ज्यादा है।

इस मिसाइल से हवा, पानी और जमीन तीनों जगहों से दुश्मन पर हमला किया जा सकता है। लॉन्च के बाद इसकी रफ्तार 6200 किलोमीटर प्रतिघंटे तक पहुंच सकती है, जो साउंड की स्पीड से 5 गुना ज्यादा है। हाइपरसोनिक मिसाइलों की सबसे खास बात ये है कि तेज स्पीड, लो ट्रैजेक्टरी यानी कम ऊंचाई पर उड़ान की वजह से इन्हें अमेरिका समेत दुनिया के किसी भी रडार से पकड़ पाना लगभग नामुमकिन है। इसी वजह से इन्हें दुनिया का कोई भी मिसाइल डिफेंस सिस्टम मार नहीं सकता है। हाइपरसोनिक मिसाइलें कई टन परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम होती हैं। ये मिसाइलें 480 किलोग्राम के परमाणु हथियार या ट्रेडिशनल हथियार ले जा सकती हैं। परमाणु हथियार रखने वाले देशों के लिए यह मिसाइल अहम मानी जाती है। अंडरग्राउंड हथियार गोदामों को तबाह करने में हाइपरसोनिक मिसाइलें सबसोनिक क्रूज मिसाइलों से ज्यादा घातक होती हैं।

राज्य सरकार हर नागरिक को सुलभ और बेहतर चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने निरंतर कर रही है कार्य : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ और व्यापक बनाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की नींव स्वस्थ नागरिकों से ही सुदृढ़ होगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी के विचार को साकार करने के लिए राज्य सरकार हर नागरिक को सुलभ और उन्नत चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस दिशा में 21 नवंबर को एक और इतिहास रचने की ओर प्रदेश अग्रसर है जब मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन मेडिकल कॉलेज का भूमिपूजन करेंगे, जो प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं को नए आयाम प्रदान करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ-2028 की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रोजेक्ट को प्राथमिकता से पूर्ण किया जायेगा। इससे उज्जैन और आसपास के जिलों के मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी । मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्ष 2003 तक प्रदेश में केवल 5 शासकीय मेडिकल कॉलेज थे, जो अब बढ़कर 17 हो चुके हैं। प्रदेश में एम.बी.बी.एस. सीटें भी 720 से बढ़कर 2,575 हो गई हैं। श्योपुर, सिंगरौली, मंडला और राजगढ़ में निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेजों के साथ-साथ छतरपुर, दमोह और बुधनी में स्ववित्तीय अनुदान से मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। साथ ही 12 अन्य जिलों में सार्वजनिक जनभागीदारी नीति के तहत मेडिकल कॉलेज खोलने की प्रक्रिया जारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 20 नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना से एम.बी.बी.एस. सीटों में 2,000 से अधिक की वृद्धि होगी।

बीजेपी वोटिंग कम कराने की रच रही है साजिश

- अखिलेश बोले-कुंदरकी में चीन सीमा जैसी तैयारी

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में उपचुनाव की वोटिंग से पहले अखिलेश यादव ने बीजेपी सरकार पर निशाना साधा। रविवार

को उन्होंने कुंदरकी में फोर्स के फ्लैग मार्च का वीडियो एक्स पर पोस्ट किया। कहा- बीजेपी वोटिंग को कम करने की साजिश कर रही है। चुनाव आयोग से चेतावनी भरा आग्रह है कि इस साजिश को नाकाम करें। उन्होंने पुलिस और कमांडो के फ्लैग मार्च पर कहा- देखने में ऐसा लग रहा है जैसा चीन सीमा पर युद्ध की तैयारी है।

अब केजरीवाल के 'हनुमान' ने भी छोड़ दिया पार्टी का साथ

एएपी को बड़ा झटका, परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने दिया इस्तीफा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार के परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने पद और पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। कैलाश गहलोत ने रविवार सुबह एएपी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को पत्र लिखकर इस्तीफे का ऐलान किया। गहलोत ने केजरीवाल को लिखे लेटर में यमुना की सफाई के मुद्दे को लेकर एएपी की आलोचना की। उन्होंने कहा- आम आदमी पार्टी ने केंद्र सरकार से लड़ाई करने में बहुत वक्त बर्बाद किया। पार्टी ने जनता से किए वादे पूरे नहीं किए। दिल्ली की सीएम आतिशी ने गहलोत का इस्तीफा स्वीकार करते हुए कहा- ये भाजपा का गंदा षड्यंत्र है। भाजपा दिल्ली में होने वाले विधानसभा चुनाव ईडी और सीबीआई के बल पर

जीतना चाहती है। एएपी नेता संजय सिंह ने कहा- दिल्ली चुनाव से पहले मोदी वॉशिंग मशीन सक्रिय हो गई है। अब कई नेता इस मशीन के जरिए भाजपा में शामिल किए जाएंगे। कैलाश गहलोत ने 2015 में पार्टी जॉइन की थी।

- स्टारशिप बदल देगा दुनिया में एयर ट्रैवेल की तस्वीर

एलन मस्क ने किया दुनिया की सबसे तेज हवाई यात्रा का दावा

- स्पेसएक्स के स्टारशिप ट्रैवल के जरिए लोग करेंगे हवाई यात्रा

दिल्ली से अमेरिका सिर्फ 30 मिनट में...

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अरबपति स्पेसएक्स सीईओ और अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन में अहम भूमिका निभाने जा रहे एलन मस्क ने स्पेस ट्रैवल को लेकर बड़ी घोषणा की है। मस्क ने घोषणा की है कि स्पेसएक्स की महत्वाकांक्षी अर्थ-टू-अर्थ अंतरिक्ष यात्रा परियोजना जल्द ही वास्तविकता का रूप लेगी। अमेरिकी उद्योगपति ने कहा कि उनकी कंपनी स्पेसएक्स के स्टारशिप रॉकेट के जरिए एक घंटे से भी कम समय में धरती के प्रमुख शहरों के बीच यात्रियों को ले जाना संभव होगा। स्पेसएक्स का स्टारशिप रॉकेट पहली बार 10 साल पहले प्रस्तावित किया गया था और इसे दुनिया का सबसे शक्तिशाली रॉकेट कहा जाता है। मस्क ने ये दावा 6 नवम्बर को एक एक्स यूजर के पोस्ट किए गए

वीडियो का जवाब देते हुए किया था। एक्स यूजर ने सुझाव दिया कि स्पेसएक्स को ट्रंप प्रशासन के दौरान कुछ वर्षों के भीतर स्टारशिप को अर्थ-टू-अर्थ उड़ाने के लिए संघीय विमानन प्रशासन से मंजूरी मिल सकती है। वीडियो में कहा गया कि अधिकांश लंबी दूरी की यात्राएं 30 मिनट से भी कम समय में। एक घंटे से भी कम समय में धरती पर कही भीं। इस पर एलन मस्क ने जवाब दिया कि 'अब यह संभव है' स्पेसएक्स ने ऐसी प्रणाली कल्पना की है, जिसमें स्टारशिप कक्षा में लॉन्च होने के बाद अंतरिक्ष में गहरे जाने के बजाय पृथ्वी के समानांतर यात्रा करेगी, जिससे दूर के शहरों के बीच तेज परिवहन संभव होगा। स्टेनलेस स्टील से बना 395 फुट का स्टारशिप 1000 यात्रियो को ले जाने में सक्षम होगा। डेली मेल की रिपोर्ट के अनुसार, स्पेसएक्स ने दावा किया है कि लॉस एंजेल्स और टोरंटो के बीच यात्रा का 24 मिनट, लंदन और न्यूयॉर्क के बीच 29 मिनट, जबकि दिल्ली और सैन फ्रांसिस्को के बीच 30 मिनट जितना कम हो सकता है। यात्रियों को टेकऑफ और लैंडिंग के दौरान गुरुत्वाकर्षण बल का अनुभव होगा।

इंदौर में चीनी कम मिठास भरपूर रन-वॉक

रैली में डायबिटीज को लेकर जागरूकता का संदेश; कैम्प में स्वस्थ जीवन शैली की सीख

इंदौर (नप्र)। इंदौर में विश्व मधुमेह सप्ताह के उपलक्ष्य में रविवार को 'चीनी कम मिठास भरपूर रन-वॉक' और जागरूकता रैली निकाली गई। इस दौरान जागरूकता शिविर से इंदौरवासियों को स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया गया। आयोजन का नेतृत्व सीनियर एंडोक्राइनोलॉजिस्ट डॉ. संदीप जुल्का ने किया। केयर सीएचएल अस्पताल, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए), और लायंस क्लब सहयोगी के तौर पर शामिल रहा। रविवार सुबह 6.45 बजे मंगल सिटी मॉल से शुरू हुई रन-वॉक का फ्लैग ऑफ भारतीय हॉकी टीम के कोच मीर रंजन नेगी, आईएमए के प्रेसिडेंट डॉ. नरेंद्र पाटीदार और मेजर जनरल श्रीकांत नीमा ने किया। रैली में बीएसएफ जवान, एनसीसी कैडेट्स, डॉक्टर्स और मधुमेह मरीजों ने भाग लिया। रैली मंगल सिटी मॉल से रेडिसन होटल और सत्य सांई चौराहा होते हुए वापस मंगल सिटी मॉल पर समाप्त हुई।

स्वास्थ्य शिविर में लोगों को स्वस्थ जीवन शैली की सीख

रैली के बाद सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक आयोजित स्वास्थ्य शिविर में टाइप 1 डायबिटीज से ग्रस्त बच्चों ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करेंगे। साथ ही, विशेषज्ञ डॉक्टरों से मधुमेह से बचाव और नियंत्रण के उपायों पर चर्चा करेंगे। डॉ. संदीप जुल्का ने बताया डायबिटीज एक गंभीर लेकिन नियंत्रित होने वाली बीमारी है। स्वस्थ जीवनशैली, सही खानपान, और नियमित व्यायाम से इसे रोका जा सकता है। यह आयोजन न केवल डायबिटीज मरीजों के लिए नहीं बल्कि आम जनता के लिए भी जागरूकता बढ़ाने का एक अनूठा प्रयास था। चीनी कम मिठास भरपूर रन-वॉक और स्वास्थ्य शिविर ने यह संदेश दिया कि डायबिटीज के साथ भी जीवन स्वस्थ और सुखद हो सकता है, बशर्ते हम अपनी जीवनशैली में सुधार करें। जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी सहयोगियों और प्रतिभागियों ने भविष्य में ऐसे और कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया।

कार चालक ने सड़क किनारे खड़े वाहनों को टक्कर मारी

- 2 युवतियों सहित कई घायल; मौके पर मौजूद भीड़ ने ड्राइवर को पीटा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूडिया इलाके में शनिवार देर रात एक टैक्सी कार ने कई वाहनों को टक्कर मार दी। कार की टक्कर से सड़क किनारे खड़े कई वाहन सड़क पर गिर गए। हादसे में दो युवतियों सहित कई लोग घायल भी हुए है। जो अलग-अलग निजी अस्पताल पहुंचे। घटना के बाद लोगों ने टैक्सी कार ड्राइवर की पिटाई कर दी। पुलिस ने कार जब्त कर ली है। ड्राइवर ने लापरवाही पूर्वक सड़क किनारे खड़े वाहनों को टक्कर मार दी।

लसूड़िया पुलिस ने बताया कि कार नंबर के ड्राइवर ने लापरवाही पूर्वक कार चलाने के बाद सड़क किनारे खड़े वाहनों को टक्कर मार दी। इस दौरान कार एक अन्य कार से टकराने के बाद दीवार में जा घुसी। यहां गुस्साए लोगो ने कार ड्राइवर को गाड़ी से निकाला और उसकी पिटाई कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया।घटना निपानिया स्थित फूड कोर्ट की है। हादसे में करीब आधा दर्जन दो पहिया और एक चार पहिया वाहन क्षतिग्रस्त हुआ है। बताया गया है कि हादसे में दो लड़कियां भी घायल हुई है। थाना प्रभारी तारेश सोनी ने बताया कि ड्राइवर संभवत शराब के नशे में था, जिसके चलते यह हादसा हुआ है। अभी नजदीकी अस्पतालों से किसी भी घायल के बारे में जानकारी नहीं आई है।

सेंधवा एडीजी के भतीजे की इंदौर में मौत

- देर रात हुआ पोस्टमार्ट्म, भोपाल शव लेकर गया परिवार

इंदौर (एजेंसी)। सेंधवा एडीजी के भतीजे की शनिवार रात इंदौर में मौत हो गई। रात 1 बजे शव का एमवाय अस्पताल में पोस्टमार्ट्म कराया गया। जिसके बाद परिवार शव को भोपाल लेकर गया है। परिवार के मुताबिक वह निजी कंपनी मे कार्य कर रहे थे। लसूड़िया टीआई तारेश सोनी के मुताबिक अनुपम (35) पुत्र किशोर मालवीय निवासी महालक्ष्मी नगर को उनके दोस्त शनिवार रात मृत अवस्था में एमवाय लेकर पहुंचे थे। जिसके बाद डॉक्टर ने पुलिस को सूचना दी। वह निजी साफ्टवेयर कंपनी में ऑफ रोल फाइनेंशियल हेड के पद पर थे। पिछले कुछ माह से इंदौर में काम कर रहे थे। शनिवार सुबह कर्मचारियों की ऑफिस आने को लेकर उनसे बात हुई थी। तो उन्होने तबीयत ठीक नही होने पर कुछ देर में आने के लिये कहा। इसके बाद उन्होंने कॉल रिसीव नही किया।

दोस्तों ने देखा तो अचेत पड़े थे

शनिवार शाम करीब 7 बजे अनुपम के दोस्त उन्हें देखने पहुंचे तो वह घर में अचेत पड़े थे। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक अनुपम का रात करीब 1 बजे पोस्टमार्टम कराया गया है। उनके चाचा सेंधवा में एडीजी है। वही परिवार में 10 साल का बेटा और पत्नी भोपाल में परिवार के साथ रहते है। अनुपम यहां किराये से रह रहे थे। संभवतः हार्ट अटैक के चलते उनकी मौत हुई है। शार्ट पीएम रिपोर्ट से शुरुआत में कुछ जानकारी सामने आ सकती है।

इंदौर में ट्रक ने मोपेड सवार को टक्कर मारी, मौत

- मौके से निकल रहे निगम कमिश्नर ने शव को एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के एमआर 10 चौराहे पर सड़क हादसे में एक मोपेड सवार की मौत हो गई। वहां से निकल रहे नगर निगम कमिश्नर ने मोपेड सवार को सड़क पर पड़े देखा। उन्होंने तत्काल एंबुलेंस बुलाकर उसे अरविंदो अस्पताल भेजा। घटना की जानकारी स्थानीय थाने पर भी दी गई है। बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, आईएसबीटी के पास रविवार दोपहर मोपेड नंबर से जा रहे व्यक्ति को ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में मौके पर ही मोपेड सवार की मौत हो गई। तभी वहां से नगर निगम के आयुक्त शिवम वर्मा निकल रहे थे। उन्होंने वायरलेस सेट पर पॉइंट देकर तत्काल एंबुलेंस बुलवाई। इसके बाद व्यक्ति के शव को पोस्टमॉर्ट्म के लिए अरविंदो अस्पताल भेजा। इस दौरान शिवम वर्मा वहां काफी देर तक रुके रहे। हादसे के की जानकारी लगने पर कांग्रेस पार्षद राजू भदौरिया और उनके साथी भी घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने मौके पर ट्रैफिक जाम को खुलवाया। पुलिस के मुताबिक अभी मृतक की पहचान नही हो पाई है।

बीयर की बोतलों पर इंदौर हाईकोर्ट का फैसला, कहा-

दोबारा इस्तेमाल कर बेचना ट्रेडमार्क का उल्लंघन

इंदौर (एजेंसी)। पुरानी बीयर की बोतलों जिन पर किसी अन्य कंपनी का ब्रांड नाम/लोगो अंकित है...का दोबारा उपयोग करके अपना बीयर उत्पाद बेचना ट्रेडमार्क का उल्लंघन है। जस्टिस संजीव सचदेवा और जस्टिस प्रणय वर्मा की खंड पीठ ने माउंट एवरेस्ट ब्रूअरीज लिमिटेड की पुरानी बोतलों में दो बीयर कंपनियों की बिक्री पर रोक लगा दी। जिन पर उनके बीयर ब्रांड स्टॉक और उनके लोगो, पांडा का चेहरा अंकित है। इंदौर हाईकोर्ट में मामले की सुनवाई के बाद कोर्ट ने फैसला सुनाया है।

कोर्ट ने कहा कि भले ही निजी प्रतिवादी अपीलकर्ताओं द्वारा निर्मित बोतलों पर अपने स्वयं के लेबल चिपका रहे हो, लेकिन अपीलकर्ताओं का ब्रांड 'स्टॉक' और 'पांडा डिवाइस' स्पष्ट रूप से और प्रमुखता से दिखाई दे रहा है, जिससे मध्यप्रदेश विदेशी शराब नियमों के विभिन्न प्रावधानों का उल्लंघन हो रहा है। हालांकि पीठ ने इस मुद्दे को खुला छोड़ दिया कि क्या ब्रांड एम्बॉस को मिटाने के बाद ऐसी बोतलों का दोबारा उपयोग किया जा सकता है।

अपील दायर करने के बाद सामने आया मामला

यह घटनाक्रम माउंट एवरेस्ट ब्रूअरीज द्वारा एकल न्यायाधीश के आदेश के खिलाफ अपील दायर करने के बाद सामने आया है, जिसमें आबकारी आयुक्त को विवाद पर नए सिरे से निर्णय लेने के लिए कहा गया था।

आयुक्त ने पहले सभी शराब/बीयर बॉटलिंग इकाइयों को शराब की रिफलिंग और बिक्री के

लिए उन पुरानी कांच की बोतलों का उपयोग करने से प्रतिबंधित कर दिया था, जिन पर उभरा हुआ लोगो होता है। आयुक्त ने उभरे हुए लोगो को हटाने या खरोचने के बाद पुरानी बोतलों के दोबारा उपयोग पर भी रोक लगा दी थी।

बोतलों पर अपना पंजीकृत लेबल चिपका रहे थे

इस प्रकार, उन्होंने कहा कि पुरानी बोतलों पर फिर से मुकदमा चलाने से उन्हें रोकने वाले आयुक्त के आदेश ने अनुच्छेद 19(1)(जी) के तहत व्यापार करने के उनके अधिकार का उल्लंघन किया है।

शुरू में, न्यायालय ने बोतलों की तस्वीरों पर विचार किया और पाया कि प्रतिवादी केवल अपीलकर्ता की उभरी हुई बोतलों पर अपना पंजीकृत लेबल चिपका रहे थे।

अपीलकर्ताओं का ब्रांड 'स्टोक' और 'पांडा डिवाइस' बोतलों पर प्रमुखता से दिखाई दे रहा है। ऐसी बोतलों में एक नहीं बल्कि दो ब्रांड होते हैं, जो स्पष्ट रूप से एमपी विदेशी शराब नियमों का उल्लंघन करते हैं और इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। कोर्ट ने कहा कि उभरे हुए लोगो को हटाने या खरोंचने के बाद पुरानी बोतलों के पुनः उपयोग पर रोक लगाने के निर्देश को रद्द कर दिया गया है और उक्त मुद्दे को उचित कार्यवाही में उचित प्राधिकारी द्वारा तय किए जाने के लिए खुला छोड़ दिया गया है।

इंदौर के लोकमान्य नगर में बनेगा एसटीपी प्लांट

बगीचे के सौंदर्यीकरण के साथ योग शेड का भी होगा निर्माण; रेवेन्यू नगर में भी होगा डेवलपमेंट

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लोकमान्य नगर में एसटीपी प्लांट बनाया जाएगा। इसके साथ ही बगीचे के सौंदर्यीकरण के साथ योग शेड का निर्माण भी होगा। ऐसे ही रेवेन्यू नगर में कई विकास काम होंगे। मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने रविवार को जोन 15 के वार्ड 72 में विभिन्न क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था, उद्यान और विकास कामों का निरीक्षण किया।

इसके तहत दशहरा मैदान के पास बनाए गए संजीवनी क्लिनिक का भी निरीक्षण किया। इसके बाद मेयर ने लोकमान्य नगर, केसर बाग रोड, सिद्धार्थ नगर, अलंकार पैलेस कॉलोनी, रेवेन्यू नगर और अन्य कॉलोनियों में सफाई व्यवस्था के साथ ही बगीचे के डेवलपमेंट और सीवरेज लाइन कामों के संबंध में निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मेयर ने सफाई व्यवस्था के संबंध में रहवासियों से चर्चा की। रहवासियों द्वारा लोकमान्य नगर में सीवरेज लाइन की निकासी की समस्या बताने पर मेयर ने जोनल अधिकारी नदीम खान को डीआरए के माध्यम से लोकमान्य नगर में एसटीपी प्लांट बनाने के लिए प्लानिंग तैयार करने के निर्देश दिए। इससे एसटीपी प्लांट से निकलने वाले ट्रीटेड वॉटर का क्षेत्र में स्थित उद्यानों में उपयोग किया जा सकेगा। साथ ही नागरिकों द्वारा अन्य उपयोग भी किया जा सके।

मेयर ने अलंकार पैलेस कॉलोनी में डाली जा रही स्टॉर्म वाटर लाइन काम का अवलोकन किया। साथ ही रेवेन्यू नगर में विकास कामों के लिए प्लानिंग तैयार करने के भी निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अपर कमिश्नर मनोज चौरसिया, पार्षद योगेश गेंदर, स्वास्थ्य अधिकारी, सीएसआई और अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

इंदौर में दूध विक्रेता ने किया सुसाइड

बाथरूम में जाकर टी-शर्ट से लगाई फांसी; पुलिस जांच में जुटी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के बापू गांधी नगर इलाके में रहने वाले एक दूध विक्रेता ने आत्महत्या कर ली। शनिवार रात उसने टीशर्ट का फंदा बनाया और बाथरूम में फांसी लगा ली। काफी देर तक जब वह बाथरूम से नही निकले तो पत्नी ने आवाज दी। जवाब नही देने पर सास को बुलाया। तब उन्होंने दरवाजा का लॉक तोड़ा तो युवक अंदर मृत हालत में था।जूनी इंदौर पुलिस ने बताया कि मृतक विक्की (35) पुत्र प्रेमनारायण यादव है। रात करीब 8 बजे के लगभग उसने अपने घर की बाथरूम में फांसी लगा ली। रात में उसे पत्नी और मां ने देखा। इसके बाद आसपास के लोगों को सूचना दी और पड़ोसी उसे अस्पताल लेकर आए।बता दें विक्की मवेशी पालने के साथ दूध बेचने का काम करता है। उसके परिवार में पत्नी ओर दो बच्चे के अलावा मां और एक छोटा भाई है। विक्की कुछ समय से नशा करने का आदि हो गया था। जिसके चलते वह डिप्रेशन में रहता था। पुलिस के मुताबिक मौके से सुसाइड नोट नही मिला है, मामले में जांच जारी है।

इंदौर की लेडी इंजीनियर को ठगने वाले दो गिरफ्तार

दोनों राजस्थान-तेलंगाना के, 6 राज्यों की पुलिस को थी तलाश; 12 लाख की ठगी की थी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर पुलिस ने तेलंगाना की अंतर्राज्यीय गैंग साइबराबाद के जालसाजों को शनिवार को गिरफ्तार किया है। 6 राज्यों की पुलिस आरोपी को तलाश कर रही थी। पुलिस ने ऑनलाइन ठगी से संबंधित 111 बैंक खातों को फ्रीज करवाए। इस गैंग ने सॉफ्टवेयर डेवलपर महिला से 12 लाख 10 हजार 307 रुपए की ऑनलाइन ठगी की थी। फरियादी के 6 लाख रुपए रिफंड की प्रोसेस कोर्ट के माध्यम से की जा रही है।

मनी लॉन्ड्रिंग के केस में फंसाने की देते थे धमकी: क्राइम ब्रांच ने केस में अभी तक झालावाड़ (राजस्थान) और साइबराबाद (तेलंगाना) के 2 आरोपी को गिरफ्तार किया है। गैंग के सदस्य कॉल पर खुद को पुलिस अधिकारी बताकर मनी लॉन्ड्रिंग के केस में फंसाने का कहकर ऑनलाइन पैसे ठग लेते थे। आरोपी गैंग पुलिस अधिकारी बताकर ठगने के लिए रोजाना सैकड़ों लोगों को कॉल करती थी। आरोपी पुलिस रिमांड पर हैं।

कहा- आपका पार्सल कस्टम से रिजेक्ट हो गया: इंदौर क्राइम ब्रांच की साइबर हेल्पलाइन में सॉफ्टवेयर डेवलपर इंदौर निवासी फरियादी ने ऑनलाइन ठगी की शिकायत की थी। जिसमें उन्होंने बताया कि 25 मई 2024 को अंजान मोबाइल नंबर से कॉल करने वाले ने बताया कि मैं फेडई इंटरनेशनल कूरियर अंधेरी ईस्ट मुंबई से राजेश वर्मा बात कर रहा हूं। आपके नाम से एक पार्सल मुंबई से ताईवान भेजने के लिए बुक किया है, यह कस्टम पर रिजेक्ट हो गया। जवाब में फरियादी ने बताया कि उसने कोई पार्सल भेजा ही नहीं है। इस पर कहा गया कि आप अपने पार्सल का डिटेल नोट कर लो। पार्सल में 5 पासपोर्ट, 3 बैंक क्रेडिट कार्ड, 5 किलो कपड़े, 200 ग्राम एमडीएमए ड्रग्स और 1 लैपटॉप है। इसे 20 मई 2024 को भेजा गया है। 22 मई 2024 को कस्टम्स से रिजेक्ट हो गया है।

पार्सल आपके आधार कार्ड से भेजा गया है, फिर फरियादी ने आधार कार्ड नंबर पूछा तो आरोपी ने एक नंबर बताया और कहा कि ये मोबाइल नंबर से लिंक है। महिला घबरा गई और आरोपी ने कहा कि आपने नहीं भेजा है तो किसी ने आपके आधार कार्ड का गलत इस्तेमाल किया है। आप इसकी शिकायत अंधेरी मुंबई से साइबर क्राइम डिपार्टमेंट में करें। इसके बाद कहा गया कि आपकी कॉल अंधेरी मुंबई की साइबर क्राइम डिपार्टमेंट में कनेक्ट कर दी गई। किसी ने इंस्पेक्टर बनकर बात की। कहा कि 4 घंटे में मुंबई आ जाओ, नहीं तो ड्रग्स ट्रैफिकिंग का केस लगा देंगे। बाद में आरोपी ने फरियादी के बैंक अकाउंट की डिटेल ली।

रैगिंग के कारण मेडिकल स्टूडेंट को छोड़नी पड़ी पीजी सीट

इंदौर के कॉलेज ने बॉन्ड के 30 लाख मांगे; हाईकोर्ट ने कहा-डॉक्यूमेंट्स तुरंत लौटाएं

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज (एमजीएम) में पोस्ट ग्रेजुएशन (पीजी) कर रहे एक स्टूडेंट ने रैगिंग से परेशान होकर सीट छोड़ दी। जब अपने ओरिजनल दस्तावेज मांगे तो कॉलेज प्रबंधन ने कहा, एडमिशन लेने पर बॉन्ड भरा गया था। ऐसे में सीट छोड़ने पर 30 लाख रुपए जमा कराने होंगे। इसके बाद ही दस्तावेज लौटाए जाएंगे। मामला हाईकोर्ट पहुंचा। दोनों पक्षों को सुनने के बाद चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैत और जस्टिस एसए धर्माधिकारी की बेंच ने निर्देश दिए कि 18 नवंबर तक स्टूडेंट को ओरिजनल मार्कशीट्स लौटाएं। इसके साथ ही एनओसी भी दें और कोर्ट को सूचित करें। मामला इंदौर निवासी स्टूडेंट अभिषेक मसीह का है। उन्होंने अपने एडवोकेट आदित्य सांघी के माध्यम से हाई कोर्ट में याचिका लगाई थी। इसमें कहा था कि अब तक 7

स्टूडेंट्स ने 30 लाख रुपए की डिमांड किए जाने पर आत्महत्या कर ली है। अभिषेक के परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है। ओरिजनल मार्कशीट्स न होने से आगे की पढ़ाई नहीं हो पा रही है।

संसद के प्रश्नकाल में हुई थी बहस: अभिषेक के एडवोकेट आदित्य सांघी ने कहा, यह बहुत ही गंभीर मामला है। इस समस्या पर जनवरी 2024 में लोकसभा में बहस भी हुई थी। कहा गया था कि मध्यप्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में स्टूडेंट्स लगातार सुसाइड कर रहे हैं। पीजी स्टूडेंट्स से 30 लाख रुपए का बॉन्ड सरकार द्वारा एडमिशन के दौरान ले लिया गया है।

जब तक वे 30 लाख रुपए जमा नहीं करेंगे, किसी भी कारण से सीट छोड़ने की परमिशन नहीं मिलेगी। अगर सीट छोड़ते हैं तो स्टूडेंट की ओरिजनल मार्कशीट्स कॉलेज वापस नहीं करेंगे। एनओसी सर्टिफिकेट भी नहीं देंगे। इस कारण 7 स्टूडेंट्स सुसाइड कर चुके हैं। कितने और स्टूडेंट्स ने सुसाइड का प्रयास किया है। एडवोकेट आदित्य सांघी ने बताया कि मुद्दे पर पार्लियामेंट में पूरे प्रश्नकाल में बहस की गई थी। इसके बाद पार्लियामेंट ने नेशनल मेडिकल कमीशन (पहले मेडिकल कौंसिल ऑफ इंडिया थी) को निर्देश दिए थे कि मध्यप्रदेश सरकार को ये नियम हटाने को कहा जाए। मध्यप्रदेश सरकार ने ऐसा नहीं किया। अभिषेक को भी इसी कारण कॉलेज प्रबंधन ओरिजनल दस्तावेज नहीं लौटाकर 30 लाख रुपए की मांग कर रहा है इसलिए याचिका लगानी पड़ी।

रैगिंग से स्टूडेंट्स डिप्रेशन में चले जाते हैं: एडवोकेट सांघी ने बताया कि 30 लाख रुपए बॉन्ड की कंडिशन मध्यप्रदेश जैसे राज्यों के लिए बहुत ही गंभीर विषय है। पीड़ित स्टूडेंट अनुसूचित जनजाति कैटेगरी का है। उसके पिता की आय मध्यम वर्ग से भी निचले स्तर की है। वे 30 लाख रुपए का इंतजाम करने में असमर्थ हैं। एमजीएम मेडिकल कॉलेज में रैगिंग से अभिषेक का शरीर तो टूटा ही, दिमाग भी टूट गया। ऐसे हालात में ही स्टूडेंट डिप्रेशन में चले जाते हैं और सुसाइड का सोचने लगते हैं।

संपादकीय

अस्पतालों में आग नवजातों की मौत का दोषी कौन?

उत्तर प्रदेश में झांसी ज़िले के सरकारी मेडिकल कॉलेज में शुक्रवार को आग लगने से 11 नवजातों की मौत हृदय विदारक और अस्पतालों में लापरवाही तथा बदइंतजामी की पोल खोलने वाली घटना है। हाल के वर्षों में अस्पतालों में आग लगने और उसमें नवजातों की असमय मौत की घटनाएं बढ़ गई हैं, लेकिन किसी भी घटना से कोई सबक लिया गया हो और ऐसे हादसे रोकने के लिए ठोस कदम उठाए गए हों, ऐसा नहीं लगता। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज के नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट (एनआईसीयू) में रात को करीब दस बजे लगी। जिसमें 10 नवजात जिंदा जल गए और 16 नवजात घायल हुए हैं। कॉलेज के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक सचिन महोर का कहना है कि आग रात साढ़े 10 से पौने 11 के बीच एनआईसीयू वार्ड में शॉर्ट सर्किट से लगी। उस यूनिट में ज्यादातर बच्चे ऑक्सीजन सपोर्ट पर थे, जिस वजह से स्पार्क भी फैल गया। तीन बच्चों की तो पहचान भी नहीं हो सकी है तो कई बच्चों के माता पिता अपनी मृत संतानों की लाशें अभी तक खोज रहे हैं। कई दंपतियों के बच्चे अभी उन्हें नहीं मिले हैं। जिन मां बाप के कच्ची कली से बच्चे खिलने से पहले ही सिस्टम की बदहाली के चलते मुरझा गए, उनके जख्म पर मरहम लगाने के लिए भी शायद किसी के पास शब्द नहीं हैं। इन नवजातों की मौत का जिम्मेदार कौन है? अफसोस की बात तो यह है कि ये हादसा ऐसे समय पर हुआ है जब देश में नवजात शिशु सप्ताह चल रहा है। यह जानकारी भी सामने आई है कि बच्चों वाले आईसीयू वार्ड में एक नर्स द्वारा तीली जलाने के कारण आग भभकी। इस मामले जिला प्रशासन की लापरवाही भी सामने आ रही है। बताया जाता है कि सरकारी अमला घटना के वक्त राज्य के उपमुख्यमंत्री के स्वागत की तैयारियों में व्यस्त था। योगी सरकार के आदेश पर दो सदस्यीय जांच कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सीएम को सौंप दी है। इस रिपोर्ट के आधार पर आगे कार्रवाई की जाएगी। देश में ऐसे हादसे पहले भी हो चुके हैं और ज्यादातर मामले सरकारी अस्पतालों के ही हैं। लेकिन तात्कालिक सक्रियता के अलावा आगे कुछ नहीं होता। इस बात का जवाब किसी के पास नहीं है कि अस्पतालों में अग्नि से सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम क्यों नहीं होते और होते हैं तो उनका समुचित रखरखाव क्यों नहीं होता? हर बड़े अस्पताल में फायर आफिसर की नियुक्ति अनिवार्य क्यों नहीं है? दुर्भाग्य से आज दुनिया भर में मरने वाले 100 नवजातों में से 30 शिशु भारत के होते हैं। वैसे भी झांसी मेडिकल कॉलेज की यह दर्दनाक घटना पहली नहीं है। इसके पहले मप्र में भोपाल के सरकारी मेडिकल कॉलेज में आगजनी से 7 बच्चों की मौत हो चुकी है। लेकिन अभी भी अस्पताल में अग्निशमन के उपाय नहीं किए गए हैं। इसी तरह मई 2024 में दिल्ली के विवेक विहार स्थिति बेबी केयर अस्पताल में लगी आग में 7 बच्चों की मौत हो गई थी। जहां तक फायर ऑडिट की बात है तो देश में गैर-सरकारी संस्था एनएनएफ की तरफ से अस्पतालों के एनआईसीयू और नर्सिंग होम को मान्यता दी जाती है। लेकिन देश में सैकड़ों ऐसे नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट हैं, जो नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एंड हेल्थ केअर (एनएबीएच) या नेशनल नियोनेटोलॉजी फोरम (एनएनएफ) जैसी एजेंसियों से मान्यता प्राप्त नहीं हैं। ये संस्थाए एनएनएफ इस सेफ्टी जांच का कुछ शुल्क लेती है, लेकिन अस्पताल इस खर्च को बचाना चाहते हैं, जिसका खमियाजा मरीजों को भुगतना पड़ता है।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

कनाडा में घट रही घटनाओं के मायने

पिछले कुछ वर्षों से कनाडा में रह रहे हिंदू लोगों के साथ हिंसा की घटनाएं बढ़ीं है, और पिछले कुछ माह में तो इन घटनाओं में काफी वृद्धि हुई है। मंदिरों या हिन्दू समाज के लोगों पर हमला करने वाले मूल कनाडा निवासी नहीं है बल्कि भारत से गए हुए खालिस्तानी सोच के कट्टरपंथी आतंकवादी हैं। इन आतंकवादियों की संख्या कनाडा में सिखों की कुल संख्या में बहुत कम लगभग नगण्य है। परंतु जो शांतिप्रिय और राष्ट्रवादी भारतीय मानस के सिख है वह सक्षम होते हुए भी इनका मुकाबला या प्रतिकार नहीं कर पाते।

उनके स्वभाव में हिंसा जरा भी नहीं है और ऐसी ही स्थिति एक समय भारत में भी बनी थी, जब 1980 के दशक में सिख आतंकवाद पंजाब में चरम पर था और वस्तु स्थिति यह थी कि भिंडरावाले ने स्वर्ण मंदिर को अपने नियंत्रण में ले लिया था। वहां भी शांतिप्रिय सिख और एक ऐसी कौम जो सदैव देश के लिए समर्पित रही है जिसने आजादी के आंदोलन से लेकर आजादी के बाद के युद्ध में सर्वाधिक कुर्बानियां दी हैं। जब पंजाब में जलियांवाला कांड हुआ था जहां जनरल डायर ने सैकड़ों सिखों को गोली से मरवा दिया था उस बहादुर और राष्ट्रभक्त कौम के लोग अपनी ही कौम के चंद लोगों की हिंसा के सामने लाचार थे। एक तरफ उनकी आस्था और विश्वास का केंद्र स्वर्ण मंदिर था परंतु उसका परिसर भिंडरावाले और उसके सहयोगियों के नियंत्रण में पहुंच गया था। लगभग ऐसी स्थिति आज कनाडा में सिख समुदाय के बहुसंख्यक भाइयों की हो रही है। कनाडा में बसे हुए लगभग कई लाख सिखों में से मुश्किल से मुट्ठी भर लोग ऐसे हैं जो खालिस्तान की बात करते हैं और उस पर हिंसा के लिए प्रोत्साहित करते हैं या प्रयोग करते हैं। यह अपने ही इतिहास भूल जाते हैं कि यह वह बहादुर राष्ट्रीय कौम है जो सदैव विदेशी हमलावरों से लड़ी है और कभी भी अपना वतन नहीं छोड़ा है। यहां तक कि जब अंग्रेज भारत का बंटवारा कर रहे थे और चाहते थे कि सिख समाज अपना अलग देश मांगे तब भी भारत के सिखों ने कभी भी इसका समर्थन नहीं किया। आज यह चंद लोग अपने कौम के और बहादुर सिख भाइयों की कुर्बानी और शहादत को बदनाम कर रहे हैं।

कनाडा के निज्जर जिनका नाम खालिस्तान आंदोलन के मुखिया के रूप में और एक हिंसक संगठन चलाने के रूप में जाना जाता था उनकी हत्या हुई थी। खालिस्तानी संगठन के लोगों ने इसका आरोप भारत सरकार पर लगाया था कि निज्जर की हत्या भारत सरकार द्वारा योजना के तहत एक अमेरिकी भारतीय नागरिक ने की है। भारत सरकार इसका निरंतर खंडन करती रही है और इसे खालिस्तानी प्रचार बताती रही है। श्री पन्नू जो अभी अमेरिका में है और वहां से खलिस्तानी आंदोलन का लगातार प्रचार कर रहे हैं, ने भी ऐसे ही आरोप लगाए हैं शायद वे ऐसे आरोप लगा कर शांति पूर्ण भारतीय सिखों को भड़काना चाहते हैं हालांकि ना कनाडा की ना अमेरिका की और ना भारत के बहुसंख्यक सिख भाइयों ने उनका कभी समर्थन नहीं किया और ना ही वे उससे सहमत हैं। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो का झुकाव इन खालिस्तान आतंकवादियों की तरफ है इसके पीछे भी क्या कारण है यह विशेष शोध का विषय है।

कनाडा की कुल आबादी में सिख समुदाय मुश्किल से दो प्रतिशत से भी कम है और इसके अलावा जो भारतीय लोग हैं उनकी संख्या भी लगभग आधा से एक प्रतिशत है दूसरी तरफ कनाडा की आमदनी का एक बड़ा हिस्सा भारतीय छात्रों के माध्यम से कनाडा में आता है। भारत के कई लाख छात्र पढ़ने के लिए कनाडा जाते हैं और औसतन एक छात्र अपने शिक्षा काल में एक करोड़ रूपया फीस और अन्य चीजों पर खर्च करता है। कनाडा की आय के स्रोत का एक अच्छा खासा हिस्सा भारतीय छात्रों से आता है। कनाडा के प्रधानमंत्री की क्या लाचारी है कि वह एक भारत विरोधी दुष्प्रचार का हिस्सा बनते हैं। यह चिंता का विषय है कि कनाडा की राजनीति में उन स्थानीय सिख भाइयों जो कनाडा के नागरिक बन गए हैं का सहयोग मिलना कारण हो या फिर कुछ अंतरराष्ट्रीय कारण भी हो सकते हैं। पन्नू को अमेरिका ने शरण दी है। अमेरिका की यह नीति रही है कि वह सारी दुनिया में विवादित तत्वों को अपने यहां शरण देता है और लोकतांत्रिक आजादी के नाम पर उनका समर्थन करता है। उनकी हिंसक गतिविधियों का समर्थन भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से करता है, उनके इन संबंधों को जानते हुए भी उन पर आंख बंद कर लेता है। हालांकि जब उसके अपने देश की बात आती है तब वह लोकतंत्र भूल जाता है और अपने मुल्क में अपनी सत्ता कायम रखने के लिए विभिन्न प्रकार की हिंसा करने को तत्पर रहता है।

4 नवंबर को कनाडा में फिर दो हिंदू मंदिरों पर हमले हुए जिनमें महिलाओं और बच्चों को पीटा गया। जो वीडियो आए हैं उनमें स्पष्ट दिख रहा है कि खालिस्तान का झंडा लिए हुए मारपीट करने वाले लोग हैं। परंतु उनकी संख्या कुछ ज्यादा नहीं है। कनाडा की पुलिस खड़े-खड़े देख रही है। ब्राम्पटन नामक स्थान पर जहां अधिकांश हिंदू समुदाय रहता है और कनाडा के 2021 की जनगणना के अनुसार लगभग 1 लाख 10 हजार हिंदू समुदाय ब्राम्पटन में ही रहता है। ब्राम्पटन शहर कनाडा के सबसे अधिक आबादी वाले नौ शहरों में से एक है और यह हमला प्रायोजित था। यह घटना घोर निंदनीय है। 4 नवंबर को ब्राम्पटन में दो मंदिरों पर हमले हुए, एक मंदिर, हिंदू सभा मंदिर और दूसरा लक्ष्मी नारायण मंदिर में हुआ था। इन हमलावरों ने महिलाओं और बच्चों को भी पीटा। चूंकि कनाडा के प्रधानमंत्री निरंतर खालिस्तानी आतंकवादियों का समर्थन करते हैं, अतरू पुलिस और प्रशासन कहे या अनकहे उनका इशारा समझ कर मूक बना रहा है। हालांकि बाद में भारतीय उच्चायोग ने जब उस पर आपत्ति की तब वहां की सरकार ने इसकी औपचारिक रूप से निंदा की। जस्टिन ट्रूडो ने कहा कि कनाडा में हर व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपने धर्म पालन का अधिकार है परंतु उन्होंने अपराधियों पर कोई कार्रवाई की बात नहीं की और ना ही कनाडा में जाकर उनके देश के संविधान के खिलाफ सांप्रदायिक हिंसा करने वालों को कनाडा से बाहर निकालने की कोई बात की। यह जो आयोजन मंदिर में आयोजित हुआ था तथा मंदिर परिसर में जो कैंप लगा था, इसमें भारतीय उच्चायोग का भी समर्थन था। एक स्थानीय संस्था, हिंदू कनाडा फाउंडेशन और भारतीय उच्चायोग के सहयोग से यह आयोजन किया गया था। इसका एक अर्थ यह भी हुआ कि यह भारत सरकार की नीति या इशारे के आधार पर प्रायोजित जैसा था और संभव है कि इसलिए इस बार ब्राम्पटन घटना में खालिस्तान हमलावरों ने कुछ ज्यादा उत्पात किया और मारपीट की। कुल मिलाकर यह चिंता का विषय है। कनाडा के हिंदू समुदाय के लिए जो कनाडा में लगभग अल्पसंख्यक हैं और भारत में सिख भाई अल्पसंख्यक हैं में भी ऐसी घटनाओं से भारत में आंतरिक तनाव में वृद्धि होती है। तनाव को बढ़ाना ही कनाडा सरकार और अंतरराष्ट्रीय शक्तियों का खेल है। वह लगातार पंजाब से बाहर गए हुए सिखों को उनके सिखों के एक छोटे से समूह को जो आतंकी हिंसा की घटनाओं में लिप्त होते हैं उन्हें प्रोत्साहित करते हैं और इन घटनाओं के आधार पर भारत को ब्लैकमेल भी करने का प्रयास करते हैं।

यह यूरोप और अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक स्वीकृत चलन है या हथकंडा है, तात्पर्य दूसरे देशों में तनाव पैदा करो, अपने देश में हिंसक शक्तियों को फलने फूलने का मौका दो और फिर दुनिया के सरपंच बनने का प्रयास करो। कुल मिलाकर इसके पीछे पैसा और कारपोरेट का प्रचार तंत्र होता है ,जो भारत जैसे देशों में अपनी कंपनियों को ठेका दिलाने के लिए सुविधाओं के लिए इन अंतर विरोधों का इस्तेमाल करता है। पहले हिंसा को पनपाओ, फिर सौदा करो, फिर हिंसा को दबाओ, यह वैश्विक व्यापार की रणनीति है। कनाडा भी इन्हीं वैश्विक शक्तियों के हथियार के रूप में कार्य करता प्रतीत हो रहा है । यह दुखद है कि कनाडा में हिंदू समुदाय के ऊपर कोई कनाडियन हमला नहीं कर रहा, कोई ईसाई या मुसलमान हमला नहीं कर रहा है बल्कि यह हमला भारतीय ही कर रहे हैं जो खालिस्तानी संगठनों के नाम पर कनाडा में सक्रिय है ।आखिर वह भारतीय सिख ही तो हैं। कभी ना कभी वह या उनके पूर्वज भारत से ही कनाडा गए हैं। तात्पर्य है कि कनाडा में भारतीय ही आपस में लड़ रहे हैं। भारत से कनाडा में गए हुए दो भाई वहां जाकर लड़ रहे हैं, यह दिमागी फितूर है और वैश्विक संस्थाओं और ताकतों के प्रचार का असर है। इस पर विचार करना चाहिए कि वह बहादुर कौम जो भारत की सुरक्षा के लिए, आजादी के लिए कुर्बान होते रहे, उनके छोटे से हिस्से में ही सही पर यह दुर्भाव भी क्यों पैदा हुआ?

सन् 1984 में भारत में श्रीमती इंदिरा गांधी की मौत के बाद जिस प्रकार सिखों के साथ दंगे हुए और हजारों की संख्या में निर्दोष सिख मारे गए कहीं उसने तो इस दुर्भाव को पनपने व पलने का अवसर तो नहीं दिया? उसके पहले कभी भी सिख भाई अलगाव की बात सोचते ही नहीं थे। बल्कि 1965 का युद्ध, हमें याद है कि जब पाकिस्तान सीमा से पाक के फौजी विमान पंजाब में बम फोड़ने के लिए आते थे तो बहादुर सिखों के बच्चे छतों पर जाकर उन्हें देखकर हंसते थे। वह मन से निर्भय थे और 1965 के भारत के युद्ध जीतने में भी सिख समुदाय के सैनिकों की बहुत बड़ी भूमिका थी। 1971 में भी जब बांग्लादेश में पाकिस्तानी फौज के द्वारा बांग्लादेशियों पर आतंकवादी घटनाएं और मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में मुक्ति वाहिनी उनसे लड़ रही थी पाकिस्तान की सेना के अन्याय और जुल्म के चलते लाखों की संख्या में बांग्लादेशी शरणार्थी बनकर भारत की सीमा में प्रवेश कर रहे थे तब भारत के सामने एक लाचारी थी कि इसे कैसे रोका जाए? आखिर शरणार्थियों को कब तक भारत रख पाएगा? और जब पाकिस्तान की सेना का जुल्म बंद नहीं हुआ तो भारत की फौज को भारत सरकार ने तत्कालीन पूर्वी बंगाल (आज का बंगला देश) में प्रवेश करने के लिए कहा और यह इतिहास का तथ्य है और भारतीय सेना की बहादुरी और कौशल स्वर्ण अक्षरों में लिखा हिस्सा है कि भारतीय सेना ने एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों का समर्पण कराया था। यह दुनिया की अद्भुत घटना थी, और इस अभियान के प्रमुख भी एक सिख लेफ्टिनेंट जनरल थे। उस बहादुर सिख समुदाय के साथ 1984 में जो हुआ वह कितना निंदनीय है और कैसे लोगों के दिलों पर चोट पहुंचाने वाला है यह अब समझा जा सकता है। जब भारतीय हिंदू समाज के ऊपर किसी दूसरे देश में भी कोई हमला या घटना होती है तो भारतीयों के मन को चोट पहुंचती है ,परंतु जब अपने ही देश में अपने ही भाइयों के द्वारा सिख समाज के लोगों के ऊपर हमले किए गए राजनीतिक प्रतिशोध में हजारों निर्दोष लोगों हत्याएं और लूटपाट हुई तो क्या उस कौम के मन में कटुता पैदा होना स्वाभाविक नहीं है? यद्यपि सारा देश इसके इसके पक्ष में नहीं था। हम जैसे बहुत लोगों ने इसका विरोध भी किया था और हम लोगों ने धमकीयाँ भी सुनी और सही थी। परंतु देश की सत्ता व समाज को उनके जख्म को भरना चाहिए था वह शायद पर्याप्त रूप में नहीं हो सका। पिछले दिनों जिस प्रकार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचार तेज हुआ है उसने भी सिख समाज के मन में और भारतीय समाज में जो भी धार्मिक अल्पसंख्यक हैं उनके मन में हिंदू विस्तारवाद के प्रति सही या गलत कुछ चिंताएं और भाव निर्मित किए है। यह इतिहास का एक तथ्य है कि सिख पंथ को मानने वाले या उसके जनक पहले हिंदू थे यानी हम सब एक ही वृक्ष से पैदा हुये है यह ऐतिहासिक तथ्य व भाव था। यह गौरव के साथ बोलते थे कि हमने हिंदू की रक्षा के लिए भी लड़ाई लड़ी है और यह सही भी था। परंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भाषा और हिंदू राष्ट्र के निर्माण की घोषणा से गैर मुस्लिम धार्मिक अल्पसंख्यकों के मन में भी एक असुरक्षा का भाव आया है। पंजाब में भारतीय जनता पार्टी और अकाली दल के बीच जो राजनैतिक रिश्ते थे वह काफी पुराने थे। लगभग 50 वर्षों तक राजनीतिक रिश्ते रहे और सुचारू रूप से चलते रहे। परंतु भाजपा सरकार के पिछले कार्यकाल 2019 से 2024 के बीच अकाली दल भाजपा से अलग हो गया और उनका राजनीतिक रिश्ता लगभग टूट गया। यद्यपि कांग्रेस के साथ सिखों का बहुमत नहीं था क्योंकि कांग्रेस ने जो घाव 1984 में दिए थे उन्हें वह भूल नहीं सकते थे। हजारों की संख्या में निर्दोष सिख लोग मारे गए, प्रताड़ित हुए, उनकी पीढ़ियां शायद ही इस दर्द को आसानी से भूल पाए। इस रिश्ते के टूटने के बाद पंजाब के सिख बड़े पैमाने पर भाजपा और कांग्रेस दोनों को छोड़कर आम आदमी पार्टी के साथ गए। इस घटनाक्रम का भी असर कनाडा के सिखों में हुआ है। भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी आत्म चिंतन करना चाहिए कि उनके हिंदू राष्ट्र की घोषणा और कल्पना कहीं सिख भाइयों को अलगाववाद की ओर धकेलने का माध्यम तो नहीं बन रही है? जिस प्रकार के संकेत पिछले दिनों सिख नेताओं, और सिख राजनीति से निकले हैं ,वे यही संकेत दे रहे हैं के इसका भी असर कनाडा के सिखों और हिंदुओं पर हुआ है। मैं भारत सरकार से भी कहना चाहूंगा कि कनाडा में भारतीय हिंदुओं के ऊपर हमला करने वाले कोई विदेशी नहीं है बल्कि भारत के मूल के लोग ही हैं। अमेरिका में भी भारतीय हिंदुओं के ऊपर हमला करने वाले कुछ संगठन या लोग भारतीय सिख समाज के भी हैं। मतलब साफ है कि कनाडा में या कभी कभी अमेरिका में भारतीय ही आपस में लड़ रहे हैं। यही स्थिति अन्य देशों की भी है। भारत सरकार को जहां एक तरफ कनाडा में हिंदुओं और उनके मंदिरों की रक्षा के लिए राजनीतिक, कूटनीतिक,आर्थिक सभी प्रकार के प्रयोग और दबाव बनाना चाहिए, उसके साथ-साथ भारत में हिंदू और सिख के रिश्ते 1984 के पूर्व कैसे बने इस पर भी विचार करना चाहिए। हिंदू राष्ट्र देश को एकजुट नहीं रख पाएगा। देश को एकजुट, धर्मनिरपेक्षता ही रख पाएगी जिसकी छाया में सभी धर्म के अनुयाई स्वतंत्र और निर्भय रूप से अपने-अपने धर्म का पालन करें। एक-दूसरे के प्रति घृणा और हिंसा को त्यागें। तभी हिंदू भी सफल होगा, भारत भी मजबूत होगा, वरना सिखों के अलग-थलग रहने की मानसिकता का दुखद इतिहास को लिखने वाली स्थिति होगी जहां एक तरफ कांग्रेस होगी वहीं दूसरी तरफ भाजपा का हिंदू राष्ट्रवाद भी होगा।

महाराष्ट्र चुनाव

नवीन कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

महायुति में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे का नाम आगे!

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सत्ताधारी महायुति ने अभी मुख्यमंत्री के लिए किसी का नाम घोषित नहीं किया। लेकिन, शिवसेना का एकनाथ शिंदे गुट एक ही नाम पर अड़ा है। जबकि, बीजेपी ने कोई नाम तो घोषित नहीं किया, पर ये समझा जा रहा है, कि यदि महायुति की सरकार बनी तो देवेंद्र फड़णवीस भी एक नाम होगा। यदि कुछ हालात ऐसे बने कि शिंदे मुख्यमंत्री नहीं बने तो उसके सामने कई तरह के संकट होंगे। छीनी हुई शिवसेना और 'धनुष बाण' चिन्ह के अस्तित्व को लेकर उद्धव ठाकरे (शिवसेना-यूबीटी) हमलावर हो जाएंगे।

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव के लिए 20 नवंबर को मतदान होना है, 23 नवंबर को नतीजे आ जाएंगे। लेकिन, अभी से यह कहना मुश्किल है कि राज्य में सरकार किसकी बनेगी! महायुति की या महा विकास आघाड़ी (एमवीए) की। सरकार के गठन के लिए जो विश्वास होना चाहिए वो महायुति और एमवीए दोनों गठबंधनों में बना हुआ है। यह विश्वास सिर्फ मुख्यमंत्री पद को लेकर नहीं दिखता है। दोनों गठबंधन यह कह रहा है कि नतीजे आने के बाद मंथन करके मुख्यमंत्री का नाम पेश किया जाएगा। गठबंधन धर्म को निभाते हुए वैचारिक रूप से यह बात तो यहां तक ठीक है। लेकिन, सत्तारूढ़ बीजेपी जीत महायुति में मुख्यमंत्री पद को लेकर अभी कुछ भी स्पष्ट नहीं है। महायुति में इस पद के दावेदार बीजेपी, शिंदे सेना और अजित पवार गुट यानि कि गठबंधन के तीनों दल हैं। शिंदे वर्तमान में मुख्यमंत्री हैं, तो अजित पहले से ही बता रहे हैं कि उनका सपना मुख्यमंत्री बनने का है। बीजेपी ने अपने पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का नाम आगे कर रखा है।

महायुति में मुख्यमंत्री पद को लेकर स्थिति इसलिए बिगड़ी हुई है, कि बीजेपी नेता और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने स्पष्ट किया है कि इस समय मुख्यमंत्री शिंदे हैं। लेकिन चुनाव के बाद महायुति के तीनों दल आपस में चर्चा करके मुख्यमंत्री का फैसला करेंगे। उनके स्पष्टीकरण पर त्वरित प्रतिक्रिया शिंदे सेना की तरफ से आई कि शिंदे ही मुख्यमंत्री होंगे। इससे पहले अजित गुट के उम्मीदवार नवाब मलिक ने खुलासा किया कि चुनाव के बाद अजित पवार ही किंगमेकर होंगे। इससे महायुति के समर्थकों पर किस तरह से असर पड़ रहे हैं और उससे नतीजा क्या आने वाले हैं इसके लिए इंतजार करना पड़ेगा। पर, इतना तो स्पष्ट है कि इस चुनाव में मुख्यमंत्री पद के लिए फडणवीस, शिंदे और अजित अपनी रणनीति पर काम कर रहे हैं। दूसरी ओर बीजेपी को यह भी पता है कि अगर शिंदे को मुख्यमंत्री पद नहीं दिया तो आगे मुश्किल हो सकती है।

चुनावी खिलाड़ी तो फडणवीस, शिंदे और अजित तीनों हैं। लेकिन, सबसे बड़ा सवाल शिंदे के सामने खड़ा है। अगर वे दोबारा मुख्यमंत्री पद हासिल नहीं कर पाते हैं तो उनके साथ ही छीनी हुई शिवसेना और चिन्ह धनुष बाण के अस्तित्व को लेकर उद्धव ठाकरे (शिवसेना-यूबीटी) हमलावर हो जाएंगे। शिंदे का राजनीतिक करियर भी सवालों के घेरे में रहेगा। इसकी वजह साफ है कि शिंदे ने शिवसेना में विभाजन कराया और इसके बाद वह आरोप लगा रहे हैं कि उद्धव ने शिवसेना के संस्थापक बाला साहेब की विचारधारा

और हिंदुत्व को छोड़कर सत्ता की लालच में एमवीए में शामिल हो गए।

राज्य के राजनीति के जानकारों का मानना है कि अमित शाह ने बड़ी चाल चली। बीजेपी ने टिकटों के बंटवारे में जिस तरह से अपना दबदबा कायम रखा है उससे स्पष्ट है कि राज्य में बीजेपी अपने दम पर सरकार बनाना चाहती है। उसे न तो शिंदे गुट की जरूरत है न अजित गुट की। बीजेपी ने शिंदे गुट में 12 और अजित गुट में 4 अपने उम्मीदवार उतारे हैं। ऐसा नहीं कि बीजेपी की इस मंशा से शिंदे गुट और अजित गुट वाकिफ नहीं है। इसलिए शिंदे गुट और अजित गुट अपने उम्मीदवारों को जिताने की कवायद में हैं। दूसरी ओर बीजेपी के बारे में यह भी कहा जा रहा है कि वह शिंदे और अजित के उम्मीदवारों को हराने में लगी हुई है।

बीजेपी की इसी दोहरी नीति का शिकार होने से उद्धव उससे नाता तोड़कर एमवीए में शामिल हुए। शिंदे न सिर्फ उद्धव पर हमलावर हैं, बल्कि उनकी शिवसेना को खत्म करने का भी काम कर रहे हैं। शिंदे और उद्धव कट्टर शिवसैनिकों को अपनी ओर खींचने में लगे हैं। शिंदे अपनी सभाओं में उद्धव पर आरोप लगा रहे हैं कि उद्धव ने महाराष्ट्र के विकास का चक्का रोक दिया था। लेकिन, उनके रोके गए कामों को वह पूरा करने में लगे हैं। शिंदे ज्यादा से ज्यादा सीट जीतना चाहते हैं, ताकि जब दूसरी बार सरकार का गठन हो तो बीजेपी के सामने मुख्यमंत्री के रूप में शिंदे ही हों। लोकसभा चुनाव में भी शिंदे का स्ट्राइक रेट ज्यादा था और। हाल ही के एक सर्वे में भी राज्य के लोगों ने मुख्यमंत्री के रूप में फडणवीस से ज्यादा शिंदे को पसंद किया। शिंदे यह भी साबित करने में लगे हैं, कि वे घर में बैठने वाले मुख्यमंत्री नहीं हैं। वह लगातार आम लोगों से मिल रहे हैं और उनकी समस्याओं को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। रेवड़ियां बांटने में तो वह अव्वल हैं जिसमें 'लाड़की बहीण योजना' भी शामिल है। 1500 रूपए प्रति माह बांटकर बहनों का दिल जीता है। इस योजना का लाभ 2.4 करोड़ महिलाओं को मिल रहा है। शिंदे बड़े विश्वास के साथ कहते हैं कि बहनें ही उन्हें दोबारा मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाएंगी। किसानों के लिए भी खजाना खोला गया है। मराठा आरक्षण आंदोलन के कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने फडणवीस और बीजेपी को हराने का ऐलान किया है तो मराठा मुख्यमंत्री शिंदे को उनका समर्थन है। राज्य की राजनीति में मराठा का दबदबा रहा है और अब तक सबसे ज्यादा मुख्यमंत्री मराठा ही हुए हैं। सत्ता की चाबी 31 प्रतिशत मराठाओं के पास ही है। महायुति में भले ही फडणवीस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह के करीबी माने जाते हैं। लेकिन महाराष्ट्र बीजेपी में ब्राह्मण फडणवीस को कम ही पसंद करते हैं।

राज्य में 8 से 10 प्रतिशत ब्राह्मण हैं। मराठा के नाराज होने से बीजेपी ओबीसी पर दांव लगा चुकी है। ओबीसी भी बीजेपी और एमवीए में बंटे हुए हैं। बावजूद इसके बीजेपी में मुख्यमंत्री के रूप में फडणवीस का नाम आगे आ रहा है। बीजेपी की बी टीम के रूप में राज ठाकरे की पार्टी 'मनसे' काम रही है और यह उद्धव के अलावा शिंदे और अजित गुट को भी कमजोर करने में लगी हुई है। इसे शिंदे और अजित अच्छी तरह से जानते हैं। इसलिए शिंदे खुद को मजबूत करने में लगे हुए हैं तो अजित बीजेपी के कट्टर हिंदुत्व के खिलाफ मुसलमानों को भी खुश करने का काम कर रहे हैं। राज्य में 11 प्रतिशत मुस्लिम आबादी है। शिंदे भी मुसलमानों के लिए अपने लॉलीपॉप का पिटारा खोल दिया है। शिंदे उन तमाम रणनीति पर काम कर रहे हैं जिससे वह न सिर्फ दोबारा मुख्यमंत्री बन जाएं, बल्कि वह शिवसेना के संस्थापक बाला साहेब के असली वारिस और असली शिवसेना के नेता के रूप में भी खुद को स्थापित कर सकें।

संस्कार जननी

दृष्टिकोण

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

जगदीश जी को बहाना चाहिए था लखनऊ आने का। वे चाहते तो ऑफिस के काम के लिए बेंगलुरु से अपने किसी मातहत को भेज सकते थे। मगर उन्हें अपने भतीजे सुशील की फोन पर की गई मनुहार याद थी। जगदीश जी के बड़े भाई अपने परिवार के साथ लखनऊ में रहते थे। सुशील उनके बड़े भाई का बेटा था जिसकी हाल ही में नौकरी लगी थी। सुशील ने फोन पर अपने चाचा से लखनऊ आकर उनके साथ रहने का अनुरोध कुछ इस अंदाज में किया था कि जगदीश जी उसे टाल नहीं सके।

लखनऊ में जगदीश जी के आने की बात सुनकर सुशील ही नहीं, पूरा परिवार खुश था। वे घर पहुँचे तो सभी ने दरवाजे पर उनकी अगवानी की। सुशील ने जल से उनके हाथ-पैर धुलवाए, आचमन कराया और अंदर सोफे पर बैठने के लिए आसन दिया। जगदीश जी ने जलपान किया, कुशलक्षेम का आदान-प्रदान हुआ। सुशील स्वयं पूरी व्यवस्था कर रहा था। जगदीश जी ने नहाते समय देखा कि स्नानघर पूरी तरह चाक-चौबंद है। साबुन, तौलिया, गर्म पानी, शैम्पू, तेल, क्रीम, इत्र आदि हर जरूरत का ध्यान रखा गया था। सफर के दौरान अटैची में रखे हुए चाचा जी के कपड़े सिकुड़ गए थे, सुशील ने उन्हें इस्तिरी कर पहनने के लिए हैंगर पर टांग दिया था।

खाने की टेबल पर षटरस व्यंजन परोसे गए जिन्हें पकाते समय जगदीश जी की पसंद और नापसंद का विशेष ध्यान रखा गया था। भोजनोपरान्त पान की गिलौरी हाजिर थी। थोड़ी देर सबने गपशप की, फिर सुशील ने चाचा जी के आराम करने का प्रबंध कर दिया। अपरान्ह में चाय के साथ स्नैक्स भी थे। सभी लोग शहर में घूमने निकले। गाड़ी सुशील चला रहा था। उसने बड़े चाव से परिवार के साथ चाचा जी को लखनऊ घुमाया। वहाँ की प्रसिद्ध मिठाई और चाट खिलाई। रात को सभी ने मिलकर डिनर किया और देर रात तक बातचीत करते रहे। सोने के समय सुशील ने चाचा जी के बिस्तर, पानी आदि के पूरे इंतजाम स्वयं किए। निश्चिंत होकर कि चाचा जी आराम से सो गए हैं, वह अपने कमरे में गया। सुबह जगदीश जी ने स्नान-ध्यान के बाद तैयार होकर नाश्ता किया। वापसी में वे लखनऊ का काम निपटाते हुए वहीं से एयरपोर्ट निकलनेवाले थे।

जगदीश जी अपने बड़े भाई के परिवार, विशेष रूप से सुशील, के आत्मीय व्यवहार से गद्गद थे। सबसे विदा लेते हुए वे भावुक हो गए। अचानक उन्होंने सुशील को गले लगा लिया और पूछा- 'तुम्हें इतने प्रेम और सेवा की भावना कहाँ से मिली?'

सुशील बड़े आदर के साथ उन्हें निहारते हुए बोला- 'नित्य की पूजा-पाठ से। प्रतिदिन भगवान की पूजा और धार्मिक ग्रंथों का पाठ करते हुए बड़ों के प्रति आदर और उनकी सेवा का भाव हृदय में स्वयमेव जाग्रत हो गया है। जैसे ईश्वर संसार के बुजुर्ग हैं, आप भी हमारे बड़े हैं।'

'क्या तुम्हारी पूजा बराबरीवालों और छोटों के लिए भी कुछ सिखाती है?' जगदीश जी सुशील के जवाब से प्रभावित हो गए थे। 'हाँ,' सुशील ने विनम्रतापूर्वक कहा- 'हमारे रीति-रिवाज हमजोलियों के साथ प्रेम और छोटों के प्रति स्नेह और उनकी परवाह करना सिखाते हैं। हम केवल भगवान नहीं, उनके पूरे कुटुंब की अर्चना करते हैं। संसार में रहनेवाले भी हमारे प्रभु का परिवार है।' 'मैं स्कूल की छुट्टियों में अपने बेटे को कुछ दिन तुम्हारे साथ रहने के लिए भेजूँगा।' जगदीश जी बोले और परिवार ही नहीं, भारतीय संस्कृति की मधुर स्मृतियों को हृदय में संजोए वापस चल दिए।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश कांत

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आया है सो खाएगा

भारतीय लोकतंत्र के लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि उसके तीनों अंगों के कर्मियों के संबंध में बिना किसी भेदभाव के जनता में यह उदात्त धारणा प्रचलित है कि वहां ऊपर से नीचे तक खिलाए बिना काम नहीं होता। अगर किसी को इसमें नकारात्मकता की बू आती हो या उसकी राष्ट्रवादी भावना आहत होती हो, तो सकारात्मक रूप में इसे गर्व के तौर पर इस रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है कि वहां खिलाने से काम हो जाता है।

कबीर के शब्दों में थोड़ा हेरफेर करके इसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति यों की जा सकती है कि- आया है सो खाएगा, काजी क्लर्क वजीर। पदानुक्रम-अनुसार ऊपर से नीचे तक खाने की प्रक्रिया इतने सुचारु रूप से चलती है कि अमेरिका जैसे विकसित देशों के प्रबंधन-संस्थान भी इसे देख लें तो अपने पाठ्यक्रमों में रखने पर मजबूर हो जाएं, उसी तरह जैसे कुछ

प्रबंधन-संस्थानों को मुंबई के डब्बेवालों की प्रक्रिया को अपने पाठ्यक्रमों में स्थान देना पड़ा है। सबका हिस्सा बंधा हुआ है, जो यथासमय उनके पास पहुंच जाता है। लेकिन सब-कुछ इतने गुप्त तरीके से कि किसी को कानो-कान खबर न हो। यों कोई कानों-कान खबर रखने की जरूरत भी नहीं समझता, जब सब-कुछ सबकी आंखों के सामने होता रहता है। कोशिश अलबत्ता उनकी फिर भी यही रहती है कि किसी को कानो-कान खबर न हो, मतलब कम से कम कानो-कान तो न हो! भर-पेट से भी बढ़कर भर-तोंद खाने वाला भी हमेशा यही कहता है कि भैया, मैं नहीं माखन खायो।खाने के प्रमाण के तौर पर मुंह पर मक्खन लगा दिख जाने पर भी यही सफाई देता है कि यह तो विरोधियों ने मुझे फंसाने के लिए बरबस मेरे मुंह से लिपटा दिया है–ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो!

ऐसे में कभी-कभी किसी अफसर के बारे में गलतफहमी भी हो जाती है कि यह साला ईमानदार है, खाता नहीं है। बेचारे को नाना प्रकार से अपनी यह खराब छवि तोड़नी पड़ती है, तब कहीं जाकर उसे भी चैन पड़ता है और जनता को भी। और हो भी क्यों न? जब वह खिलाकर आया है, तो उसकी वसूली करने के लिए खाएगा नहीं क्या? छोटी से छोटी नौकरी में भी लाखों रुपये खिलाकर आने वाला राष्ट्र-सेवक पहला काम उन्हें वसूलने का करेगा या राष्ट्र-सेवा का, अब क्या यह भी बताना पड़ेगा?

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

ऐतिहासिक फैसला-2

'देश की सर्वोच्च अदालत व्यक्तिगत न्यायाधीशों से बड़ी'

न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि कृष्ण अय्यर का सिद्धांत संविधान की व्यापक और लचीली भावना को नुकसान पहुंचाता है। उन्होंने यह भी कहा कि हालांकि वे इस दृष्टिकोण पर बहुमत से आंशिक रूप से सहमत हैं। लेकिन, वे पिछले न्यायाधीशों पर मुख्य न्यायाधीश की टिप्पणियों से सहमत नहीं हैं, जिन्होंने विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर अलग दृष्टिकोण अपनाया था।

मिनर्वा मिल मामले में मुख्य याचिका 1992 में मुंबई स्थित संपत्ति मालिक संघ द्वारा दायर की गई थी। संघ ने महाराष्ट्र आवास और क्षेत्र विकास प्राधिकरण अधिनियम के अध्याय का विरोध किया। सन 1986 में शामिल किया गया, अध्याय राज्य के अधिकारियों को सेस्ड इमारतों और उस भूमि का अधिग्रहण करने का अधिकार देता है, जिस पर वे बनाए गए हैं। यदि 70 प्रतिशत निवासी बहाली के उद्देश्यों के लिए ऐसा अनुरोध करते हैं। एमएचएडीए अधिनियम को संविधान के अनुच्छेद 39 (बी) के अनुसरण में अधिनियमित किया गया था, जो राज्य के लिए यह सुनिश्चित करना अनिवार्य बनाता है कि समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण आम भलाई के लिए सर्वोत्तम रूप से वितरित किया जाए।

जस्टिस बीवी नागरत्ना ने सामुदायिक संसाधन फैसले में मुख्य न्यायाधीश द्वारा जस्टिस कृष्णा अय्यर की निंदा करने पर आपत्ति जताई। एक अलग राय में, न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया ने भी कृष्ण अय्यर सिद्धांत की कठोर आलोचना को अस्वीकार करते हुए कहा कि इस तरह की टिप्पणियों से बचा जा सकता था। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने मंगलवार को भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ द्वारा न्यायमूर्ति वीआर कृष्णा अय्यर सहित सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीशों की आलोचना करने पर कड़ी आपत्ति व्यक्त की। ऐसा करते हुए, न्यायमूर्ति नागरत्ना ने जोर देकर कहा कि मैं कहती हूं कि भारत के सर्वोच्च न्यायालय की संस्था व्यक्तिगत न्यायाधीशों से बड़ी है। वह इस महान देश के इतिहास के विभिन्न चरणों में इसका केवल एक हिस्सा हैं। इसलिए, मैं प्रस्तावित निर्णय में विद्वान मुख्य न्यायाधीश की टिप्पणियों से सहमत नहीं हूं।

प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली नौ न्यायाधीशों की पीठ के बहुमत (न्यायमूर्ति नागरत्ना सहित) ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 39 (बी) के तहत सभी निजी संपत्तियों को समुदाय के भौतिक संसाधन नहीं माना जा सकता। न्यायमूर्ति नागरत्ना के फैसले के अनुसार, तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने अपने बहुमत की राय में कहा कि कर्नाटक राज्य बनाम रंगनाथ रेड्डी के 1977 के मामले में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर का फैसला हमारी अर्थव्यवस्था के लिए एक विशेष आर्थिक विचारधारा और संरचना का समर्थन करता है। डॉ अम्बेडकर को मुख्य न्यायाधीश ने यह कहने के लिए उद्धृत किया कि भारत में आर्थिक लोकतंत्र समाजवाद या पूंजीवाद जैसे किसी एक आर्थिक ढांचे से नहीं, बल्कि एक कल्याणकारी राज्य की आकांक्षा से जुड़ा हुआ है।

विद्वान मुख्य न्यायाधीश आगे कहते हैं कि इस प्रकार, इस न्यायालय की भूमिका आर्थिक नीति निर्धारित करना नहीं है, बल्कि एक आर्थिक लोकतंत्र की नींव रखने के लिए निर्माताओं के इस इरादे को सुविधाजनक बनाना है। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि कृष्ण अय्यर का सिद्धांत संविधान की व्यापक और लचीली भावना को नुकसान पहुंचाता है। उन्होंने कहा कि हालांकि वह इस दृष्टिकोण पर बहुमत से आंशिक रूप से सहमत हैं, लेकिन वह पिछले न्यायाधीशों पर मुख्य न्यायाधीश की टिप्पणियों से सहमत नहीं हैं, जिन्होंने विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर अलग दृष्टिकोण अपनाया था।

न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने एक संवैधानिक, आर्थिक और सामाजिक संस्कृति की पृष्ठभूमि में समुदाय के भौतिक संसाधनों के निर्माण पर निर्णय लिया। इसने व्यापक रूप से व्यक्ति पर राज्य को प्रधानता दी। वास्तव में, 42वें संशोधन ने, अन्य बातों के साथ-साथ, संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी शब्द को शामिल किया था। संविधान सभा में चर्चा और आर्थिक लोकतंत्र के व्यापक सदन में एक वैध राज्य नीति पाए जाने वाले समय के ज्वार जैसे सभी योगदान देने वाले कारकों की परिप्रेक्ष्य समझ पर, क्या हम पूर्व न्यायाधीशों को दंडित कर सकते हैं और केवल एक विशेष व्याख्यात्मक परिणाम तक पहुंचने के लिए उन पर 'अहित' का आरोप लगा सकते हैं? न्यायमूर्ति नागरत्ना ने पूछा कि क्या भारत के सर्वोच्च न्यायालय की संस्था व्यक्तिगत न्यायाधीशों से बड़ी है?

न्यायमूर्ति नागरत्ना ने मुख्य न्यायाधीश की उस टिप्पणी पर भी आपत्ति जताई कि कृष्ण अय्यर के दृष्टिकोण में सैद्धांतिक त्रुटि, एक कठोर आर्थिक सिद्धांत को प्रस्तुत करना था। यह संवैधानिक शासन के लिए अनन्य आधार के रूप में निजी संसाधनों पर अधिक राज्य नियंत्रण की वकालत करता है। एक एकल आर्थिक सिद्धांत, जो राज्य द्वारा निजी संपत्ति के अधिग्रहण को अंतिम लक्ष्य के रूप में देखता है, हमारे संवैधानिक ढांचे के ताने-बाने और सिद्धांतों को कमजोर करेगा। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि ये टिप्पणियां अनुचित और अनुचित है। उन्होंने कहा कि कोई भी इस तथ्य को नहीं भूल सकता है कि पिछले न्यायाधीशों ने ऐसे निर्णय दिए होंगे जो उस समय की परिस्थितियों के लिए अधिक उपयुक्त थे।

उन्होंने कहा कि केवल इसलिए कि तब से एक आदर्श परिवर्तन हुआ है। पूर्व न्यायाधीशों को यह कहने के लिए दंडित करना उचित नहीं होगा कि उन्होंने एक ऐसा दृष्टिकोण रखने के लिए संविधान का अनादर किया जो आज उचित नहीं हो सकता। लेकिन, अतीत में प्रासंगिक हो सकता है। उन्होंने इस तरह से पूर्व न्यायाधीशों के फैसलों की मुख्य न्यायाधीश की आलोचना पर कड़ी आपत्ति जताई और टिप्पणी की कि भविष्य में न्यायाधीशों द्वारा इस तरह की प्रथा का पालन नहीं किया जाना चाहिए।

न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि केवल राज्य की आर्थिक नीतियों में वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की ओर प्रतिमान परिवर्तन के कारण, जिसे 1991 के सुधार कहा जाता है, जो आज तक ऐसा करना जारी रखते। इस अदालत के न्यायाधीशों को संविधान का अपमान करने वाले के रूप में ब्रांडिंग करने का परिणाम नहीं हो सकता है।

न्यायमूर्ति धूलिया ने भी कहा कि कृष्ण अय्यर सिद्धांत की आलोचना से बचा जा सकता था। एक अलग राय में, न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया भी न्यायमूर्ति नागरत्ना ने भी बहुमत के फैसले में कृष्ण अय्यर सिद्धांत की कठोर आलोचना को अस्वीकार की। उन्होंने कहा कि अपनी बात समाप्त करने से पहले, मुझे कृष्ण अय्यर सिद्धांत पर की गई टिप्पणियों पर अपनी कड़ी अस्वीकृति भी दर्ज करनी चाहिए। न्यायमूर्ति धूलिया ने कहा कि यह आलोचना कठोर है और इससे बचा जा सकता था। न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया ने कहा कि यह सिद्धांत-जिसे न्यायमूर्ति ओ चिन्नाप्पा रेड्डी ने भी समर्थन दिया था-मजबूत मानवतावादी सिद्धांतों पर आधारित था और अंधेरे समय में लोगों के प्रति सहानुभूति को दर्शाता है।

कृष्ण अय्यर सिद्धांत या उस मामले के लिए ओ चिन्नाप्पा रेड्डी सिद्धांत, उन सभी से परिचित है जिनका कानून या जीवन से कुछ भी लेना-देना है। यह निष्पक्षता और समानता के मजबूत मानवतावादी सिद्धांतों पर आधारित है। यह एक ऐसा सिद्धांत है जिसने काले समय में हमारे रास्ते को रोशन किया है। उनके निर्णय का लंबा हिस्सा न केवल उनकी विशिष्ट बुद्धि का प्रतिबिंब है, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि लोगों के प्रति उनकी सहानुभूति। यह इसलिए था कि मनुष्य उनके न्यायिक दर्शन के केंद्र में था। स्वयं न्यायमूर्ति कृष्णा अय्यर के शब्दों में न्यायालयों का भी एक निर्वाचन क्षेत्र होता है राष्ट्र और एक घोषणा पत्र संविधान।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

क्या मैं हावी (डोमिनेटिंग) हूँ?

जब मैं ऑफिस में बैठती थी तो मेरा केबिन अक्सर कन्फेशन रूम बन जाता था। स्टॉफ में लड़कियाँ बहुत थी सो उनकी रोज़ की समस्या सुनती थी। एक परिचित ने जब कहा कि वो अपने पुत्र को भेज रहे हैं वो हमसे दिल नहीं खोलता शायद आपसे दिल की बातें खोलें, बहुत बहुत उदास रहता है, शायद अवसाद में। मैंने तुरंत कहा आप उसे साइकोलॉजिस्ट के पास ले जाएं। उन्होंने कहा वो पागल थोड़ी ही है वो आपको बहुत मानता है इसलिये आप के पास भेज रहे हैं।

सच में जब वो आया तो मैं हैरान रह गई। 6 महिने पहले मैं उसकी शादी में उससे मिली थी हंसमुख, खिलखिलाता, जिंदादिल लड़का हुआ करता था। क्या वैवाहिक जीवन में कोई समस्या है? फिर सोचा इन लोगों ने पांच साल के लिव इन के बाद प्रेम विवाह किया था सोच समझ कर। अपनी खुद की लॉ फर्म खोली थी पूरे अनुभव के बाद। घर से सपोर्ट था फिर क्या हुआ? मैंने धीरे-धीरे बातचीत शुरू की थोड़ी देर बाद वो खुलने लगा। पहला कथन वही रहता है नवविवाहितों का, कि अब वो पहले जैसी नहीं रही जिससे मैंने प्यार किया था उसकी सारी समझदारी कहाँ गई। पहले हम सब काम मिल बांट के करते थे, आज वो मिल के काम करने का जज़्बा कहाँ गया। यूँ वो मेरा हर ख़्याल रखती है, पर मुझे जाने क्यों ऐसा लगता है वो अहंकारी हो गई है।

मुझे बहुत दु:खद लगा पर मैंने उसे ये सब इग्नोर करने को कहा और थोड़ा समय मांगा। मैंने तय किया अब मैं उसकी पार्टनर नेहा से बात करूँगी। जब मैंने धीरे-धीरे उसे सारी बात बताई उसकी आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे वो स्तब्ध रह गई। उसने बताया कि मुझे थोड़ा उसके व्यवहार में चेंज लगा था पर वो ऐसा कैसे सोचता है। अगर क्लाइंट किसी से मेरा नाम सुनकर आते हैं तो वो आते ही से मेरा नाम लेते हैं और अपना केस मुझे देते हैं। हम महिने के अंत में जब रिव्य करते हैं तो 80 फीसदी केस मेरे होते हैं पर मैंने भी नोटिस किया वो अब पहले जैसा इंटरेस्ट नहीं लेता। मानो वो मान के चल रहा है कि लोग मुझसे ही अपना मुकदमा लड़वाना चाहते हैं। उसकी अरूचि क्लाइंट को भी दिख जाती है। वो हम लॉयर की मीटिंग में भी नहीं जाता। मैं सोचती हूँ वो ऑफिस का मैनेजमेंट ही संभाल ले। केस फाइल तैयार कर ले पर वो उसे छोटा काम लगता है।

अब वो थोड़ा तैश में आ गई मैं क्या करूँ दीदी मुझे काम करने में मज़ा आता है, मैं क्या करूँ मैं हर केस जीत जाती हूँ तो मैं थोड़ा मेहनती, काबिल, महत्वाकांक्षी ज़्यादा हूँ तो इसमें मेरा क्या क़ुसूर? मेरे सास-ससुर भी ऐसा ही सोचते होंगे कि मैं तेज तर्रार हूँ तभी वो उसे बेचारा बेचारा कहते हैं। मैं उसके कपड़े, खाने, मूड का, घर का भी ख़्याल रखती हूँ।

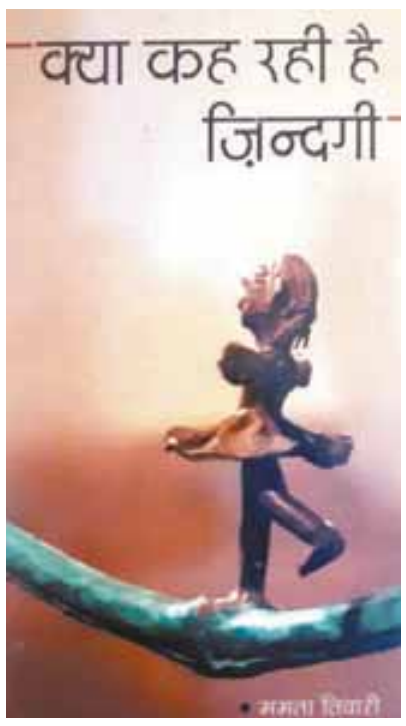

सबको इससे भी समस्या है कि मैं मल्टीटॉस्किंग हूँ। मैं क्या करूँ दीदी अगर मैं मैनेजमेंट में अच्छी हूँ सब काम करके भी खुश रहती हूँ।

उसके जाने के बाद मैंने ये निष्कर्ष निकाला कि भारतीय समाज में पुरूष का अपर हैंड होना चाहिये। अगर स्त्री भी जॉब में हो तो उसे पति से कम कमाई वाला जॉब लेना चाहिये। बच्चा और घर पति को संभालने का काम वो ही करेगी। एक साथ एक जगह काम करने पर पति को ही उसका बॉस होना चाहिये। पति के माँ-बाप की सेवा में कोई कमी नहीं रहना चाहिये। आवाज नीची करना चाहिये। पति कितना भी अंहकारी हो उसे डॉमिनेटिंग नहीं कहा जाता उसका इगो सही माना जाता है। यही सब चीजें अगर स्त्री में हो तो वो चालाक, तेज, हावी होने वाली महिला मानी जाती है।

अब समाज और पुरूष को सोचना चाहिये जिस जगह का मैनेजमेंट स्त्री देखती है मसलन घर का भी वहाँ सर्वेसर्वा वो ही होगी तो उसे उसका अहंकार ना समझे। जब किसी को पद मिलता है तो उसे उसकी गरिमा भी रखनी होती है। अब हमारी मालिश वाली से उसके पति की रोज लड़ाई होती है चूंकि वो लोग बहुत समय से मुझसे जुड़े हैं तो एक दिन उसका पति मेरे पास आकर रोने लगा कि वो काम का, पैसा कमाने का रौब जमाती है तब मैंने उसे कहा था दरअसल वो रौब नहीं जमाती तुम उसे पैसे कमाते, घर का काम करते, बच्चों माता पिता को संभालते देखते हो तुम्हें ऐसा लगता है तुम ना तो पैसा कमाते हो, ना घर परिवार संभालते हो, ना उसका हाथ बंटाते हो जानते हो उसने आंसू पोंछकर कहा कि मैं जोरू का गुलाम नहीं हूँ। अब आप बताइये क्या कह रही है आप की ज़िंदगी?

आयोजन

मूल लेखन से अधिक कठिन है अनुवाद की यात्रा

वरिष्ठ सिंधी लेखक खीमन यू मूलानी से भेंट

भोपाल। सिंधी भाषा के वरिष्ठ लेखक और अनुवादक खीमन यू मूलानी का मानना है कि मूल लेखन से कहीं अधिक कठिन है अनुवाद की यात्रा। अनेक बार अनुवाद करते समय कुछ क्षेत्रीय और आंचलिक शब्द अन्य भाषा में उपलब्ध नहीं होते। देश के प्रत्येक अंचल का खानपान, संस्कृति ,वेशभूषा,शब्दावली और लोकाचार भिन्न होते हैं। इस नाते कई शब्दों का विकल्प लक्ष्य भाषा में नहीं प्राप्त होता। इस तरह अनुवाद सहज और भावानुवाद न होकर कई बार जटिल और शब्दानुवाद बन जाता है। खीमन मूलानी भोपाल के संस्कृति भवन में साहित्य अकादमी, भारत सरकार के 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। यह मध्य प्रदेश सिंधी साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित किया गया।

लगभग पौन घंटे के आत्मकथ्य में लेखक मूलानी ने बताया कि उन्होंने बचपन भी भोपाल में ही गुजारा है। पूरा जीवन साहित्य सृजन में बीता है। कुल 43 पुस्तक प्रकाशित हैं, जिसमें 34 पुस्तक सिंधी और हिंदी के परस्पर अनुवाद पर आधारित हैं। इनमें शायरी गजल, कविता, उपन्यास, कहानी ,यात्रा संस्मरण और साक्षात्कार आदि शामिल हैं। युवावस्था से लेखन शुरू किया। उन्हें पत्र पत्रिकाएं पढ़ने में रुचि थी। बाद में सिंधी का साहित्य उपलब्ध हुआ। इसके गहन अध्ययन के बाद अनुवाद की इच्छा जागृत हुई। हिंदी से सिंधी और सिंधी से हिंदी लगभग 500 रचनाओं के अनुवाद का कार्य संपन्न किया है। कई पुस्तक पुरस्कृत भी हुई हैं। मूल लेखन और अनुवाद दोनों के लिए साहित्य अकादमी नई दिल्ली से पुरस्कार मिले हैं। प्रकाशन का लंबा अनुभव रखने वाले मूलानी जी साहित्य अकादमी भारत सरकार से पुरस्कृत साहित्यकार हैं। आज के कार्यक्रम में सवाल जवाब के सत्र में अनेक रचनाकारों और पाठकों ने मूलानी जी के साहित्य सृजन के बारे में जानकारी प्राप्त की और अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। वरिष्ठ लेखक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मोहन गेहाणी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। मध्य प्रदेश सिंधी साहित्य अकादमी के निदेशक राजेश कुमार वाधवानी ने कहा कि सिंधी अकादमी का कार्यालय साहित्यिक आयोजनों के लिए भी उपयोग में लाया जाएगा। प्रारंभ में अशोक मनवाणी सदस्य सिंधी सलाहकार बोर्ड साहित्य अकादमी भारत सरकार ने साहित्य अकादमी के उद्देश्यों और योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर भोपाल नगर के साहित्य प्रेमी और पाठक गण बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में लेखक खीमन जी का आयोजक गण और साहित्यकारों द्वारा स्वागत किया गया।

सिंधी कलाम भी सुनाए- वरिष्ठ साहित्यकार खीमन ने कार्यक्रम के अंत में स्वरचित रचनाओं और संत कंवर राम के भक्ति गीत का सस्वर पाठ भी किया। इस कलाम को श्रोताओं ने काफी पसंद किया।

श्री मूलानी पर केंद्रित ब्रोशर का प्रकाशन- साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार खीमन यू मूलानी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाशित विशेष ब्रोशर का वितरण कार्यक्रम में किया गया। इस ब्रोशर में मूलानी द्वारा लिखी गई और अनुवाद की गई 46 पुस्तकों की सूची एवं मूलानी जी के साहित्य का विस्तृत विवरण शामिल है। ब्रोशर का लेखन लेखिका रश्मि रामानी इंदौर ने किया है।

स्मृति शेष- देबजीत सरंगी

अरूण डिके

अन्न परंपरा के लिए जूझने वाला व्यक्तित्व

हमारी ज्ञात और अज्ञात स्वर्णीम अन्न परंपरा के लिए दिन-रात जूझने और तीस साल खपाने वाला ओडिशा का देबजीत सरंगी आदिवासी बहुल महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों में दो हजार दो सौ आदिवासी परिवारों के संपर्क में था। वह ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था, लेकिन अपनी पसंद की कई किताबों के संदर्भित ज्ञान को बटोरकर खेतों में सफलता-पूर्वक सिद्ध करता था। युनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया में आए हुए अन्न विशेषज्ञों से रू-ब-रू होते हुए उसका पहला सवाल होता था - 'देवियो और सज्जनो - अन्न क्या है?' फास्ट-फूड के मुंह लगे प्रतिनिधि अलग-अलग तरीके से उलझन भरे उत्तर देते हैं, तब हंसकर देबजीत कहता - 'अपने जीवन का सबसे बड़ा आधार अन्न होकर भी क्या पहला कौर लेने के पहले कभी आपने पूछा कि ये अन्न कहाँ से आया? किस मिट्टी में पैदा हुआ? किसने पैदा किया? ये जहरयुक्त है या जहरमुक्त?'

देबजीत बताता था - 'आदिवासी ग्रामीण समाज में अन्न एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। बीज बोने से लेकर उसकी कटाई तक किसान अपने बच्चों जैसा अन्न को पालते हैं और जब अन्न घर में आता है तो उसकी यथावत पूजा होती है। उसके बीजों का अंकुरण देखा जाता है और जब पता चलता है कि ये बीज अगली फसल की बोवाई के लिए श्रेष्ठ हैं तब उनकी शोभा-यात्रा निकाली जाती है, स्त्री-पुरूष, छोटे-बड़े, नाचते-गाते, ढ़ोल-मंझीरे बजाते आगे चलते हैं। अन्न भगवान का दिया सबसे बड़ा प्रसाद माना जाता है। अन्न पैदा करना, पकाना और सबको बांटकर खाना हमारी परंपरा रही है। अन्न हम कभी बेचते नहीं थे। अन्न देकर घर में लगने वाली जरूरी चीजों की अदला-बदली करना (बार्टर) हमारी परंपरा रही है।

'आशा' (अलायंस फॉर होलिस्टिक एण्ड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर) की प्रमुख कविता कुरूगंटी बताती हैं - 'ये देबजीत नहीं, उसका 30 साल का काम बोल रहा था। देबजीत ने आदिवासियों के अधिकार, महिलाओं का स्वास्थ्य, उनके मूलभूत अधिकार, पौष्टिक अन्न, जैविक खेती, वन खेती, योग, आयुर्वेद आदि का व्यापक अभ्यास किया था। कोलकत्ता के समाजशास्त्री डॉ. अर्धेन्दु चॅटर्जी को अपना गुरू मानकर देबजीत ने जैविक खेती की बाराखड़ी सीखी, फिर अपनी खुद की संस्था खड़ी की - 'लिविंग फार्म।' प्रारंभ में उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, लेकिन वह टस-से-मस नहीं हुआ। शांत और संयत रहकर उसने सभी कठिनाईयों का सामना किया।

उसको डॉ. देबल देव ने काफी मदद की। बड़ी तनख्वाह की नौकरी छोड़कर झोपड़ी में बगैर बिजली के रहने वाले देबल देव ने आदिवासियों द्वारा पैदा किये गए स्थानीय किस्मों की चावल की प्रजातियों को संरक्षित किया। दोनों ने आदिवासियों के वन अधिकार, अन्न सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य के कार्यों को प्राथमिकता दी और वह भी विकास के नाम पर बाहर से आक्रमण कर आपका सब कुछ छीनने वाली शासकीय योजनाओं के खिलाफ आदिवासियों को संगठित करके।

जरा सोचिये, कागजी मुद्रा का रत्तीभर भी आकर्षण न रखने वाला हमारा आदिवासी समाज और हर योजना को धन पर तोलने वाली शासकीय योजनाएं। अपना सब कुछ दांव पर लगाकर खून-पसीना एक कर खेत में पैदा किया हुआ गेहूँ या चावल आप सत्ता प्राप्ति के लिए एक और दो रूपये

किलो के भाव से वोट देने वालों को बांटते हो? अपने 'लिविंग फार्म' के माध्यम से देबजीत अपने किसानों को यही सीख देता रहा कि अपने आसपास अपने खुद के लिए पहले अनाज, दालें और सब्जियाँ पैदा करो, जंगल कटाई मत करो। जिस 'घूमंतू या झूम खेती' (शिफ्टिंग कल्टिवेशन) को हमारे आधुनिक कृषि विज्ञान ने नकारा है उसमें पैदा अनाज कितना पौष्टिक है यही देबजीत सबको बताता था।

देबजीत का सबसे बड़ा कार्य था, नकारी गई चारा फसलों को फिर से उगाना। दिल्ली में आयोजित कई सम्मेलनों में उसने आदिवासियों द्वारा इन चारा खाद्यान्नों के बनाए व्यंजन जनता को चखाए। कृषि विशेषज्ञ देवेन्दर शर्मा बताते हैं कि ऐसे ही एक सम्मेलन में ओडिशा की आदिवासी महिला लक्ष्मी मिडिक्का ने 1382 आदिवासी व्यंजनों के बारे में बताया, जिनमें मछली, केकड़े और कुछ पक्षी भी शामिल थे, लेकिन उनमें 112 ऐसे खाद्यान्न थे जिसकी आमतौर पर खेती ही नहीं होती।

'हमें आपकी अन्न सुरक्षा प्रणाली नहीं चाहिये' - ओडिशा के कटलीपडार गांव की मिनाती हुईका नाम की आदिवासी महिला गुस्से में कहती हैं। 'हमारे गांवों में राशन की दुकानें लगाकर आप लोग हमारा अनाज छीन रहे हो। हमारे पुरखों ने कितनी मेहनत से बचाकर रखे थे, ये अनाज। हमें विकास क्या होता है मत पढ़ाईये, कई बरसों से हमने हमारे पहाड़, जंगल, नदियाँ संभालकर रखी हैं।' देवेन्दर शर्मा बताते हैं कि उस महिला ने मुझे सियाली नाम की एक लंबी फली दिखाई। उसे सुखाकर, उबालकर वे लोग खाते हैं। उसकी डगाली से रस्सी बनती है, पत्तों के पत्तल बनाते हैं। कुसुम कोळी वृक्ष के पत्ते पशु खाते हैं, फल हम लोग खाते हैं और तना जलाऊ लकड़ी के काम आता है। उसके बीजों से तेल निकलता है, जो मच्छर भगाने और चर्म रोग के काम आता है।

ये सब काम शिद्दत से देबजीत करता था। 'तुम्हें ये सब स्वप्न जैसा नहीं लगता?' देवेन्दर ने पूछा तो देबजीत बोला - 'यहीं तो हम गलती करते हैं। ये समाज प्रकृति की गोद में पलता है। हमें उनसे काफी कुछ सीखना चाहिये। हम समाप्त हो जाएंगे पर वे नहीं।' कविता कुरघंटी बता रही थीं कि 'लिविंग फार्म' ने ओडिशा और छत्तीसगढ़ सरकारों को कई योजनाओं से प्रभावित किया है। देबजीत और उसकी पत्नी ज्योति अपने हाथों से ये आदिवासी खाद्यान्न दोनों राज्यों के वरिष्ठ अधिकारियों को खिला चुके हैं। देबजीत के कारण ही 'ओडिशा मिलेट मिशन' प्रारंभ हुआ। इन दोनों ने 'ग्रीन कॉलेज' प्रारंभ करने की भी सोची थी।

हमारे आज के स्कूल-कॉलेजों को देबजीत हिटलर के बनाए कांजीहाउस कहता था। स्थानीय संसाधनों से संदर्भित समस्याओं को सुलझाने हम 'ग्रीन कॉलेज' प्रारंभ कर रहे हैं जो स्वरोजगार सिखाएगा। कविता बताती है कि देबजीत शांत स्वभाव का था। सबकी सुन लेता था। न्यास के कामों में दखल नहीं देता था। दोनों पति-पत्नी और बेटी खुशी कम तनख्वाह में काम करते और बचे पैसे फिर न्यास को दे देते। मुनीगुडा में उनका निवास था। ज्योति उसके न्यास में पहले काम करती थी फिर दोनों ने शादी कर ली। देबजीत ने पुराने अदला-बदल (बार्टर) पद्धति को फिर से छोटे पैमाने पर शुरू किया था और वह भी पौष्टिक जैविक अन्न के प्रचार हेतु। किसी के लिए भी मृत्यु असहनीय है, मगर देबजीत काम करते-करते समाप्त हो गया। हमें उसी काम को आगे बढ़ाना होगा। (सप्रेस)

सीएमएचओ ने किया जिला अस्पताल के एसएनसीयू और न्यू बोर्न बेबी वार्ड का निरीक्षण

बैतूल। रविवार को सीएमएचओ ने जिला अस्पताल के एसएनसीयू का निरीक्षण किया। सीएमएचओ डॉ. रविकांत उईके ने यहां फायर सेफ्टी से जुड़ी व्यवस्थाएं देखी और आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। सीएमएचओ ने यहां फायर ऑडिट से जुड़े दस्तावेज भी देखे। दरअसल झांसी की घटना के बाद शासन ने निर्देश दिये है कि एसएनसीयू में खुले वायर्स और अन्य व्यवस्थाएं देखी जाए। अग्निशमन उपकरणों की फीलिंग समय अनुरूप हो। गौरतलब रहे कि झांसी के हॉस्पिटल में आग से बच्चों की मौत के बाद बैतूल में भी स्वास्थ्य प्रशासन अलर्ट हुआ है। इसी के तहत रविवार को सीएमएचओ ने जिला अस्पताल का निरीक्षण किया। न्यू बोर्न बेबी वार्ड के अलावा एसएनसीयू की व्यवस्थाएं देखी। वार्ड में लगी बिजली लाइनों के अलावा यहां उपयोग में आने वाले ऑक्सीजन सिलेंडर के रखरखाव, कनेक्शन के व्यवस्थित होने, न होने और वार्ड में आपातकालीन व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण में पता चला कि यहां हर 6 माह में रिफिलिंग हो रही है। फायर ऑडिट भी कराया जा रहा है, वायरिंग भी प्रॉपर मिली है।

धूमधाम से मनाई जाएगी भैरव जयंती

बैतूल। श्री सागौन वाले बाबा दरबार निराला समिति की बैठक रविवार को काल भैरव जयंती समारोह धूमधाम से मनाने को सागौन दरबार में संपन्न हुई। इस संबंध में समिति सदस्य अनिल कुबड़े ने बताया कि श्री बटुकनाथ काल भैरव जयंती समारोह 23 नवम्बर, शनिवार को धूमधाम से मनाई जाएगी। जिसमें अभिषेक, हवन-पूजन, श्रृंगार, के पश्चात शाम 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक प्रसादी वितरण किया जाएगा। इस कार्यक्रम के लिए सभी को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। समिति ने सभी से सहयोग और उपस्थित होने का आग्रह किया है।

गेहूं की फसल सूखने से किसान परेशान

किसानों ने की ट्रांसफार्मर लगाने की मांग, सहायक प्रबंधक को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। बयावाड़ी ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले ग्राम जगधर और ग्राम हथनोरा के किसानों ने ट्रांसफार्मर लगाने की मांग को लेकर बैतूल बाजार विद्युत कंपनी के सहायक प्रबंधक को ज्ञापन सौंपा। किसानों ने कहा कि लो वोल्टेज और बिजली की खराब स्थिति के कारण उनकी फसलें बर्बाद हो रही हैं। ग्रामीणों ने बताया कि सभी किसानों के पास स्थाई पंप कनेक्शन हैं, लेकिन लो वोल्टेज के चलते मोटर नहीं चल रहे हैं। बार-बार लाइन फॉल्ट होने से मोटरें जल जाती हैं, और एक फेज तो अक्सर बंद ही रहता है। किसानों ने बताया कि उन्होंने 4 से 20 दिन पहले गेहूं की बुवाई बिना पलेवा किए की थी। गीली मिट्टी में गेहूं का अंकुरण हो गया है, लेकिन सूखी मिट्टी में दाना अब तक नहीं उगा। पानी की कमी के चलते उगी फसल सूख रही है, और सूखे दानों को चींटियां नुकसान पहुंचा रही हैं। किसानों ने बताया कि वे अपनी समस्या की जानकारी मौखिक और लिखित रूप से कई बार बिजली विभाग को दे चुके हैं। बावजूद इसके, अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। बार-बार शिकायतों के बावजूद समाधान न होने से किसानों में आक्रोश बढ़ रहा है। उन्होंने तीन दिनों के भीतर नया या बड़ा ट्रांसफार्मर लगाने की मांग की है। किसानों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं होती हैं, तो वे चरणबद्ध आंदोलन करने को मजबूर होंगे। इसकी पूरी जिम्मेदारी विद्युत कंपनी की होगी। ज्ञापन देने वालों में सुनील पवार, विनोद टिकारे, सुरेश पवार, सतीश पवार, अखिलेश अहीर और देवदास फुलकर सहित अनेक किसान शामिल रहे।

बंद कमरे में महिला की संदिग्ध मृत्यु, पुलिस कर रही जांच

बैतूल। ग्राम सुहागपुर में एक महिला का शव घर के अंदर संदिग्ध अवस्था में मिला है। पुलिस को इसकी जानकारी तब मिली, जब पड़ोसियों ने घर से तेज बदबू आने की शिकायत की। पुलिस ने दरवाजा खोलकर देखा तो महिला मृत अवस्था में पड़ी थी। थाना प्रभारी अंजना दुबे के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा

लिया। बंद घर में महिला मृत पाई गई। शव में बदबू फैलने से अंदेशा है कि मृत्यु दो दिन पहले हुई होगी। महिला के शव की स्थिति को देखते हुए प्राथमिक जांच में हत्या की आशंका जताई जा रही है। हालांकि, अभी तक कोई स्पष्ट जानकारी सामने नहीं आई है। शव को पोस्टमार्ट्म के लिए बैतूल जिला चिकित्सालय भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का खुलासा हो सकेगा। पुलिस घटना की विस्तृत जांच में जुट गई है और संदिग्ध परिस्थितियों को खंगाल रही है। बैतूल बाजार थाना प्रभारी ने अंजना धुर्वे ने कहा कि घटना की हर पहलू से जांच की जा रही है। इलाके में सीसीटीवी कैमरों की जांच और आसपास के लोगों से पूछताछ की जा रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बैतूल बाजार में निकाला पथ संचलन

बैतूल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा रविवार को बैतूल बाजार नगर में पथ संचलन निकाला गया। नगर के बाजार चौक पर स्वयं सेवक व संघ के कार्यकर्ता एकत्र हुए। इस दौरान एक कतार में खडे होकर सभी ने अनुशासन का परिचय दिया और धर्म ध्वज फहराया। इसके बाद शहर के मुख्य मार्गों से पथ संचलन निकाला गया। कंधे पर डंडा रखकर कार्यकर्ता कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे। संचलन के दौरान आधा दर्जन कार्यकर्ता बैंड बाजों पर देशभक्ति धुन बजाकर चल रहे थे। सभी कार्यकर्ता फुलपेंट और सफेद शर्ट पहने थे।

हाट-बाजार में पर्याप्त जगह का अभाव, जिम्मेदार नहीं दे रहे ध्यान

कागजों में निर्णय, सड़क पर अव्यवस्था, परिणाम: जनता परेशान

संजय द्विवेदी, बैतूल। अस्त-व्यस्त पार्किंग, बेतरतीब खड़े दो-चार पहिया वाहन। ट्रैफिक के सारे नियम-कायदे ताक पर, इसके बीच जाम में फंसे आम लोग, यह हाल है शहर में लगने वाले साप्ताहिक बाजारों में, जहां हर सप्ताह बाजार में आम जनता परेशानियों से जूझते नजर आती है। आलम यह है कि आमलोग शहर के प्रमुख मार्गों के जाम और बेतरतीब पार्किंग के बीच खुद रास्ता निकालने को मजबूर हैं। इन सब के पीछे कारण यह है कि प्रशासन के जिम्मेदार अफसर समस्याओं पर ध्यान नहीं देते है। दरअसल शहर में मुख्य रूप से सदर, गंज और कमानी गेट कोठीबाजार में हाट बाजार संचालित होते है। तीनों बाजार सडक किनारे है। यहां पर्याप्त जगह और पार्किंग स्थल के अभाव में बाजार अव्यवस्थित नजर आते है। इन सब का खामियाजा आम जनता को परेशान होकर चुकाना पड़ता है। सबसे खराब स्थिति शाम के समय बनती है, जब बाजारों में ग्राहकों की भीड़ के बीच वाहन चालक रास्ता तलाशते हुए नजर आते है। खासबात यह है कि दुकानदार सडक किनारे जहां मन हुआ, वहीं अपनी दुकान जमा लेते है, जबकि लोग भी अपने वाहनों को कहीं भी पार्किंग कर देते है। इस अव्यवस्था से दुर्घटनाएं भी होती है। फिर भी न तो जनता जागरूक हो रही है और न ही प्रशासन ठोस कदम उठा रहा है।

लोग बोले, बाजार वाले दिन होना चाहिए नो-एंट्री- शहर की यातायात व्यवस्था वैसे ही बेपटरी है। यहां आम दिनों और साप्ताहिक बाजार वाले दिन सडक पर पल-पल जाम की स्थिति निर्मित हो जाती है। ऐसे में साप्ताहिक बाजार के वक्त यातायात व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त होकर रह जाती है। शहर के जागरूक नागरिकों का कहना है कि बाजार में पूरे दिन पुलिस की उपस्थिति न के बराबर रहती है। पुलिस का गश्त नहीं होने से रोड पर वाहन खड़ा करने वाले भी बेखौफ हो जाते हैं। इसका नतीजा है कि वाहन व्यवस्थित तरीके से गुजरने की बजाय लोडेड ट्रकों, ओवरलोड वाहन और नियमों का उल्लंघन करने वाले बेफिक्री से चलते है और शहर की ट्रैफिक व्यवस्था चरमरा जाती है। लोगों को घंटो तक जाम में फंसे रहना पड़ता है।

इसलिए भी बनी रहती है ट्रैफिक की समस्या- दरअसल शहर में पार्किंग जोन निर्धारित नहीं है। मुख्य बाजारों और व्यस्ततम क्षेत्रों में वाहनों को खड़ा करने के लिए पर्याप्त जगह या निश्चित स्थान नहीं होने से लोग सडक पर ही अपने वाहन खड़े कर देते है। इससे सड़क पूरी तरह संकरी हो जाती है। लोगों का कहना है कि मुख्य बाजार में वाहनों की पार्किंग के उचित इंतजाम नहीं है। इसी वजह से लोगों को मजबूरी में सडक पर अपने वाहन खड़े करना पड़ता है। लोगों का कहना है कि त्योहारी सीजन के दौरान तो बाजार में पांव रखने तक की जगह नहीं बचती। ऐसे में प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों को पार्किंग के लिए उचित जगह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने चाहिए, ताकि बाजार में खरीदारी करने के लिए आने वालों को दिक्कत न झेलनी पड़े।

हादसे का बना रहता है अंदेशा - सड़कों पर वाहनों की अघोषित पार्किंग के कारण हमेशा हादसों का खतरा बना रहता है। यातायात व्यवस्था बाधित होती है, वह अलग है। सडक पर वाहनों के खड़े रहने से चालकों को अपनी जान जोखिम में डालना पड़ रहा है। सबसे खासबात यह है कि गंज, सदर और कमानी गेट पर साप्ताहिक बाजार वाले दिन शाम के समय अक्सर जाम लगता है। हालांकि यहां पुलिस की तैनाती रहती है, किन्तु वाहनों की संख्या के सामने पुलिस भी नाकाम साबित होती है और बार-बार जाम लगता हे। जिससे लोगों में नाराजगी है। लोगों का कहना है कि व्यवस्था को सुधारने के लिए नगरपालिका और पुलिस विभाग के पास कोई ठोस प्लान नहीं है। यदि विभागों द्वारा ट्रॉफिक को लेकर संयुक्त रूप से कार्य किया जाये तो काफी हद तक वाहनों की पार्किंग की समस्या का समाधान हो सकता है।

दस साल में 556 से 1400 हो गई सब्जी व्यापारी की संख्या

नगरपालिका क्षेत्र में पिछले दस सालों में सब्जी व्यापारियों की संख्या तीन गुना तक बढ़ गई है। दस साल पहले नगरपालिका के रिकॉर्ड में 556 सब्जी व्यापारियों की संख्या दर्ज थी, जो दस साल के अंदर 1400 तक पहुंच गई है। सबसे ज्यादा संख्या वर्ष 2020 में बढ़ी, जब कोरोना काल में कई अन्य पेशों में नौकरियां जाने के बाद बड़ी संख्या में बेरोजगार हुए लोग सब्जी के कारोबार में कूद पड़े। लेकिन सुविधाओं में इजाफा नहीं हुआ। वर्षों से जो साप्ताहिक बाजार जिन स्थानों पर संचालित हो रहे है, वहीं अभी भी बाजार लग रहे है, जहां पर्याप्त जगह नहीं मिलने के कारण सब्जी विक्रेता अपनी दुकानें सडक से सटकर लगाते है। जिससे यातायात तो प्रभावित होता ही है, साथ ही दुर्घटनाओं की संभावनाएं भी बनी रहती है।

इनका कहना है

साप्ताहिक बाजारों में चूने की लाइनिंग एवं पार्किंग के नियमों का पालन करवाने का प्रयास किया जायेगा। इसके लिए नपा के राजस्व अमले को पेट्रोलिंग करने के निर्देश दिये जायेगे, चूकि नपा के राजस्व अमले में स्टाफ की कमी है, इसलिए दिक्कत जाती है। फिर भी ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर उचित व्यवस्था बनाने के लिए प्लानिंग की जाएगी।

- सतीश मटसेनिया,
सीएमओ, नगरपालिका आमला

साप्ताहिक बाजारों में जिन स्थानों पर जाम की समस्या है, वहां पाइंट बनाकर ट्रैफिक टीम को विशेष निर्देश दिये गये है। अभी कोठीबाजार में कमानी गेट, गांधी स्तंभ तथा सदर बाजार में महाजन ट्रेडर्स तिगड्डा और गेंद चौक पर पाइंट बनाया गया है। इसके अलावा मोटर साइकिल पार्टी, बाजारों में पेट्रोलिंग करके लोगों को समझाइश देती है। हमारे द्वारा नगरपालिका को बोलकर व्यस्ततम क्षेत्रों में नो-एंट्री के दो बोर्ड भी लगवाये है और बाकी स्थानों पर भी बोर्ड लगाये जाने के लिए कहा गया है। बाजारों में नपा के राजस्व अमले को भी पेट्रोलिंग करना चाहिए।

- गजेन्द्र केन, यातायात प्रभारी, बैतूल

पूज्य सिंधी पंचायत ने धूमधाम से मनाई गुरु नानक जयंती

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत द्वारा गुरु नानक देव जी का 555 वां प्रकाश पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया। गुरु नानक जयंती के उपलक्ष में सिंधी समाज द्वारा धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। समाज के लोगों के द्वारा 3 नवंबर से अखंड पाठ प्रारंभ किया था एवं प्रतिदिन धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शुक्रवार को पाठ साहब की समाप्ति एवं तत्पश्चात सैंकड़ों लंगर का आयोजन किया गया साथ ही सिंधी समाज द्वारा प्रतिदिन प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम समाप्ति पर ब्लड डोनेशन कैंप का भी आयोजन किया गया था जिसमें 100 से ज्यादा यूनिट रक्तदान समाज के लोगों द्वारा किया गया। पूज्य सिंधी पंचायत द्वारा इस आयोजन जनप्रतिधियों और श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की गई।

विशेषज्ञों ने कानूनी सहायता के विकल्पों की दी जानकारी

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस के अवसर पर एसआईएफ बैतूल द्वारा एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। एसआईएफ बैतूल के प्रभारी डॉ. संदीप गोहे ने बताया कि लगातार तीसरे वर्ष आयोजित हो रहे कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में पुरुषों के योगदान को मान्यता देना और झूठे मामलों में फंसे पुरुषों और उनके परिवारों को मानसिक व कानूनी सहायता प्रदान करना है। डॉ. संदीप गोहे ने बताया कि एसआईएफ एक समर्पित स्वयंसेवी संस्था है, जो उन पुरुषों की सहायता करता है जिन्हें झूठे आरोपों का सामना कर रहे हैं। विशेषज्ञों ने झूठे आरोपों के प्रभाव, उनसे निपटने के तरीके और कानूनी सहायता के विकल्पों पर जानकारी साझा की। इसके साथ ही, पीड़ित पुरुषों और उनके परिवारों की आपबीती और अनुभव भी कार्यक्रम में प्रस्तुत किए, जिससे समाज में जागरूकता बढ़ेगी। कार्यक्रम के दौरान डॉ. संदीप गोहे ने झूठे आरोपों से जूझ रहे पुरुषों और उनके परिवारों की मदद के लिए स्वयंसेवी संस्था की सेवाओं और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अतिथि बतौर मीरा एंथोनी, श्रीपाद विष्णु निरगुडकर, डॉ. संदीप बर्डे, डॉ. रश्मि बर्डे मौजूद रहे। उन्होंने कार्यक्रम की सफलता में अपना योगदान दिया और पुरुषों के अधिकारों और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर चर्चा की। इस अवसर पर एसआईएफ बैतूल के सदस्य चंद्रप्रकाश झारे, विजय साहू, रूपेश पवार, संचित सोनी, अजय वरवड़े, राजेश उपराले और राकेश साबले भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. भारती गोहे ने किया।

कांतिशिवा में जंगल सत्याग्रह फिल्म का प्रीमियर शो दिखाया

बैतूल/शाहपुर। जिले के आदिवासी अंचल में बनाई गई फिल्म जंगल सत्याग्रह जो गंजन सिंह, विष्णु सिंह, मोकम सिंह, आदि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अच्छे कार्य और उनके जीवन में स्वतंत्रता के लिए कैसी-कैसी लड़ाई अंग्रेजों से लड़नी पड़ी। इस फिल्म का आज 17 नवंबर रविवार बैतूल जिले में स्थित कांति शिवा टॉकीज में दिखाइ गई। इस फिल्म को दिखाने का मुख्य मकसद इस फिल्म में कार्य करने वाले आर्टिस्ट और कलाकारों ने देखा। फिल्म के निर्माता निर्देशक प्रदीप उईके ने बताया कि आज कलाकारों को फिल्म दिखाकर उन्होंने कलाकारों से फीडबैक भी लिया। उन्होंने जल जंगल जमीन पर यह फिल्म बनाई है। फिल्म में स्थानीय कलाकार हैं। जिनको कभी बड़े पर्दे पर कार्य करने

का जीवन में मौका नहीं मिलता। ऐसे सुंदर ग्रामीण कलाकारों के दम पर यह फिल्म बनाई गई है। यह फिल्म रियल जगह पर सूट की गई है। सभी आर्टिस्ट और कलाकारों ने इस फिल्म को बहुत सराहा और प्रशंसा की। फिल्म का शो पूरी तरह खचाखच भरा हुआ था। दूर-दूर से वरिष्ठ इस फिल्म को देखने बैतूल पहुंचे। फिल्म के मुख्य कलाकार में मोकम सिंह की भूमिका में शिवा बारस्कर, मनकी की भूमिका में रिया जगताप, कोवा की भूमिका में पंकज भट्टाचार्य है।

महिला ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

बैतूल। एक महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। महिला डिप्रेशन का शिकार थी। आशंका है कि इसी वजह से महिला ने फांसी लगा ली। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ममता पति सुनील पांडे (43) निवासी कोसमी थाना कोतवाली ने जानवरों के कोठे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। रविवार सुबह जब परिजन कोठे में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि सुनीता का शव कोठे में फांसी के फंदे से लटका हुआ है, जिसके बाद परिजनों ने इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी। पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शव को फांसी के फंदे से नीचे उतर कर पंचनामा करने के बाद शव जिला अस्पताल लाया। जहां पर पोस्टमार्टम करने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। घटना की जांच की जा रही है। जांच अधिकारी उप निरीक्षक जगदीश नवरे ने बताया कि महिला को पिछले दो साल से सिर में दर्द बना रहता था। आर्थिक कारणों से भी वह परेशान रहती थी। फिलहाल पुलिस ने पीएम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया और मामले की जांच कर रही है।

विभिन्न गतिविधियों के साथ बच्चों का बढ़ाया जायेगा कौशल

कक्षा 6 से 8 तक के स्कूलों में माह में एक शनिवार को होगा बैगलेस-डे

बैतूल। कक्षा-6 से 8 तक पढ़ने वाले बच्चों का अब माह में कम से कम एक दिन शनिवार को बैगलेस-डे होगा। स्कूल शिक्षा विभाग ने बच्चों के समग्र विकास हो, इसके लिये बैगलेस-डे के दिन बच्चों को विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने का निर्णय लिया है। इस दिन बच्चों के बीच पढाई के अलावा विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं व्यावहारिक गतिविधियों की जायेंगी। राज्य शिक्षा केन्द्र ने जिला शिक्षा अधिकारियों और जिला परियोजना समन्वयक को निर्देश जारी किये हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में यह प्रावधान रखा गया है कि स्कूल में पढने वाले बच्चे 21वीं सदी के कौशल से परिचित हो सकें, इसके लिये कक्षा-6 से 8 तक के स्कूल के बच्चों के लिये प्रत्येक माह में न्यूनतम एक शनिवार को बस्ते-विहीन दिवस का आयोजन हो। इन दिवसों में विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल की जानकारी दी जाये।

बैगलेस-डे के लिये शाला के प्राचार्य एवं शिक्षकों को चर्चा कर गतिविधियों का कैलेंडर तैयार करने के लिये भी कहा गया है। गतिविधियों की जानकारी एचडी जिओ टैगी फोटोग्राफ राज्य शिक्षा केन्द्र के ईमेल पर भेजने के लिये कहा गया है। बैगलेस-डे का उद्देश्य विद्यार्थियों को सफल, नवाचारी और जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करना है। इसी के साथ विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, साक्ष्य आधारित सोच और रचनात्मकता का विकास करना है। विद्यार्थियों में संवाद, विचार अभिव्यक्ति, स्वास्थ्य एवं पोषण, खेल सहयोग की भावना एवं नेतृत्व गुण के साथ भारतीय ज्ञान परम्परा और पर्यावरणीय चेतना का विकास करना प्रमुख है।

बैगलेस-डे के दिन यह करेंगे बच्चे

राज्य शिक्षा केन्द्र ने बैगलेस-डे में होने वाली गतिविधियों के संबंध में भी दिशा-निर्देश जारी किये हैं। ऑर्ट और क्राफ्ट में बच्चों के बीच में ड्राइंग, पेंटिंग, मिट्टी के खिलौनों का निर्माण, मुखौटे, डॉल-मेकिंग और अनुपयोगी सामग्री से वस्तुओं का निर्माण प्रमुख है। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में बच्चों के बीच लोकगीत-नृत्य, लघु नाटिका, कविता पाठ, कहानी लेखन गतिविधियाँ की जायें। बच्चों को खेती की आधुनिक पद्धतियों की जानकारी हो सके, इसके लिये पॉली फार्मिंग, ऑर्गेनिक फार्मिंग, औषधीय पौधों की जानकारियां और खेती में उपयोग होने वाले आधुनिक उपकरणों की जानकारी दी जाये।

बच्चों को दी जाएगी ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी

शिक्षा विभाग के आदेशानुसार बैगलेस-डे वाले दिन बच्चों को स्थल भ्रमण भी कराने के लिए कहा है। बच्चों को ऐतिहासिक स्थलों, लघु उद्योग व्यवसाय, जिनमें मधुमक्खी-पालन, मुर्गी एवं मछली-पालन इत्यादि की जानकारी दी जाये। बच्चों को स्थानीय बैंक, पुलिस थाना, अस्पताल और अनाज मंडी का भ्रमण कराया जाये। बच्चों को हथकरघा, खिलौने निर्माण जैसी इकाइयों का भ्रमण कराया जाये। इसी के साथ बच्चों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण की जानकारी देने के साथ खेल गतिविधियां भी करायी जायें।

छात्र गुलरेज ने भोपाल में किया हॉकी का उत्कृष्ट प्रदर्शन

सुबह सवेरे सोहागपुर। डाक्टर अरविंद सिंह चौहान खेल अकादमी एवं विवेकानंद पब्लिक स्कूल के छात्र कक्षा 9वीं के छात्र गुलरेज खान पिता खलील खान ने राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता में पूरे मध्य प्रदेश में थर्डरैंक प्राप्त की है। नवोदित हांकी खिलाड़ी गुलरेज खान ने 15 नवंबर तक भोपाल में आयोजित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके सराहना बटोरी है। इस उपलब्धि पर विवेकानंद पब्लिक स्कूल के संचालक अनिल गहरैया , ब्लॉक कीड़ा अधिकारी हेमराज सिंह नागा , खेल प्रशिक्षक अश्विनी सरोज ,आशु राय ,अधिवक्ता अख्तर खान, शिक्षक शिक्षिकाओं , सहपाठियों ,मित्रों आदि ने बधाईयां दी हैं । उल्लेखनीय है कि गुलरेज खान के बड़े भाई अल्ताफ खान भी राष्ट्रीय हॉकी प्लेयर हैं।

मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व विकास पाठ्यक्रम के दौरान निरीक्षण

सुबह सवेरे सोहागपुर। मप्र जन अभियान परिषद सोहागपुर कार्यालय में प्रति रविवार को नियमित चलने वाली कक्षा 'मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृव क्षमता विकास पाठ्यक्रम' के संचालन के दौरान जिला समन्वयक पवन सहगल ने आकस्मिक निरीक्षण किया गया। श्री

सहगल ने निरीक्षण के उपरांत छात्रों को आसाईमेट की विस्तृत जानकारी दी। वहीं आपने नवांकुर ,मेंटरो की बैठक की समीक्षा की । अंत में आपने सभी से आदर्श ग्राम पर चर्चा भी की । इस अवसर पर विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले, मेंटर गजेंद्र ठाकुर, श्याम सिंह मीना, मेहरवान सिह, सचिन विश्वकर्मा, मंजु पंवार, नवांकुर संस्था से पुष्पेंद्र व्यास, साहिल , संदेश मिश्रा, कमल किरार, सुजल वेलवंशी, नरेंद्र आदि उपस्थित थे।

श्रमदान से स्वच्छता का संदेश

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने जिले की सभी निकायों में स्वच्छता अभियान में आमजनों की सहभागिता पर बल देते स्वच्छता संबंधी कार्यों को अधिक से अधिक संपन्न कराने हेतु निकाय अधिकारी को निर्देश दिए हैं कलेक्टर श्री सिंह ने सभी एसडीएम को भी हर रोज प्रातः है निकाय के वार्डों में भ्रमण कर साफ सफाई कार्यो का जायजा लेकर अधिक से अधिक कार्यों में सहभागिता दर्ज कराने के निर्देशों के अनुपालन में आज बासौदा एसडीएम से विजय राय के नेतृत्व में प्रातः 08रू00 बजे से गंजबासौदा में चल रहे छब्ब् कैंप के प्रतिभागियों के साथ स्थानीय प्रशासन , नगर पालिका परिषद, ग्राम पंचायत के अमले के साथ गंज स्थित बेतवा रिपटा घाट पर स्वच्छता अभियान के तहत श्रमदान का आयोजन किया गया तथा लोगों को नदियों को स्वच्छ रखने एवं गंदगी ना करने के प्रति जागरूक किया गया है।

राजस्व महा अभियान का तीसरा चरण शुरू हुआ

विदिशा (निप्र)। प्रदेशव्यापी राजस्व महा अभियान 3.0 आज 15 नवंबर से शुरू हुआ एक माह तक चलने वाले इस महा अभियान के तहत राजस्व से संबंधित तमाम कार्यों का संपादन किया जाएगा। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने जिले के समस्त राजस्व अधिकारियों व अमले को निर्देशित किया है कि राजस्व संबंधी तमाम समस्याओं का समाधान उक्त महा अभियान की अवधि के दौरान शत् प्रतिशत पूर्ण कर लिया जाए । उन्होंने कहा कि आम जनों की राजस्व संबंधी समस्याएं लंबित ना रहे का विशेष ध्यान रखते हुए चरणबद्ध तरीकों से अभियान के उद्देश्यों की प्राप्ति करें। इसी कड़ी के तहत आज जिले के सभी अनुविभागीय क्षेत्रों में एक साथ संपादित किए गए कार्यों की जानकारी देते हुए अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर ने बताया कि वृहद स्तर पर आज बी वन का वाचन किया गया है। उक्त कार्य के दौरान आम जनों को उनकी भूमि संबंधी जानकारी सुगमता से प्राप्त हुई है।

लकड़ी औजार,तीर कमान से अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाले बिरसा मुंडा की जयंती आदिवासी ग्राम छेड़का में मनी

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। आदिवासी ग्राम छेड़का में लकड़ी, औजार, तीर कमान से अंग्रजों एवं अंग्रेजी सरकार के छक्के छुड़ाने वाले बिरसा मुंडा की जयंती मुकेश टेकाम, राजेन्द्र उइके,श्री हरिओम, समाजसेवी गणेश अहिरवार, कैलाश चंद खुराना आदि के आतिथ्य में संपन्न हुई। इस अवसर पर अतिथियों ने आदिवासियों के सिरमौर बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र,साहस आदि पर विस्तृत उद्बोधन देकर उनके पद पर चलने का आव्हान किया। इस अवसर पर भारी संख्या में जन-समुदाय उपस्थित था। उक्त आश्य की जानकारी इस प्रतिनिधि को समाजसेवी गणेश अहिरवार ने दी। इसी संदर्भ में विगत दिवस कामती रंगपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सेमरी हरचंद इकाई ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने कहा कि समाज को शिक्षित संस्कारित बनाने में सभी को अपनी अहम भूमिका चाहिए। विसंगतियों ,कुरुनीतियों से ऊपर

उठकर समाज उत्थान ,देश, एवं भारत माता के लिए कार्य करने की महती आवश्यकता है। हम सबको मिलकर नवीन आदर्शों को प्रस्तुत करके आदिवासी समाज के महानायको के पदचिन्हों पर चलना चाहिए।

इसी अवसर पर वनांचल में रहने वाले आदिवासी जनजाति के विघार्थियों आदिवासियों महिलाओं एवं नागरिकों समाजिक , कलात्मक ,रचनात्मक संस्कृति को प्रस्तुत करते हुए सहभागिता निभाकर समाज की परंपराएं रीति नीति का वर्णन किया। कार्यक्रम का संचालन गीतांजलिसिंह चौहान ने किया । इस अवसर पर अभाविप के मृदुल चौहान,पूर्व आर्मी ऑफिसर नीमचंद पटेल , यशवंत दुबे ,कन्हैया पटेल,राजकुमार पटेल, छात्रावास अधीक्षका मनोरम प्रजापति, छात्रावास अधीक्षक लखन पटेल, ग्राम सरपंच अहिल्याबाई, सचिव हरिराम मौर्य, जगदीश कसेरा सोहागपुर, छात्र,छात्राएं शिक्षक, शिक्षिकाएं, ग्रामवासी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

तीन पुलिस थानों की सीमा कैलादेवी चौराहा बन रहा अपराधों का अड्डा

देवास/मोहन वर्मा। यों तो देवास में नवागत पुलिस अधीक्षक पुनीत गेहलोद के आने के बाद से अपराधों पर पुलिस की सख्ती शुरू हो गई है। जुए सट्टे के अड्डों पर छापामारी, साइबर क्राइम की ठगी के शिकार हुए लोगों को राहत के साथ अपराध होने के चंद घंटों में ही अपराधों का खुलासा पुलिस कप्तान की उपलब्धि कही जा सकती है मगर कुछ क्षेत्र आज भी पुलिस के लिए चुनौती बने हुए है और कैला देवी चौराहा उनमें से एक है ।

शहर का सबसे व्यस्त क्षेत्र कैलादेवी चौराहा- आज के समय में अपराधों का बड़ा अड्डा बनता जा रहा है । इस चौराहे पर तीन थाना क्षेत्र की सीमाएं है। कैलादेवी चौराहे से लगा हुआ जवाहर नगर थाना कोतवाली से, राज टावर, गोमती नगर औद्योगिक थाना से और सामने मंदिर की तरफ जाने वाला एरिया सिविल लाइन थाने से जुड़े हैं।

बाबजूद इसके कई घनी बस्तियों से,कालोनियों और झुग्गी बस्तियों से जुड़े इस चौराहे पर खुलेआम सब कुछ देखा जा सकता हैं। खुलेआम शराबखोरी और हर तरह का नशा करते लोगों से आबाद चौराहे पर आए दिन मारपीट आम बात है। बहुत पुरानी बात नहीं है जब यहां दिन दहाड़े हत्या तक हुई है।

इस चौराहे पर शराब दुकान,अहाते पर हर समय भीड़ और लोगों को सड़क पर ही पीते देखा जा सकता है। जबरदस्त अनियंत्रित ट्रैफिक के कारण वाहनों को हर समय गुत्थमगुत्थ होते देखा जा सकता है और विवाद करते वाहन चालकों को भी। इस चौराहे पर रोड जाम करते मैजिक, रिक्शा और प्रायवेट बस चालकों की दादागिरी भी देखी जा सकती है। यों तो नाम के लिए चौराहे पर पुलिस चौकी भी है मगर अधिकांश समय वहां कोई नहीं होता। सबकुछ भगवान भरोसे।

अपराधों के लिए मशहूर होता जा रहा कैलादेवी- चौराहा और आसपास के रहवासी शान्तिप्रिय नागरिक चाहते हैं कि जिम्मेदार यहाँ की गतिविधियों पर गहरी नजर रखें। चौराहे पर खुलेआम होने वाली शराबखोरी और नशे के फलते फूलते कारोबार पर अंकुश लगाएं। अनियंत्रित ट्रैफ़िक और बढ़ती गुण्डागर्दी की रोकथाम के लिये चौकी पर एकाधिक जवान तैनात किए जाएँ और आये दिन अकस्मात गश्त की व्यवस्था हो जिससे अपराधियों में पुलिस का कुछ खौफ नजर आए और आसपास के रहवासी राहत की साँस ले सकें। नवागत पुलिस कप्तान और सम्बंधित थाना प्रभारियों से भी उम्मीद है कि अपराधों के अड्डे बनते कैलादेवी चौराहे को अपराध मुक्त करने की दिशा में त्वरित कार्यवाही करते हुए नागरिकों को राहत दें।

'ऑपरेशन प्रहार' में दूसरे दिन 48 घंटे में 26 स्थानों पर दबिश देकर कुल 350 किलोग्राम मादक पदार्थ कीमत 34 लाख जब्त कर 9 आरोपियों को किया गिरफ्तार

देवास । पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोद के द्वारा 'ऑपरेशन प्रहार' की शुरुआत की गई , जिसके तहत लंबे समय से मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त कुख्यात अपराधियों की जानकारी प्राप्त कर दिनांक 15 नवंबर से लगातार प्रभावी कार्यवाही की जा रही है ।

इसी तारतम्य में दिनांक 16 नवंबर को थाना उदयनगर पुलिस को मुखबिर सूचना और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर ग्राम मगरादेह में गाँजे की वृहद् स्तर पर अवैध खेती किए जाने की सूचना प्राप्त हुई थी । जिस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण श्री आकाश भूरिया द्वारा एसडीओपी कन्नौद श्री केतन अदलक एवं थाना प्रभारी उदयनगर श्री बीडी बीरा के नेतृत्व में टीम बनाई गई तथा सुनियोजित प्लानिंग और पुख्ता सूचना के आधार पर बताये गये स्थान पर दबिश दी गई ।

पुलिस कार्यवाही में आरोपी रामा पिता रूमाल कन्नौज एवं चमन पिता रूमाल कन्नौज निवासी मगरादेह के खेत से गाँजे के क़रीब 100 पौधे ज़ब्त किए गए जिनका वज़न क़रीब 246 किलोग्राम एवं क़ीमत क़रीब 24 लाख 60 हजार है ।

उल्लेखनीय है कि मादक पदार्थों के विरुद्ध जारी प्रदेश स्तरीय अभियान में देवास पुलिस

की यह दो दिन में लगातार दूसरी बड़ी कार्यवाही है । इससे पूर्व दिनांक 15 नवंबर को देवास पुलिस द्वारा 12 घंटे के भीतर 25 स्थानों पर 200 पुलिसकर्मीयों की एक साथ दबिश देकर 10 लाख रुपये का 104 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ- गाँजा ज़ब्त कर 7 कुख्यात तस्करों को गिरफ़्तार किया था ।

इस प्रकार देवास पुलिस द्वारा विगत 48 घंटे के भीतर 26 स्थानों पर दबिश देकर अब तक कुल 350 किलोग्राम गाँजा क़ीमती 34 लाख रुपये ज़ब्त करते हुवे कुल 9 आरोपियों को गिरफ़्तार किया जा चुका है

पुलिस कप्तान ने बताया कि उक्त दोनों आरोपियों की पुलिस रिमांड न्यायालय से प्राप्त की जा रही है और मादक पदार्थ तस्करी के फॉरवर्ड एवं बैकवर्ड लिंकेज पता किए जाएँगे ताकि मादक पदार्थ को ख़रीदने वाले,बेचने वाले,ट्रांसपोर्ट करने वाले एवं सेवन करने वाले सभी अपराधियों को चिन्हित कर उनके विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही की जा सके देवास पुलिस का मादक पदार्थों के विरुद्ध 'ऑपरेशन प्रहार' आगामी दिनों में भी जारी रहेगा ।

समाज को सफलताओं के साथ ही कमजोरियों पर भी मनन करना चाहिए : प्रहलाद सिंह पटेल

भोपाल के मानस भवन में संपन्न हुआ लोधी महासभा का प्रदेश अधिवेशन

भोपाल। लोधी लोधा लोध क्षत्रिय महासभा के प्रांतीय अधिवेशन को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए मध्य प्रदेश सरकार के श्रम एवं पंचायत ग्रामीण कैबिनेट मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि लोधी समाज को सफलताओं के साथ ही कमजोरियों पर भी मनन करने की जरूरत है। समाज को इतिहास के बारे में ईमानदारी से जानकारी प्राप्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि संगठन की ताकत संख्या में नहीं विश्वास में होती है विश्वास से सामर्थ्य आती है और संगठन आगे बढ़ता है। संगठन के पदाधिकारी पहले स्वयं अपने आप का मूल्यांकन करें और सेवा समर्पण की भावना के साथ कार्य करें।

समाज का सम्मेलन भोपाल के मानस भवन में आयोजित किया गया। श्री पटेल ने कहा कि साल भर में लोधी समाज के पांच महापुरुषों के नाम पर कार्यक्रम होना जरूरी है। उनके स्थान एवं दिनांक तय रहना चाहिए। लोधी समाज को अनुशासन का पालन करते हुए मृत्युभोज, नशाखोरी जैसी बुराइयों से दूर रहने की जरूरत है।

लोधी समाज के प्रांतीय अधिवेशन की शुरुआत दीप प्रज्वलित कर राष्ट्रीय गान के साथ हुई। अधिवेशन के बाद प्रदेश स्तरीय बैठक आयोजित की गई, जिसमें महासभा का आगे का एजेंडा तय किया गया। अधिवेशन में स्वागत भाषण देते हुए लोधी समाज के प्रदेश अध्यक्ष एवं आयोजन पूर्व मंत्री जालम सिंह पटेल ने कहा कि समाज की जातिगत जनगणना होना बहुत जरूरी है। सभी पदाधिकारियों को उन्होंने हिदायत दी कि समय सीमा के अंदर अधिवेशन में तय किए गए एजेंडे पर काम होना बहुत जरूरी है। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव का वीरांगना रानी अवंती बाई के नाम पर सागर विश्वविद्यालय का नाम रखने, मध्य प्रदेश की पाठ्य पुस्तक में पाठ शामिल करने एवं रानी अवंती लोक उनकी जन्मस्थली मनखेड़ी में 100 करोड़ से बनाने की घोषणा पर लोधी समाज की तरफ से उनका आभार माना।

दबंगों के अतिक्रमण से मुक्त कराई गई भूमि पशु निस्तारण हेतु चिह्नित

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में राजस्व अधिकारियों द्वारा जिले में विभिन्न प्रकार की शासकीय भूमियों अतिक्रमण हटाने के कार्यो को मुर्तरूप दिया जा रहा है। इसी कड़ी के तहत बासौदा एसडीएम श्री विजय राय के द्वारा सड़कों परा बैठने वाले पशुधन को सुरक्षित आसरा देकर नवाचार किया है। उन्होंने बताया कि तहसील बासौदा ग्राम अंबानगर स्थित शासकीय भूमि सर्वे नंबर 197 रकबा 1.003 हे0 पर दबंगों द्वारा अतिक्रमण किया गया था और भूमि पर फसल बोकर कब्जा किया गया था।जिसे विमुक्त कराई गई थी। पर वर्तमान में भूमि पर चने की फसल बोने की तैयारी की जा रही थी। उक्त भूमि को अंबानगर चैराहे पर बैठने वाले गौवंशों के लिये सुरक्षित रखे जाने के प्रस्ताव पर प्रशासन द्वारा नियमानुसार तहसील स्तरीय दल द्वारा सूचना पत्र जारी कर जरीब द्वारा सीमांकन किया गया और चूने से मार्किंग की गई तथा मेढिया कृषकों को शासकीय भूमि सर्वे नंबर 197 रकबा 1.003 हे0 की सीमायें समझाई गई एवं तार फेंसिंग कर चीरे गढवाये गये। ग्राम अंबानगर स्थित भूमि सर्वे नंबर 197 रकबा 1.003 हे0 शासकीय भूमि सुरक्षित होने से चैराहे पर जो गौवंश बैठते हैं उन्हें अस्थाई गौशाला मिल गई और गौवंशों के रोड पर बैठने से दुर्घटना में घायल होने से गौवंशों को राहत मिलेगी एवं बरसात, सर्दी से बचा जा सकेगा। अस्थाई गौशाला होने से पशुओं को भूसा एवं पानी की व्यवस्था भी पंचायत द्वारा की जायेगी। ग्राम अंबानगर स्थित भूमि सर्वे नंबर 197 रकबा 1.003 हे0 भूमि को चूने से मार्किंग एवं चीरे गढाये गये यह भूमि ग्राम पंचायत को सुपुर्दगी में दी गई है।

एसडीएम की स्कॉर्पियो और बारातियों से भरी गाड़ी में टक्कर, दुर्घटना में 2 लोगों की मौत, 5 घायल

खरगोन (नप्र)। मध्य प्रदेश के खरगोन में एक भयानक सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई और पांच अन्य घायल हो गए। यह घटना जवाहर मार्ग पर पीडब्ल्यूडी ऑफिस के पास हुई। हादसे में एक वाहन और बड़वानी जिले के सेंधवा के एसडीएम की स्कॉर्पियो आमने-सामने टकरा गई। वाहन में सवार लोग खरगोन जिले के डालकी से बुरहानपुर बारात लेकर जा रहे थे।

मृतकों की पहचान रामलाल प्रजापत (50) और उनके रिश्तेदार शोभाराम प्रजापत (50) के रूप में हुई है। हादसे में घायल हुए पांच लोगों को खरगोन के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों में सेंधवा एसडीएम का ड्राइवर सादिक भी शामिल है। सादिक खंडवा से गाड़ी की सर्विसिंग करवा कर सेंधवा वापस लौट रहा था।

एसडीएम के ड्राइवर को आई चोट: पुलिस सूत्रों के मुताबिक हादसे में सेंधवा एसडीएम के ड्राइवर सादिक के हाथ और पैर में चोट आई है। फिलहाल उसकी हालत ठीक नहीं है और वह बयान देने की स्थिति में नहीं है।

सेंधवा के एसडीएम का कहना: इस बीच सेंधवा के एसडीएम आशीष ने सफाई देते हुए कहा है कि हादसे का शिकार हुई गाड़ी प्रशासन द्वारा अधिग्रहित थी। इस गाड़ी का ड्राइवर सादिक था। उन्होंने कहा कि सादिक खंडवा से गाड़ी की सर्विसिंग करवा कर अकेले सेंधवा लौट रहा था।

गाड़ी में सवार थे 6 लोग: वहीं हादसे में घायल हुए जगदीश प्रजापत ने बताया कि वह लोग बुरहानपुर शादी में जा रहे थे। बारातियों के तीन वाहन थे।

यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री के पास निगम फेंक रहा था कचरा

आदमपुर खंती की बजाय तालाब में डाला; एसडीएम ने की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल से निकलने वाले जिस कचरे को आदमपुर खंती में फेंका जाना था। वह नगर निगम के कर्मचारी यूनियन कार्बाइड कारखाने से कुछ ही दूर ब्लू मून कॉलोनी में बने तालाब में डाल रहे थे। गोविंदपुरा एसडीएम रवीश कुमार श्रीवास्तव की जांच में यह सामने आया। इसके बाद एसडीएम ने कचरे को निकलवाना शुरू किया है।

तालाब में कचरा फेंके जाने से तालाब का अस्तित्व तो खत्म हो ही रहा है, साथ में आसपास के इलाका का भू-जल भी प्रदूषित हो रहा है। गैस कांड के बाद से प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित होने के बावजूद इस तालाब को लगातार कचरा-मलबा डालकर खत्म किया जा रहा है। 5.82 एकड़ में फैले इस जहरीले तालाब में दिनों दिन कचरा और गंदगी जमा हो रही है। आलम यह है कि कचरा डंप होने से इस तालाब का अधिकांश हिस्सा मैदान में तब्दील हो चुका है। जिससे तालाब पर अतिक्रमण भी हो रहा है।

एसडीएम की जांच के दौरान ही कचरा डंप हुआ

इस मामले में एसडीएम श्रीवास्तव शनिवार को जांच करने के लिए मौके पर पहुंचे। उनके सामने ही नगर निगम के कर्मचारी कचरे को डंप करते हुए नजर आए। जिस पर एसडीएम ने नाराजगी जताई। इस बारे में उन्होंने निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायण यादव से भी बात की।

8 डंपर कचरा निकाला, आज भी सफाई होगी

एसडीएम श्रीवास्तव ने बताया, शनिवार को तालाब से 8 डंपर कचरा निकाला जा चुका है। रविवार को भी सफाई कराएंगे। दो से तीन दिन में पूरे तालाब की सफाई करा दी जाएगी। वहीं, कचरा फेंकने से रोका जा रहा है।

14 साल इसी जगह फेंका गया था जहरीला कचरा: यूनियन कार्बाइड कारखाने के संचालन के दौरान 1970 से लेकर 1984 तक लगातार हजारों टन मिथाइल आइसोसाइनेट फैक्ट्री का कचरा इसमें फेंका गया था। गैस त्रासदी के बाद यह तालाब जहरीला घोषित हो गया और इस तालाब के आसपास लोगों का जाना तक प्रतिबंधित कर दिया गया था, लेकिन मौजूदा स्थिति में यहां लोग तालाब के अंदर तक बेखौफ होकर घूमते देखे जा सकते हैं। कहने को तो राज्य शासन-जिला प्रशासन ने पूरे इलाके को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर रखा है, लेकिन कोई भी जिम्मेदार इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है। हालांकि, एसडीएम श्रीवास्तव ने तालाब को संरक्षित करने की बात कही है।

पीसीसी चीफ पटवारी ने बोला हमला, कहा-

पिट्ठू न बने चुनाव आयोग; लोकतंत्र की रक्षा करें

भोपाल (नप्र)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा है कि विजयपुर में होने वाली मतगणना के लिए वन मंत्री और बीजेपी प्रत्याशी रामनिवास रावत ने अपने 40 से अधिक

रिश्तेदार अधिकारियों को प्रक्रिया में शामिल कराया है। इसकी शिकायत चुनाव आयोग से भी की गई है। हमने कलेक्टर और एसपी को हटाने के लिए कहा लेकिन नहीं हटाया गया। पटवारी ने कहा कि वे निर्वाचन आयोग से आग्रह करते हैं कि तोता न बने, पिट्ठू न बनें। जिन रिश्तेदारों को ड्यूटी में लगाया है उन्हें हटाए। उन्होंने कहा कि बीजेपी एससी प्रकोष्ठ की एक शिकायत के मामले में चुनाव आयोग ने कहा है कि इस तरह की कोई शिकायत ही प्राप्त नहीं हुई है जबकि इसकी रिसिप्ट कांग्रेस के पास है। विजयपुर में रावत के रिश्तेदारों के मामले में की गई आपत्ति पर चुनाव आयोग को संज्ञान में लेकर कार्रवाई करना चाहिए।

चुनाव आयोग से कल भी की थी शिकायत

कांग्रेस के चुनाव आयोग कार्य प्रदेश प्रभारी जेपी धनोपिया ने कल मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में भी इसकी लिखित शिकायत की है। इसमें कहा गया है कि मतगणना के लिए जिन 32 माइक्रो आब्जर्वर को तैनात किया गया है, उसमें से 25 वन मंत्री और बीजेपी प्रत्याशी के समुदाय के और रिश्तेदार हैं। इनमें से 7 उनके निजी संपर्क में भी हैं। कांग्रेस प्रत्याशी मुकेश मल्होत्रा ने भी इनके नाम के साथ शिकायत की है और जिला निर्वाचन अधिकारी से इन्हें मतगणना ड्यूटी से बाहर करने की मांग की है। पटवारी ने ये बातें महाराष्ट्र चुनाव प्रचार के दौरान मीडिया से चर्चा में कही हैं।

इनकी हुई नामजद शिकायत

जिन माइक्रो आब्जर्वर की शिकायत की गई है, उनके नाम भी लिखित में जिला निर्वाचन अधिकारी और मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को सौंपे गए हैं। इसमें पुखराज मीणा, संजय कुमार मीणा, राकेश कुमार मीणा, विजेंद्र कुमार मीणा, जलधारी मीणा, राजेश कुमार मीणा, राहुल चौधरी, अजय कुमार मीणा, अनिल प्रताप सिंह, अभिषेक मीणा, अवनीत कुमार, आकाश अग्रवाल, ओम शिव मीणा, कपूर सिंह, कृष्ण कुमार मीणा, गोविन्द सिंह मीणा, टिंकू मीणा, दीपक प्रजापति, देवनारायण मीणा, देवेश कुमार, धर्मेंद्र सिंह मीणा, नरेंद्र सिंह, पवन मीणा, मनीष कुमार मीणा, मनोज कुमार शर्मा, मयंक गुप्ता, राजेश दीक्षित, रामनरेश यादव, रामभरत मीणा, लोकेश मीणा, रविन्द्र कुमार मीणा, मोहित श्रीवास्तव के नाम शामिल हैं।

पटवारी ने की चुनाव आयोग की निंदा

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने यह भी कहा कि उप चुनाव में कांग्रेस ने चुनाव बहुत अच्छा लड़ा है। हम 100 प्रतिशत जीतेंगे, हालांकि कई तरीके से संविधान को ताक पर रखकर व्यवस्था और प्रशासन ने चुनाव में अपनी भूमिका निभाई और भाजपा के पक्ष में काम किया है। इसकी हमने समय-समय पर शिकायत की लेकिन निर्वाचन आयोग ने इसे संज्ञान में नहीं लिया।

छोटे किसानों के लिए केंद्रीय मंत्री शिवराज ने किया ऐलान

प्याज, टमाटर, आलू के दाम गिरने से रोकने तय होंगे मॉडल रेट, सरकार उठाएगी नुकसान

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार ने एक योजना बनाई है। जिसमें प्याज, टमाटर और आलू के दाम गिरते हैं तो किसान को नुकसान होता है, इसलिए आईसीएआर लागत पर 50 प्रतिशत मुनाफा जोड़कर मॉडल रेट तय करेगा। बाजार रेट और मॉडल रेट का अंतर किसानों को दिया जाएगा, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार 50-50 प्रतिशत नुकसान वहन करेंगे। उन्होंने कहा कि, प्याज के एक्सपोर्ट से प्रतिबंध हटाया गया है, एक्सपोर्ट शुल्क 40 प्रतिशत से घटाकर 20 प्रतिशत किया गया है। जिससे प्याज के दामों में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि, पाम ऑयल मलेशिया, इंडोनेशिया से जीरो पर्सेंट ड्यूटी पर आयात किए जाते थे, इम्पोर्ट ड्यूटी बढ़ाकर 27.5 प्रतिशत की गई है ताकि किसान को सोयाबीन के

ठीक दाम मिल सके। सोयाबीन की एमएसपी 4 हजार 892 रुपए है, केन्द्र सरकार ने महाराष्ट्र सरकार को अनुमति दी है कि वह एमएसपी पर सोयाबीन खरीदें। इसके साथ ही सोयाबीन में नमी की सीमा को 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का फैसला किया गया है। इसके आदेश जारी कर दिए गए हैं ताकि महाराष्ट्र में सोयाबीन खरीदी में कोई दिक्कत न हो।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान बोले - महाराष्ट्र में महायुती की महाविजय होगी। महायुती और केन्द्र सरकार ने मिलकर जो विकास के काम किए हैं, उसने जनता के दिल और दिमाग को पूरी तरह से महायुती के साथ खड़ा कर दिया है।

राहुल को याद नहीं रहता है कि वे क्या कह रहे हैं: चौहान ने मीडिया से चर्चा में कहा कि, राहुल गांधी को खुद याद नहीं रहता है कि वो क्या कह रहे हैं, यहां वो आरक्षण की वकालत करते हैं और विदेशों में कहते हैं कि समय आने पर आरक्षण खत्म कर दिया जाएगा। राहुल गांधी अपने बारे में सोचें कि उनकी मानसिक आयु कितनी है।

शिवराज बोले- महाविकास अघाड़ी के वादे पूरे नहीं होते

शिवराज ने महाराष्ट्र में मीडिया से कहा कि, महाविकास अघाडी या कांग्रेस जितने वादे करती है, गारंटियां देती है, कभी पूरे नहीं होते हैं। मध्यप्रदेश में भी 2018 में किसानों की कर्जमाफी का वादा किया था, लेकिन कर्ज माफ नहीं हुआ। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे खुद कह रहे हैं कि ऐसे वादे मत करो जिनको पूरा नहीं कर पाते हो। ये केवल वोट बैंक की राजनीति करते हैं, इसलिए इन पर अब कोई विश्वास नहीं करता है।

झांसी में हादसे के बाद प्रदेश का स्वास्थ्य विभाग अलर्ट

अस्पतालों में फायर और इलेक्ट्रिकल सुरक्षा सुनिश्चित करने के सख्त निर्देश

भोपाल (नप्र)। झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज में शिशु वार्ड (एसएनसीयू) में 15 नवंबर की रात भीषण आग लग गई। जिसमें झुलस कर 10 नवजात बच्चों की मौत हो गई। घटना को देखते हुए प्रदेश का स्वास्थ्य विभाग हाई अलर्ट पर है। शनिवार को विभाग ने निजी व सरकारी सभी अस्पतालों को फायर और इलेक्ट्रिकल सुरक्षा सुनिश्चित करने के सख्त निर्देश जारी किए हैं।

सीएमएचओ डॉ. प्रभाकर तिवारी ने कहा कि सरकारी व निजी चिकित्सालयों, नर्सिंग होम और क्लिनिक के अध्यक्षों को निर्देशित किया है कि वे अपनी संस्थाओं का इलेक्ट्रिकल और फायर ऑडिट अनिवार्य रूप से कराएं। फायर सिस्टम और फायर एक्सटिंग्विशर की स्थिति चालू होनी चाहिए। इन्हें समय समय पर रिफिल कराया होना भी अनिवार्य है। नियमित अंतराल पर फायर ड्रिल कराई जाए और इसके लेखा जोखा भी रखें। इसके अतिरिक्त आकस्मिक निकास द्वार बाधा रहित और सुलभ होना चाहिए।

डॉ. तिवारी ने बताया किनिर्देश में साफ कहा गया है कि स्टाफ को आपातकालीन स्थितियों में वार्ड खाली कराने का प्रशिक्षण दिलाया जाए। विद्युत उपकरणों के उपयोग के दौरान खुले तारों या बिना प्लग के उपकरणों का उपयोग न हो। बिजली प्रणाली पर स्वीकृत भार से अधिक भार ना हो। आवश्यकता पड़ने पर बिजली कंपनी से अतिरिक्त भार स्वीकृत कराया जाए।

विभाग करेगा औचक निरीक्षण

स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी निर्देश के पालन की जिम्मेदारी संस्था प्रमुख की होगी। किसी भी चूक के लिए वे व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे। इनकी जांच के लिए औचक निरीक्षण किए जाएंगे। इस दौरान यदि कोई अनियमितता पाई जाती है तो ऐसे संस्थानों को तुरंत बंद कर दिया जाएगा। यही नहीं संचालकों के खिलाफ विधि सम्मत कार्रवाई भी की जाएगी।

भोपाल में पहले हो चुका है ऐसा हादसा

करीब 3 साल पहले भोपाल के हमीदिया कैम्पस में बने कमला नेहरू गैस राहत हॉस्पिटल में आग लगने की घटना हुई थी। इसके बाद ब्लास्ट हो गया। बेसमेंट और ग्राउंड फ्लोर मिलाकर आठ मंजिल के कमला नेहरू अस्पताल में आग से बचाव के कोई इंतजाम नहीं थे। फायर कर्मियों ने अस्पताल में लगे ऑटोमेटिक हाईड्रेंट को देखा तो वो खराब पड़ा था। हर फ्लोर पर फायर एक्सटिंग्विशर तो थे लेकिन काम नहीं कर रहे थे। अग्निकांड में 7 बच्चे जिंदा जल गए थे।

बांधवगढ़ में हाथियों की मौत से सबक

ऑपरेशन 'वाइल्ड ट्रेप' चलेगा, एक दिसंबर से दो माह तक होगी वन्य प्राणी एरिया में गश्त

भोपाल (नप्र)। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में 10 हाथियों की मौत के बाद वन विभाग ने वन्य प्राणी क्षेत्रों में गश्त तेज करने और अवैध शिकार करने वालों पर कार्रवाई के लिए ऑपरेशन 'वाइल्ड ट्रैप' चलाने का फैसला किया है। यह अभियान 1 दिसंबर 2024 से 31 जनवरी 2025 तक चलेगा। अभियान के तहत जांच दल के अधिकारी हर 15 दिन में अपने एरिया की गश्त से संबंधित रिपोर्ट सौंपेंगे। वन विभाग ने यह भी कहा है कि जिन क्षेत्रों में गश्त नहीं होगी, वहां के काम का रिव्यू कर कार्रवाई की जाएगी।

इन अधिकारियों को भेजी गई चिट्ठी: इस अभियान के क्रियान्वयन के लिए मुख्य वन संरक्षक, क्षेत्रीय वन संरक्षक, टाइगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक, राष्ट्रीय उद्यान संचालक, क्षेत्रीय मुख्य महाप्रबंधक वन विकास निगम, सभी क्षेत्रीय वन्यजीव वन मंडल अधिकारी और संभागीय प्रबंधक वन विकास निगम को निर्देश दिए गए हैं। इनसे कहा गया है कि वे वन्यजीवों की सुरक्षा सुनिश्चित करें और अभियान की कार्यवाही की रिपोर्ट वन मुख्यालय को भेजें।अभियान के दौरान पुलिस और विद्युत विभाग की भी मदद ली जाएगी। दिन और रात दोनों में सघन गश्ती अभियान चलेगा।

गश्ती दल में 15 डॉग स्क्वाड का दस्ता साथ चलेगा: अभियान के दौरान वन क्षेत्र या राजस्व-वन क्षेत्र की सीमा पर विद्युत लाइनों के नीचे अनिवार्य रूप से गश्ती के निर्देश दिए गए है। इसके साथ ही फॉरेस्ट से लगे कृषि क्षेत्रों में लगी फेसिंग या बागड़ की सर्चिंग होगी। हर गश्ती दल में 15 डॉग स्क्वाड का दस्ता और मैटल डिटेक्टर हैंडलर दस्ता भी चलेगा। गश्ती के दौरान कहीं भी फंदे या लेग होल ट्रैप में वन्यजीव फंसा मिलता है, तो तत्काल रेस्क्यू स्क्वाड की मदद से मुक्त कराकर घायल होने पर इलाज कराया जाएगा, स्वस्थ्य

होने पर जंगल में छोड़ा जाएगा। इलेक्ट्रोक्यूशन पाए जाने पर विद्युत विभाग की मदद से विद्युत आपूर्ति बंद कराकर कार्यवाही की जाएगी। वन अपराध में पूर्व में लिप्त रहे आरोपियों को निगरानी रजिस्टर में दर्ज कराया जाएगा। जरूरत पड़ने पर स्थानीय पुलिस की मदद ली जाएगी।

इन तरीकों से होते हैं शिकार: प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव) विजय अंबाड़े द्वारा फील्ड अफसरों को लिखे पत्र में कहा गया है कि वन्य जीवों की संपदा के नष्ट होने का एक प्रमुख कारण अवैध शिकार है। शिकारी फंदा, करंट, खटका (लेग होल्ड) ट्रैप और अन्य उपकरणों का इस्तेमाल करते हैं। यह उपकरण आसानी से मिल जाते हैं और इनके उपयोग से वन्यजीवों का शिकार किया जाता है। अक्सर बड़े वन्य जीव, जैसे हाथी, तेंदुआ, बाघ और भालू, इन जालों में फंसकर अपनी जान गंवा बैठते हैं।

गले में रस्सी डालकर हटाई माधवराव सिंधिया की प्रतिमा

चार इंजीनियर सस्पेंड, कांग्रेस ने कहा- ज्योतिरादित्य को सड़क पर आ जाना चाहिए

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के कटनी से एक वीडियो सामने आया है। जिसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस के दिवंगत नेता माधवराव सिंधिया की प्रतिमा को गले में रस्सी बांधकर हटाया जा रहा है। इस पर कांग्रेस के साथ ही बीजेपी नेताओं ने भी आपत्ति की। जिसके बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर चार इंजीनियर्स को सस्पेंड किया गया है।

मामला कटनी जिले में नेशनल हाईवे-30 पर कटनी बायपास मार्ग का है। यहां कांग्रेस नेता स्वर्गीय माधवराव सिंधिया की प्रतिमा स्थापित थी। नेशनल हाईवे पर पुल बनाने समेत रोड निर्माण का कार्य हो रहा है। इस वजह से यहां चौराहे पर लगी माधवराव सिंधिया की प्रतिमा को दूसरी जगह

शिफ्ट किया जाना था। लेकिन शिफ्टिंग के लिए प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया गया। प्रतिमा को अपमानजनक तरीके से उतारा गया। शुक्रवार प्रतिमा हटाई गई। जिसका वीडियो शनिवार को सामने आया। शनिवार को ही प्रतिमा पास में दूसरी जगह स्थापित की गई है।

प्रतिमा के गले में रस्सी बांधी और पोकलेन से उतारा: वीडियो में दिख रहा है कि माधवराव सिंधिया की प्रतिमा को पोकलेन मशीन के जरिए हटाया जा रहा है। दो कर्मचारी प्रतिमा पर चढ़ते हैं। वे एक रस्सी को कसकर प्रतिमा के गले में बांधते हैं और फिर उस रस्सी को पोकलेन मशीन के पंजे में बांध देते हैं। रस्सी बांध के बाद मशीन से उसे लिफ्ट किया जाता है और फिर उसे नीचे रख दिया जाता है।

कांग्रेस की मांग- मान-सम्मान से स्थापित की जाए प्रतिमा: कांग्रेस के युवा नेता दिव्यांशु अंशु मिश्रा ने इस मामले को मध्यप्रदेश के विकास में माधवराव सिंधिया के योगदान का अपमान बताया है। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि माधवराव सिंधिया की प्रतिमा को मान-सम्मान और प्रतिष्ठापूर्ण तरीके से फिर से स्थापित किया जाए।

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने की कलेक्टर से बात: प्रतिमा हटाने की इस कार्रवाई का वीडियो सामने आने के बाद प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष वीडी शर्मा ने इसे लेकर कलेक्टर और नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अफसरों से बात की।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

रायपुर दक्षिण विधानसभा के नतीजों पर टिकी निगाह

कहा जा रहा है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा में भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी से ज्यादा सांसद बृजमोहन अग्रवाल की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। माना जा रहा है कि इस सीट पर सुनील सोनी की जीत से बृजमोहन अग्रवाल का राजनीतिक कद बढ़ जाएगा। चर्चा है कि बृजमोहन अग्रवाल ने सुनील सोनी की जीत के लिए अपनी पूरी ऊर्जा लगा दी। रायपुर दक्षिण से बृजमोहन अग्रवाल आठ बार विधायक रहे और पार्टी ने यहां से बृजमोहन अग्रवाल के करीबी सुनील सोनी को ही उम्मीदवार बनाया। रायपुर दक्षिण पर फतह के लिए भाजपा और कांग्रेस ने खूब मेहनत की, लेकिन मतदाताओं ने कोई खास दिलचस्पी नहीं ली। कहते हैं कि भाजपा की तरफ से बृजमोहन अग्रवाल ने मोर्चा संभाले रखा था, तो कांग्रेस की तरफ से आकाश शर्मा को जिताने के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने पूरी ताकत लगी दी थी। कांग्रेस के बड़े नेताओं के मैदान में उतरने से चुनाव दिलचस्प तो रहा, लेकिन मतदान का प्रतिशत बढ़ने की जगह घट गया। माना जा रहा है कि हार-जीत का अंतर काफी कम वोटों से होने वाला है। वैसे उपचुनाव में ट्रेंड सत्तारूढ़ दल के जीत का रहा है, फिर रायपुर दक्षिण को भाजपा का गढ़ कहा जाता है, क्योंकि बृजमोहन अग्रवाल यहाँ से कभी चुनाव नहीं हारे, इसलिए कांग्रेस के लिए राह कठिन ही नजर आ रहा है। फिर भी रायपुर दक्षिण विधानसभा चुनाव के नतीजों पर सबकी निगाह है। दक्षिण के नतीजे से भाजपा का नया सत्ता समीकरण भी सामने आएगा और कांग्रेस की राजनीति भी साफ़ होगी। अब सबको 23 नवंबर का इंतजार है।

विधायक जी का प्रयोग फेल

कहते हैं भाजपा के एक विधायक जी ने नया प्रयोग किया था, पर चल नहीं पाया और अपने कदम पीछे खींचने पड़े। विधायक जी ने अपने विधानसभा क्षेत्र के हर वार्ड में प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया था। बताते हैं विधायक जी ने ऐसे 250 प्रतिनिधि बनाए थे। इन प्रतिनिधियों के कारण विधायक जी जिस वार्ड में भी जाते थे, खूब भीड़ जमा हो जाती थी और उनकी वाहवाही होने लग जाती थी। कहा जाता है कि शुरू में विधायक जी को यह फार्मूला तो अच्छा लगा, पर वार्ड प्रतिनिधि गलत राह पर चल पड़े तो विधायक जी के पास शिकायतों का अंबार पहुंचने लगा। शिकायतों की बढ़ती तादाद से विधायक जी को अपना फैसला बदलना पड़ा। याने अति हुआ तो विधायक जी को अकल आ गई। पहले जो उन्हें अच्छे लगते थे, शिकायतों के बाद उनसे दूर भागने लगे।

आईपीएस और हवलदार का चोली-दामन का साथ

कहते हैं एक आईपीएस अफसर जहां जाते हैं, वहां वे अपने पसंदीदा हवलदार को साथ लेकर जाते हैं। पुलिस महकमे में इसकी बड़ी चर्चा है। खबर है कि आईपीएस अफसर जहां जाते हैं, वहां के लिए हवलदार का ट्रांसफर करवा लेते हैं। बताते हैं आईपीएस अफसर आजकल एक जिले के एसपी हैं, उस जिले में भी हवलदार को ले गए हैं। वैसे आईपीएस अधिकारी कांग्रेस सरकार में कई छोटे-बड़े जिलों में एसपी रहे, फिर सरकार नाराज हो गई तो उन्हें लूप लाइन में पटक दिया। अब भाजपा की सरकार में उन्हें फिर जिला मिल गया है। अब देखते हैं भाजपा सरकार में कितने कुलांचे मारते हैं और हवलदार जी उनके साथ कहां-कहां जाते हैं ?

सांसद जी का बिगड़ा मिजाज

सपने देखना अच्छी बात है, पर जब सपने पूरे नहीं होते तो फिर मिजाज बिगड़ने लगता है, ऐसा ही कुछ आजकल एक भाजपा सांसद के साथ होने की खबर है। भाजपा ने राज्य में सरकार बनने के पहले तक सांसद जी का खूब इस्तेमाल किया। अपने उपयोग से गदगद सांसद जी सपने देखने लगे। माना जाने लगा था कि सांसद जी को राज्य या केंद्र की कलगी तो मिलेगी ही, पर सांसद जी के सपने हकीकत में नहीं बदले। कहते हैं सपना टूट जाने से सांसद जी के मिजाज और बोल दोनों बिगड़ गए हैं। सांसद जी के नए तेवर इन दिनों सुर्ख़ियों में हैं। चर्चा है कि सांसद महोदय हाल-फिलहाल सरकार संगठन के साथ एक विधायक से भी बड़े खफा हैं।

दीपांशु काबरा मुख्यधारा में

तकरीबन ग्यारह महीने बाद एडीजी दीपांशु काबरा का वनवास खत्म हो गया। पुलिस मुख्यालय में उन्हें पोस्टिंग मिल गई। भूपेश बघेल के राज में दीपांशु काबरा दो महत्वपूर्ण विभाग संभाले हुए थे। वे ट्रांसपोर्ट कमिश्नर के साथ जनसंपर्क आयुक्त भी थे। दीपांशु काबरा को भूपेश बघेल राज के शुरूआती दिनों में करीब नौ महीने बिना काम के काटना पड़ा था। तब उन्हें रेंज आईजी से पुलिस मुख्यालय में पदस्थ कर दिया गया था। दीपांशु काबरा के साथ डॉ आनंद छाबड़ा और अजय यादव को भी महीनों बाद पुलिस मुख्यालय में जिम्मेदारी मिल गई है। आईपीएस ध्रुव गुप्ता और अरविंद कुजूर को भी प्रभार मिल गया है। बलौदाबाजार कांड में निलबिंत आईपीएस सदानंद कुमार करीब छह महीने बाद भी अधर में लटके हैं, तो आईपीएस मयंक श्रीवास्तव की पोस्टिंग भी नहीं हुई है।

स्वास्थ्य विभाग में सुधार

सरकार ने आईएएस डॉ जगदीश सोनकर के बाद ऋतुराज रघुवंशी की स्वास्थ्य विभाग से विदाई कर दी। दोनों अफसर पिछले दिनों सुर्ख़ियों में आए थे। अब स्वास्थ्य विभाग में 2009 बैच की आईएएस डॉ प्रियंका शुक्ला को पदस्थ किया गया है। डॉ. प्रियंका शुक्ला को स्वास्थ्य विभाग का आयुक्त और विशेष सचिव बनाया गया है। डॉ प्रियंका शुक्ला अब तक पशुपालन विभाग संभाल रही थीं। वेटेनरी संचालक के पद पर आर एक्का को पदस्थ किया गया है। आर. एक्का अभी तक बलरामपुर के कलेक्टर थे। कहते हैं कृषि मंत्री रामविचार नेताम की पसंद पर आर. एक्का को संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं बनाया गया है। रिमिजियूस एक्का को भूपेश बघेल राज में बलरामपुर का कलेक्टर बनाया गया था। एक्का के तबादले के बाद अब पिछली सरकार में पदस्थ कोई भी कलेक्टर नहीं हैं।

संजीव झा और दिव्या का कद बढ़ा

सरकार ने 2011 बैच के आईएएस संजीव कुमार झा और 2012 बैच की आईएएस दिव्या मिश्रा को अतिरिक्त प्रभार देकर उनका कद बढ़ा दिया है। संजीव कुमार झा संचालक समग्र शिक्षा और संचालक विमानन के साथ अब पाठ्य पुस्तक निगम के प्रबंध संचालक होंगे। दिव्या मिश्रा डीपीआई के साथ राज्य शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद और राज्य साक्षरता मिशन की संचालक होंगी। ये दोनों विभाग स्कूल शिक्षा विभाग से ही जुड़े हैं। एक भाजपा नेता से पटरी नहीं बैठने के कारण करीब 10 महीने पहले बीजापुर के कलेक्टर पद से हटाए गए राजेंद्र कुमार कटारा को बलरामपुर जिले की जिम्मेदारी मिल गई है।